राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

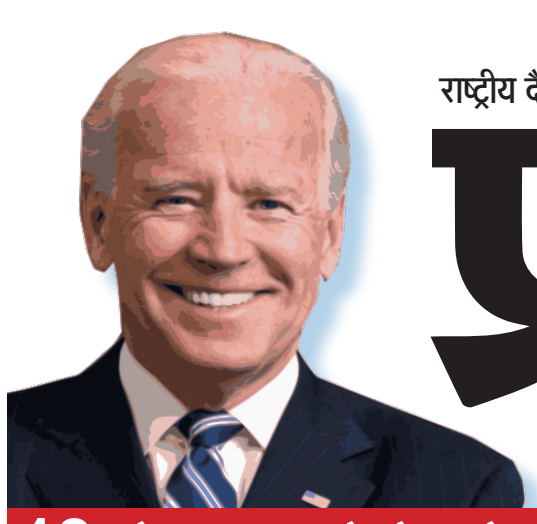

12 मोहमद यूनुस को जो बाइडेन ने भी लगाया गले, अमेरिका ने किया.....

मैनचेस्टर यूनाइटेड, रियल मैड्रिड के पूर्व डिफे डर राफेल वराने.....11

वर्ष : 12 | अंक : 165 | पटना, गुरूवार, 26 सितम्बर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 28.0°C
न्यूनतम तापमान 17.0°C

बाजार

सोना 75,885

चांदी 92,500

सेंसेक्स 84,554

निफ्टी 25,790

संक्षिप्त खबरें

सात बच्चों की डूबने से हुई मौत पर सीएम नीतीश दुखी

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने औरंगाबाद जिला अन्तर्गत मदनपुर प्रखण्ड के कुशहा गांव में 04 बच्चों तथा बारूण प्रखण्ड के इटहट गांव में 03 बच्चों की नहाने के दौरान डूबने से हुयी मौत पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह दुर्घटना काफी दुःखद है और वे इस घटना से मर्माहत हैं। मुख्यमंत्री ने मृतकों के आश्रितों को चार-चार लाख रुपए की अनुग्रह राशि अविलम्ब उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने मृतकों के परिजनों को दुःख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

गुजरात में सड़क हादसा, 7 लोगों की मौके पर मौत

साबरकांठा। गुजरात के साबरकांठा जिले में हिम्मतनगर के पास बुधवार सुबह भीषण सड़क हादसा हो गया। हादसे में 7 लोगों की मौके पर मौत हो गई और एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया है। घायल व्यक्ति को इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यह दर्दनाक घटना मोडासा कड़वा पाटीदार समाजवाड़ी के सामने हुई, जहां एक ट्रक के पीछे तेज रफ्तार कार घुस गई। हादसा इतना भयानक था कि कार के परखच्चे उड़ गए। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, सभी मृतक अहमदाबाद के रहने वाले बताए जा रहे हैं। यह सभी शामलाजी से अहमदाबाद की ओर जा रहे थे। हादसे के वक्त मौके पर मौजूद लोगों ने बताया कि कार की रफ्तार बहुत तेज थी, जिस वजह से कार नियंत्रण से बाहर होकर पीछे से ट्रक में जा घुसी। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस और दमकल विभाग ने बचाव कार्य शुरू किया। कार को काटकर शवों को बाहर निकाला गया। पुलिस ने हादसे की जांच शुरू कर दी है और मृतकों की पहचान की जा रही है। ट्रक से टकराने के बाद कार पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई है। कार की स्थिति देखकर कहा जा सकता है कि उसकी रफ्तार बहुत तेज थी। कार में फंसे शवों को बाहर निकालने के लिए दमकलकर्मी कटर का इस्तेमाल कर रहे हैं।

पीएम ने मेक इन इंडिया की 10वीं वर्षगांठ पर सोशल मीडिया के जरिए दी बधाई

मेक इन इंडिया से विभिन्न क्षेत्रों में निर्यात बढ़ा और अर्थव्यवस्था हुई मजबूत : मोदी

- पीएम बोलें- हम सब मिलकर बनाएंगे विकसित भारत

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी सरकार की महत्वाकांक्षी योजना मेक इन इंडिया की 10वीं वर्षगांठ पर बुधवार को कहा कि इससे विभिन्न क्षेत्रों में निर्यात बढ़ा है, क्षमता निर्माण हुआ है और अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है। मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, आज, हम मेक इन इंडिया के 10 वर्ष का जश्न मना रहे हैं। मैं उन सभी को बधाई देता हूं जो पिछले दशक के दौरान इस आंदोलन को सफल बनाने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मेक इन इंडिया देश को विनिर्माण और नवाचार का पावरहाउस बनाने के लिए 140 करोड़ भारतीयों के सामूहिक संकल्प को दशार्ता है। उन्होंने कहा, यह ध्यान देने वाली बात है कि इन वर्षों में कैसे विभिन्न क्षेत्रों में निर्यात कैसे बढ़ा है, क्षमता निर्माण हुआ है और अर्थव्यवस्था को मजबूत किया गया है। उन्होंने कहा, भारत सरकार हरसंभव तरीके से मेक इन इंडिया को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। सुधारों में भारत की प्रगति भी जारी रहेगी। हम सब मिलकर आत्मनिर्भर और विकसित भारत का निर्माण करेंगे! देश में निर्माण को बढ़ावा देने एवं संवर्धन के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने 25 सितम्बर 2014 को मेक इन इंडिया कार्यक्रम की शुरूआत की थी। इसका उद्देश्य भारत को महत्वपूर्ण निवेश एवं निर्माण, संरचना तथा अभिनव प्रयोगों के वैश्विक केंद्र के रुप में विकसित करना था। मेक इन इंडिया मुख्यतः निर्माण क्षेत्र पर केंद्रित है लेकिन इसका उद्देश्य देश में उद्यमशीलता को बढ़ावा देना भी है। इसका दृष्टिकोण निवेश के लिए अनुकूल माहौल बनाना, आधुनिक और कुशल बुनियादी संरचना, विदेशी निवेश के लिए नये क्षेत्रों को खोलना और सरकार एवं उद्योग के बीच एक साझेदारी का निर्माण करना है।

चालू वित्त वर्ष में जीडीपी वृद्धि 7 प्रतिशत रहने का अनुमानः एडीबी

नयी दिल्ली। एशियाई विकास बैंक ने बुधवार को भारत की आर्थिक वृद्धि के मजबूत रहने का अनुमान व्यक्त करते हुए कहा कि 31 मार्च 2025 को समाप्त होने वाले वित्त वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 7.0 प्रतिशत और इसके अगले वित्त वर्ष में 7.2 प्रतिशत की वृद्धि होने की उम्मीद है। ये अनुमान एडीबी के एशियाई विकास आउटलुक सितंबर 2024 में लगाया गया है। ये अनुमान एडीबी के पहले के अनुमान के अनुरूप ही है। एडीबी के भारत के कंट्री डायरेक्टर मियो ओका ने कहा, भारत की अर्थव्यवस्था ने वैश्विक भू-राजनीतिक चुनौतियों का सामना करते हुए उल्लेखनीय लचीलापन दिखाया है और स्थिर विकास के लिए तैयार है। कृषि सुधार ग्रामीण खर्च को बढ़ाएगा, जो उद्योग और सेवा क्षेत्रों के मजबूत प्रदर्शन के प्रभावों को पूरक करेगा। रिपोर्ट में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि देश के अधिकांश हिस्सों में औसत से अधिक मानसून से मजबूत कृषि विकास होगा, जिससे चालू वित्त वर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में वृद्धि होगी। यह चालू वित्त वर्ष और अगले वित्त वर्ष के लिए उद्योग और सेवा क्षेत्रों, निजी निवेश और शहरी खपत के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखता है। इसके अतिरिक्त, श्रमिकों और फर्मों को रोजगार से जुड़े प्रोत्साहनों की पेशकश करने वाली एक नई सरकारी नीति श्रम मांग को बढ़ा सकती है और अगले वित्त वर्ष से शुरू होने वाले रोजगार सृजन का समर्थन कर सकती है।

फिक्की द्वारा आयोजित इण्डिया मेज समिट में बोलें कृषि मंत्री

बीज उत्पादन में आत्मनिर्भर बनेगा बिहार : मंत्री

प्रात : किरण

पटना। कृषि मंत्री मंगल पाण्डेय ने नई दिल्ली में फेडरेशन ऑफ इंडियन चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित इण्डिया मेज समिट के 10वां संस्करण के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया गया। कृषि मंत्री मंगल पाण्डेय ने अपने सम्बोधन में कहा कि मक्का उत्पादन में बिहार देश में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। देश के कुल मक्का उत्पादन में बिहार का योगदान लगभग 11 प्रतिशत है। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान तथा महाराष्ट्र के बाद बिहार देश का 5वाँ सबसे बड़ा मक्का उत्पादक राज्य है। मंत्री ने कहा कि बिहार के किसान काफी मेहनती हैं। किसानों के मेहनत का ही नतीजा है कि बिहार को पूरे देष में मक्का उत्पादन के लिए राष्ट्रीय कृषि कर्मण पुरस्कार मिला है। बिहार की सरकार राज्य में मक्का के उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने के साथ-साथ किसानों को उनके फसलों का अधिक-से-अधिक मूल्य दिलाने के लिए कृतसंकल्पित होकर कार्य कर रही है। सरकार का प्रयास है कि बिहार को मक्का निर्यातक राज्य के रूप में विकसित किया जाये।

बीज उत्पादन हेतु सहयोग के लिए राज्य सरकार तत्पर :

फिक्की के सम्मेलन को सम्बोधित करने के उपरांत मंत्री ने कृषि विभाग के सचिव संजय अग्रवाल के साथ राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रमुख बीज उत्पादक कंपनियों के प्रतिनिधियों के साथ अलग से बैठक की। उक्त बैठक में मंत्री ने सभी बीज उत्पादक कंपनियों को बिहार में बीज उत्पादन का कार्य प्रारंभ करने का सुझाव दिया। मंत्री ने कहा कि राज्य में रबी एवं गर्मा मक्का में लगभग 100 प्रतिशत संकर बीज का उपयोग किसानों द्वारा किया जाता है। संकर मक्का बीज की आपूर्ति वर्त्तमान में अन्य राज्यों से किया जा रहा है। राज्य में संकर मक्का बीज उत्पादन हेतु सकारात्मक प्रयास किया जा रहा है। राज्य में बीज उत्पादन हेतु नीति तैयार की गई है। बीज उत्पादन हेतु आवश्यक सभी सहयोग के लिए राज्य सरकार तत्पर है। कृषि विभाग के पास उपलब्ध बीज गुणन प्रक्षेत्र भी बीज उत्पादन हेतु निजी बीज उत्पादक कंपनी को लीज पर उपलब्ध कराया जायेगा इसके लिए विभाग द्वारा एक सप्ताह के अंदर निविदा प्रकाशित किया जायेगा।

मंत्री ने बताया कि बैठक में अधिकांश बड़े बीज उत्पादक कंपनियों ने बिहार में हाईब्रीड बीज उत्पादन कार्य करने पर अपनी सहमति व्यक्त की। बिहार में इसी वर्ष रबी मौसम से मक्का, सरसों एवं धान के हाईब्रीड बीज उत्पादन का कार्य प्रारंभ किया जायेगा। इसके लिए ट्रायल/परीक्षण का कार्य शीघ्र ही प्रारंभ किया जायेगा। राज्य की सरकार ने राज्य में कृषि के क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए अलग से बिहार कृषि निवेश प्रोत्साहन नीति लाई है, जिसमें पहली बार कैपिटल सब्सिडी का प्रावधान किया गया है। इसके तहत बीज प्रसंस्करण से लेकर फूड प्रोसेसिंग के क्षेत्र में 25 प्रतिशत तक कैपिटल सब्सिडी का लाभ लिया जा सकता है। राज्य सरकार की इथेनॉल प्रोत्साहन नीति, 2021 से भी मक्का उत्पादक किसानों को फायदा हो रहा है।

मक्का उत्पादन क्षेत्र में असीम संभावनाए :

श्री पाण्डेय ने कहा कि बिहार राज्य में मक्का उत्पादन, भंडारण, प्रसंस्करण तथा बीज उत्पादन के क्षेत्र में असीम संभावनाएँ हैं। सरकार के सकारात्मक प्रयासों से राज्य में कई निजी कम्पनियों ने मक्का भंडारण हेतु आधारभूत संरचनाओं का विकास किया है। जिसके फलस्वरूप राज्य में मक्का भंडारण की क्षमता लगभग 5 लाख मे टन हो गई है। इस क्षेत्र में असीम संभावनाएँ है। उन्होंने फिक्की के समिट में उपस्थित सभी उद्योगपतियों एवं संस्थानों से बिहार में मक्का आधारित उद्योग एवं बीज उत्पादन हेतु खेती करने तथा प्रसंस्करण इकाई लगाने की अपील किया। उन्होंने कहा कि राज्य की सरकार बिहार में निवेश करने के लिए इच्छुक सभी उद्यमियों का स्वागत करेगी तथा उन्हें उद्योगों की स्थापना हेतु हर संभव मदद करेगी।

उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हेतु सकारात्मक प्रयास :

फिक्की द्वारा आयोजित इंडिया मेज समिट के 10वें संस्करण के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने कहा कि राज्य में वर्ष 2023-24 में मक्का उत्पादन बढ़ा है। राज्य में मक्का फसल के क्षेत्र विस्तार, उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हेतु सकारात्मक प्रयास किये जा रहे हैं।

सूबे में गुड़ उद्योग को प्रोत्साहन देगी नीतीश सरकार

प्रात : किरण

पटना। बिहार सरकार ने गुड़ उद्योग को प्रोत्साहन देने की योजना बनाई है। राज्य में पहली बार बिहार राज्य गुड़ उद्योग प्रोत्साहन के साथ 81 गुड़ इकाइयों के लिए 12 करोड़ 40 लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं। राज्य के चीनी मिलों में पेराई क्षमता लगभग दोगुनी होने से गन्ना उद्योग में व्यापक संभावनाएं दिख रही हैं। बिहार के गन्ना उद्योग मंत्री कृष्ण नंदन पासवान ने बुधवार को कहा कि राज्य में पहली बार बिहार राज्य गुड़ उद्योग प्रोत्साहन के साथ 81 गुड़ इकाइयों के लिए 12 करोड़ 40 लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं और राज्य के चीनी मिलों में पेराई क्षमता लगभग दोगुनी होने से गन्ना उद्योग में व्यापक संभावनाएं दिख रही हैं। इससे चीनी उत्पादन में बिहार अभी देश में पांचवें स्थान पर है और जल्द ही तीसरे स्थान पर होगा। उन्होंने कहा कि बिहार राज्य गुड़ उद्योग प्रोत्साहन कार्यक्रम के तहत वित्तीय वर्ष 2024-25 में 81 गुड़ इकाइयों की स्थापना के लिए 12 करोड़ 40 लाख रुपये की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है। इस योजना में पारदर्शिता लाने के लिए ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से उद्यमियों से आवेदन लेने की प्रक्रिया शीघ्र ही शुरू की जाएगी। इसके लिए विभाग ने केन केयर सॉफ्टवेयर का निर्माण किया है। इस योजना के अंतर्गत पूंजी अनुदान का प्रावधान किया गया है। इसमें 5-20 टीसीडी (टन पेराई प्रतिदिन) की क्षमता की स्थापना पर लागत का 50 प्रतिशत या अधिकतम 6 लाख रुपये तक, जो भी कम हो देय होगा। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार 21-40 टीसीडी की क्षमता स्थापना पर लागत का 50 प्रतिशत या अधिकतम 15 लाख रुपये तक जो भी हो, देय होगा। वहीं, 41-60 टीसीडी की क्षमता की स्थापना पर लागत का 50 प्रतिशत या अधिकतम 45 लाख रुपए तक, जबकि 60 टीसीडी से अधिक क्षमता की स्थापना पर लागत का 20 प्रतिशत या 45 लाख रुपये, जो भी अधिक हो तथा अधिकतम एक करोड़ रुपए तक देय होगा। उन्होंने बताया कि 500 लाख से अधिक के निवेश के लिए इकाइयों द्वारा लिए गए सावधि ऋण पर ब्याज आर्थिक सहायता-सावधि ऋण पर 10 प्रतिशत ब्याज या सावधि ऋण के वास्तविक ब्याज के दर जो भी कम हो, पांच वर्षों की अवधि तक, अधिकतम ब्याज आर्थिक सहायता परियोजना लागत की 50 प्रतिशत तक होगा। ब्याज आर्थिक सहायता उस अवधि की मूलधन राशि के भुगतान करने पर बैंक को अर्द्धवार्षिक, वार्षिक आधार पर दी जाएगी। मंत्री ने बताया कि राज्य सरकार गन्ना की खेती तथा गन्ना आधारित उद्योगों की स्थापना के लिए कृषि रोड मैप कार्यक्रम लागू कर रही है। कृषि रोड मैप कार्यक्रम के कार्यान्वयन के फलस्वरूप राज्य में चीनी का उत्पादन वर्ष 2006-07 में 4.51 लाख मीट्रिक टन था, जो वर्ष 2023-24 में बढ़कर 6.87 लाख मीट्रिक टन हो गया है।

भारत के किसी हिस्से को पाकिस्तान नहीं कहा जा सकता : सुप्रीम कोर्ट

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेसी। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को कहा कि भारत के किसी भी हिस्से को पाकिस्तान नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यह देश की क्षेत्रीय अखंडता के खिलाफ है। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति बी आर गवई, न्यायमूर्ति सूर्य कांत और न्यायमूर्ति ऋषिकेश रॉय की संविधान पीठ ने कर्नाटक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति वी श्रीशानंद द्वारा एक मामले की सुनवाई के दौरान बेंगलुरु के एक हिस्से को पाकिस्तान कहने के मामले में स्वतः संज्ञान सुनवाई करते हुए सख्त लहजे में यह टिप्पणी की। संविधान पीठ ने हालांकि न्यायमूर्ति श्रीशानंद के इस मामले में खुली में माफी मांगने के मद्देनजर उनके खिलाफ शुरू की गई स्वतः संज्ञान कार्यवाही बंद कर दी। संविधान पीठ ने कहा कि न्यायमूर्ति श्रीशानंद ने अपने दो अलग-अलग कार्यवाहियों के दौरान बेंगलुरु के एक हिस्से को पाकिस्तान बताने और एक महिला अधिवक्ता के खिलाफ व्यक्तिगत टिप्पणी करने के लिए माफी मांग ली है। इसी के मद्देनजर उनके खिलाफ स्वतः संज्ञान कार्रवाई बंद करने का यह फैसला किया गया। शीर्ष अदालत ने सुनवाई के दौरान टिप्पणी करते हुए अधिवक्ताओं, न्यायाधीशों और वादियों से कहा कि वे अदालत में पेश होने के दौरान किसी भी परिस्थिति में ऐसे आचरण करने में शामिल न हों। उन्हें यह समझना चाहिए कि कार्यवाही का सीधा प्रसारण अदालत के अलावा आम दर्शकों तक भी पहुंच है। पीठ ने कहा, ह्लन्यायाधीशों के रूप में हमारे जीवन के अनुभवों पर आधारित प्रवृत्तियाँ होती हैं। साथ ही, एक न्यायाधीश को अपनी स्वयं की प्रवृत्तियों के बारे में भी जागरूक होना चाहिए। ऐसी जागरूकता के आधार पर ही हम निष्पक्षता प्रदान करने के अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान हो सकते हैं। आकस्मिक अवलोकन पक्षपात की एक हद तक संकेत दे सकते हैं, खासकर जब वे किसी लिंग या समुदाय के विरुद्ध निर्देशित हों। न्यायमूर्ति श्रीशानंद ने कथित तौर पर बेंगलुरु में एक मुस्लिम बहुल इलाके को पाकिस्तान कहा था। न्यायाधीश श्रीशानंद को एक अलग मामले में एक महिला अधिवक्ता के खिलाफ लैंगिक असंवेदनशील टिप्पणी करते हुए भी एक वीडियो में देखा गया। सोशल मीडिया एक्स पर कई लोगों ने अपने अकाउंट अपने पोस्ट में उनकी टिप्पणियों पर आपत्ति जताई थी। इसके बाद शीर्ष अदालत ने 20 सितंबर को इस मामले में स्वतः संज्ञान कार्यवाही शुरू की और संबंधित उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार जनरल से रिपोर्ट मांगी थी। न्यायाधीश श्रीशानंद द्वारा की गई टिप्पणियों पर रजिस्ट्रार जनरल की 23 सितंबर की रिपोर्ट को देखते हुए शीर्ष अदालत की संविधान पीठ ने कहा कि रिपोर्ट पढ़ने से स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है कि की गई टिप्पणियाँ जरूरी नहीं थीं और उन्हें टाला जाना चाहिए था। संविधान पीठ ने कहा, न्यायाधीश (श्रीशानंद) द्वारा खुली अपनी अदालत की कार्यवाही में मांगी गई माफी को ध्यान में रखते हुए हम इसे न्याय और संस्था की गरिमा के हित में मानते हैं कि कार्यवाही को आगे जारी न रखा जाए। न्यायालय ने हालांकि कहा कि सोशल मीडिया की व्यापकता और पहुंच में कार्यवाही की व्यापक रिपोर्टिंग शामिल है।

संक्षिप्त खबरें

प्रखंड स्तरीय बैंकर्स कमेटी का बैठक प्रखंड विकास पदाधिकारी के अध्यक्षता में आयोजित किया

दानापुर नगर के अंतर्गत। प्रखंड कार्यालय सभागार में प्रखंड स्तरीय बैंकर्स कमेटी का बैठक बुधवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी विभेष आनंद के अध्यक्षता में आयोजित किया गया बैठक में जिला अग्रणी प्रबंधक एलडीएम विभागर झा उपस्थित थे। उन्होंने बैंकर्स को नियमानुसार प्रारम्भिक क्षेत्र में 40 प्रतिशत लाभुको को चिन्हित कर रोजगार के लिए ऋण देने का निर्देश दिये। प्रखंड विकास पदाधिकारी ने बताया कि केन्द्र व राज्य सरकार के लोन संबंधी योजना सही लाभुको को चिन्हित कर उन्हे लोन देने का निर्देश बैंकर्स को दिया गया। साथ ही प्रखंड के वैसे सरकारी योजना के खाते जो पूर्व से संचालित थे अब नही चल रहे उन खाता को बंद कर सरकार को राशि वापस करने के दिशा में कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया है। बैठक में जन प्रतिनिधियों से रोजगार के लिए उचित लाभार्थी को लोन दिलाने में सहयोग करने की बात कही गयी। बैठक में प्रखंड पंचायतीराज पदाधिकारी कुमार अविनाश रंजन समेत मुखिया पंचायत सचिव व बैंकर्स उपस्थित थे।

दो दिवसीय अन्तर क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता सम्पन्न

दानापुर। नगर के अंतर्गत सशस्त्र सीमा बल 40 वीं वाहिनी के कमांडेंट सुवर्णा सजवाण के दिशा निर्देश में विजय सिंह यादव पथ एलडब्ली स्पोर्टस में आयोजित दो दिवसीय अन्तर क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता सम्पन्न हो गया। 05 श्रेणियों आयोजित प्रतियोगिता के अधिकारी वर्ग वरिष्ठ श्रेणी पुरुष एकल में गया क्षेत्रीय कार्यालय के उपकमांडेंट मनोरंजन झा, पुरुष युगल में उप-महानिरीक्षक संजय कुमार शर्मा एवं रिक्रूट प्रशिक्षण केंद्र, सुपौल के उपकमांडेंट पप्पू चकमा विजेता रहे। पुरुष सिंगल में मुजफ्फरपुर क्षेत्रीय मुख्यालय के द्वितीय कमान अधिकारी रजनीश कुमार मोराल, पुरुष डबल्स में मु. आ. एक. सचिन कुमार सिंह एवं सत्य प्रकाश सुरिन, 71 वीं वाहिनी, मिक्स्ड डबल्स में आरक्षी भारती ठाकुर, 51 वीं वाहिनी एवं आरक्षी सामान्य सत्य प्रकाश सुरिन, 71 वीं वाहिनी, महिला एकल में आरक्षी भारती ठाकुर, 51 वीं वाहिनी, महिला युगल में निरीक्षक सा मोनिका शर्मा रिक्रूट प्रशिक्षण केंद्र, सुपौल एवं आरक्षी भारती ठाकुर विजेता रहे। प्रतियोगिता के समापन समारोह में मुख्य अतिथि सीमांत मुख्यालय पटना के उप महानिरीक्षक के.सी. विक्रम ने विजेता प्रतिभागियों का पुरस्कृत किया गया। विजेता व उप विजेता खिलाडियों को ट्राफी वितरण किया गया। प्रतियोगिता के सभी विजेता एसएसबी की अन्तर सीमांत बैडमिंटन प्रतियोगिता में भाग लेंगे। इस मौके पर क्षेत्रीय मुख्यालय गया के उप महानिरीक्षक मानवेंद्र सिंह नेगी, सीमांत मुख्यालय, पटना के उप महानिरीक्षक एच. जितेन सिंह तथा 40 वीं वाहिनी के समस्त अधिकारी एवं बलकर्मी उपस्थित थे।

देशी शराब के साथ एक गिरफ्तार, तीन वाहन जब्त

पटना सिटी (प्राकि)। मालसलामी थाना की पुलिस ने पत्थर घाट पर छापेमारी कर देशी शराब के साथ एक धंधेबाज को गिरफ्तार किया है वहीं तीन वाहन को भी जब्त किया गया है। करीब 250 लीटर देशी शराब बरामद किया गया है। थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह ने बताया कि शराब ले जाते हुए तीन वाहन में स्कूटी, बाइक व ई-रिक्शा को जब्त किया गया है। पुलिस ने वाहन पर लदे 250 लीटर देसी शराब को भी बरामद किया है। इस मामले में पत्थर घाट निवासी विशाल कुमार को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस पकड़े गए विशाल की निशानदेही पर धंधे से जुड़े अन्य धंधेबाज की तलाश में छापेमारी कर रही है।

भाजपा आयुष ने मनाया पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती

पटना सिटी, बिस्कोमान कॉलोनी गोलंबर स्थित बिहार एक्यूप्रेशर योग कॉलेज में भाजपा आयुष विभाग द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 108वीं जयंती मनाई गई। एक्यूप्रेशर महागुरु डॉ सर्वदेव प्रसाद गुप्त ने दीनदयाल जी के तैलचित्र पर माल्यार्पण कर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। भाजपा आयुष विभाग के प्रदेश संयोजक डॉ अजय प्रकाश ने कहा कि जनसंघ की स्थापना करने एवं उस समय के तत्कालीन नेहरू सरकार के वंशवाद और भ्रष्टाचार के विरुद्ध श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने एकमत होकर भारत में लोगों को जोड़ने का काम किया है। आज की नई युवा पीढ़ी जो सामाजिक या राजनीतिक क्षेत्र में आए हैं, उन लोगों को दीनदयाल जी से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में वीणा प्रकाश, सोशल मीडिया प्रभारी विकास कुमार मौड़ीवाल, प्रियंका राय, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य मनीष कुमार, श्रीप्रकाश वर्णवाल, श्रुति कुमारी, जितेन्द्र लाल यादव, शशि कुमार राजपूत, सर्वप्रकाश, मोहित कुमार मौड़ीवाल आदि उपस्थित थे।

उत्साह और गौरव के साथ एम्स पटना ने मनाया अपना 13वां स्थापना दिवस

फैकल्टी और नर्सिंग स्टाफ की भर्ती के लिए रोलिंग विज्ञापन प्रणाली लागू करने वाला देश का पहला एम्स बना : डॉ जीके पाल

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। एम्स पटना ने 25 सितंबर 2024 को अपना 13वां स्थापना दिवस बड़े उत्साह और गौरव के साथ मनाया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर (डॉ.) सुब्रत सिन्हा, अध्यक्ष, एम्स पटना थे। इस अवसर पर उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों में एम्स दरभंगा और एम्स मंगलागिरी के कार्यकारी निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) माधवानंद कर, आईजीआईएमएस पटना के निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) बिंदी कुमार और प्रोफेसर (डॉ.) राजीव कुमार सिंह शामिल थे। फिजियोलॉजी विभागाध्यक्ष, पीएमसीएच पटना। एम्स पटना के कार्यकारी निदेशक और सीईओ प्रोफेसर (डॉ.) गोपाल कृष्ण पाल ने इस आयोजन के मुख्य संरक्षक के रूप में कार्य किया। अतिथियों को गमले में लगे पौधे भेंट किए गए। दीप प्रज्वलन समारोह के साथ शुभ शुरूआत हुई, जिसके बाद एम्स पटना के निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) गोपाल कृष्ण पाल द्वारा मेहमानों को शॉल और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। अपने संबोधन के दौरान, प्रोफेसर (डॉ.) पाल ने पिछले 1 वर्ष में एम्स पटना की उल्लेखनीय उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संस्थान वर्तमान में प्रति दिन 7,000 मरीजों की ओपीडी सेवा प्रदान कर रहा है, आईपीडी बिस्तर अधिभोग दर 85% से अधिक है, और सर्जरी के लिए प्रतीक्षा समय को दो साल से घटाकर केवल 25 दिन करने की दिशा में अभूतपूर्व प्रगति की है। एम्स पटना फैकल्टी और नर्सिंग स्टाफ की भर्ती के लिए रोलिंग विज्ञापन प्रणाली लागू करने वाला पहला एम्स संस्थान भी बन गया है। उन्होंने गर्व से उल्लेख किया कि एम्स पटना को भारत के शीर्ष 7 एम्स संस्थानों में स्थान दिया गया है और न्यूज वीक स्टेटिका द्वारा विश्व स्तर पर शीर्ष 100 अस्पतालों में सूचीबद्ध किया गया है।प्रो. (डॉ.) पाल ने कई आगामी पहलों की घोषणा की, जिनमें किडनी प्रत्यारोपण के लिए पीजीआई चंडीगढ़ और लीवर प्रत्यारोपण के लिए एम्स नई दिल्ली के साथ सहयोग शामिल है। संस्थान जल्द ही योग चिकित्सा के लिए सेवाएं शुरू करेगा और जलने और प्लास्टिक के मामलों के लिए समर्पित नई इमारतें, गंभीर देखभाल अस्पताल और एक नया शैक्षणिक ब्लॉक पेश करेगा। इसके अतिरिक्त, संस्थान को डीएचआर-आईसीएमआर उक्कअटडल्लऊ परियोजनाओं और ठक्कऊअठ परियोजना सहित अतिरिक्त-भित्ति अनुसंधान परियोजनाओं के लिए 25 करोड़ से अधिक प्राप्त हुए हैं। निदेशक के भाषण के बाद, डॉ. राजीव कुमार सिंह ने फिजियोलॉजी में डीएम स्थापित करने में एम्स पटना की सफलता की सराहना की, जो एम्स संस्थानों में पहली बार है। डॉ. माधवानंद कर ने विशेष रूप से सर्जिकल ऑन्कोलॉजी के क्षेत्र में संस्थान की तीव्र प्रगति की सराहना की। डॉ. बिंदी कुमार, जो शुरूआत से ही एम्स पटना के साथ निकटता से जुड़े हुए हैं, ने पिछले 13 वर्षों में इसकी उपलब्धियों की सराहना की और युवा संकाय को अनुसंधान, उपचार और रोगी देखभाल में अपना उत्कृष्ट कार्य जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में एमबीबीएस और बीएससी नर्सिंग के विभिन्न बैचों के मेधावी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों को भी मान्यता दी गई। कार्यक्रम का संचालन एसोसिएट डीन डॉ. रुचि सिन्हा ने किया. इस कार्यक्रम में डॉ. सुब्रत सिन्हा का भाषण भी शामिल था, जिन्होंने एम्स पटना के प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई) के सफल कार्यान्वयन की सराहना की। डॉ. सिन्हा ने संस्थान की स्थापना करने वाले संसदीय अधिनियम द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को दोहराया और चिकित्सा पेशे के भीतर देखभाल का एक स्पेक्ट्रम प्रदान करने के महत्व पर जोर दिया।इस कार्यक्रम में दो विचारोत्तेजक भाषण भी प्रस्तुत किये गये। डॉ. कार द्वारा बाहरी व्याख्यान, जिन्होंने ह्लप्रिसिजन ऑन्कोलॉजी - फिजिशियन का दृष्टिकोणह्व पर व्याख्यान दिया, जिसमें गामा नाइफ, साइबर नाइफ, प्रोटॉन बीम थेरेपी, सिस्टमेटिक थेरेपी और मोनोक्लोनल एंटीबॉडी का उपयोग करके लक्षित थेरेपी जैसी अत्याधुनिक तकनीकों पर ध्यान केंद्रित किया गया। डॉ. उमेश कुमार भदानी द्वारा आंतरिक भाषण, जिन्होंने ह्लध्वनि और झुकती रोशनी के साथ विकासह्व पर बात की, एम्स पटना के विकास को प्रतिबिंबित किया और एक प्रेरक संदेश दिया: ह्लभविष्य का स्वागत करने के लिए अपने दिमाग को साफ रखें।ह्व कार्यक्रम का समापन डॉ. प्रेम द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, जिन्होंने एम्स पटना के दृष्टिकोण और मिशन के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों, कर्मचारियों, आयोजकों, आईटी पेशेवरों और मीडिया कर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया। इसके बाद छात्रों द्वारा दोपहर का भोजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह महत्वपूर्ण आयोजन एम्स पटना की स्वास्थ्य सेवा और चिकित्सा शिक्षा में निरंतर उत्कृष्टता को रेखांकित करता है, जो न केवल भारत में बल्कि विश्व स्तर पर एक नेता के रूप में अपनी भूमिका प्रदर्शित करता है। संस्थान आने वाले वर्षों में शीर्ष स्तरीय स्वास्थ्य सेवाएँ, अत्याधुनिक अनुसंधान और शैक्षणिक उत्कृष्टता प्रदान करने के अपने मिशन को आगे बढ़ाने के लिए तैयार है।

राजभाषा सप्ताह 2024 का हुआ समापन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर खगौल नगर के अंतर्गत 25 तारीख को एक सप्ताह तक चलने वाले राजभाषा सप्ताह समारोह 2024 के समापन के अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक जयंत कुमार चौधरी की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के साथ-साथ अधिकारियों के लिए राजभाषा क्विज का आयोजन किया गया।उक्त बैठक एवं क्विज प्रतियोगिता में अपर मंडल रेल प्रबंधक ओपी सह अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी आधार राज एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक इंफ्रा. अनुपम कुमार चन्दन के साथ-साथ मंडल के सभी शाखा अधिकारियों की उपस्थिति रही इस सप्ताह समारोह के दौरान दिनांक 17 तारीख को राजभाषा प्रदर्शनी, 18 तारीख को नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग एवं 19 तारीख को हिंदी निबंध एवं वाक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में विजताओं को मंडल रेल प्रबंधक द्वारा नगद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया जाएगा। बैठक के दौरान समिति के अध्यक्ष एवं मरेप्र, उपाध्यक्ष एवं अमरेप्र ओपी. तथा अमरेप्र इंफ्रा. सहित उपस्थित सभी अधिकारियों का स्वागत करते हुए समिति के सचिव सौरभ सावर्ण द्वारा विस्तार से कार्यसूची के बारे में जानकारी दी गयी। इस अवसर पर अपर मुराधि सह अमरेप्र ओपी एवं समिति के उपाध्यक्ष आधार राज ने राजभाषा सप्ताह 2024 के सफलतापूर्वक आयोजन हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने आगे बताया कि हमें और उत्साह से राजभाषा के प्रयोग-प्रसार पर काम करने की जरुरत है ताकि राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में इस मंडल का अग्रणी मंडलों में नाम रहे। बैठक की अध्यक्षता करते हुए मंडल रेल प्रबंधक एवं समिति के अध्यक्ष जयंत कुमार चौधरी ने राजभाषा सप्ताह 2024 के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए अपर मुराधि सह अमरेप्र ओपी श्री आधार राज एवं अमरेप्र इंफ्रा. श्री अनुपम कुमार चन्दन सहित राजभाषा अधिकारी, सभी शाखा अधिकारी तथा राजभाषा विभाग के कार्मिकों को बधाई दीं। इसके साथ-साथ उन्होंने इस सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं में सफल हुए पुरस्कार विजेताओं को भी अपनी शुभकामनाएं दीं।

विश्व फार्मासिस्ट दिवस पर शिविर लगा मरीजों की किया सेवा

लोगों को डेंगू और चिकनगुनिया से बचाव के लिए बताया, पर्चा भी दिया

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

तीन दिवसीय विश्व फार्मासिस्ट दिवस समारोह का शुभारंभ उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा एवं स्वास्थ्य मंत्री मंगल पाण्डेय के द्वारा पटना मेडिकल कॉलेज के प्रांगण में किया गया था। बुधवार को डिप्लोमा फार्मासिस्ट ऑर्गनाइजेशन छात्र संघ, बिहार के द्वारा गुलजारबाग स्टेशन के पास आम जनों के बीच शहर में तेजी से फैल रहे डेंगू बुखार संक्रमण, लक्षण, रोकथाम एवं बचाव के लिए जागरुकता शिविर लगाया गया। इसमें लोगों की निः शुल्क जांच की गई। लोगों को डेंगू बुखार से बचने और इसके संक्रमण फैलने से रोकने की बातें कही गईं। जरूरतमंदों के बीच दवा का वितरण भी किया गया। डेंगू बुखार के लक्षण के बारे में लोगों को बताया गया और लोगों के बीच पर्चा बांट कर फार्मासिस्ट की भूमिका एवं फार्मासिस्ट के नहीं रहने पर होने वाले नुकसान से लोगों को जागरूक किया गया। विश्व फार्मासिस्ट दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य व्यवस्था को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले डिप्लोमा फार्मासिस्टों को सम्मान देना है। डिप्लोमा फार्मासिस्ट हमारे और दवाइयों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी की तरह कार्य करते हैं। वह इस बात का भी ख्याल रखते हैं कि हम तक दवाइयां सही समय पर पहुंचे और दवा का सही तरीके से उपयोग करें। स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने अभिभाषण में घोषणा किए थे कि जल्द से जल्द राज्य के सभी सरकारी अस्पतालों में रिक्त पदों पर नियमित नियुक्ति की जाएगी।फामेर्सी के क्षेत्र में राज्य में विकास किया जाएगा। शिविर में संघ के पदाधिकारीगण एवं सदस्य राहुल गुप्ता, रजत राज, विक्की कुमार, श्रीकांत, राहुल शर्मा, दीपक दिव्यांश, ऋषि राज, बबलू, संकित, चेतन, मनीष, महाबली शुभम, प्रवीण, गौतम, अंकित, अमरलाल, अमित, हरे राम आदि ने अपनी सेवाएं दीं। यह जानकारी डिप्लोमा फार्मासिस्ट आर्गनाइजेशन, छात्र संघ, बिहार के अध्यक्ष अरविंद कुमार ने दी। वहीं दूसरी ओर राजकीय फामेर्सी संस्थान में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया एवं शिविर लगाकर लोगों के सेहत की जांच कर दवा का वितरण किया गया इस दौरान लोगों का बीपी शुगर की जांच की गई और कुछ दवाएं भी प्रदान की गईं।

तख्तश्री पटना साहिब के जत्थेदार को धमकी मिली, थाना में आवेदन

इस दौरान कुछ होता तो जिम्मेदारी किसकी, मालसलामी थाना में मामला दर्ज

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के जत्थेदार भाई बलदेव सिंह को जान से मारने की धमकी उनके भतीजा दीपक सिंह को 17 सितंबर को अपराह्न करीब 4.35 में दी गई। हालांकि थाना में मामला दर्ज करने के लिए आवेदन 24 सितंबर को दिया गया। बड़ा सवाल यह है कि यदि इस बीच ज्ञानी बलदेव सिंह को कुछ हो जाता, तो इसकी जिम्मेवारी किसकी होती। हालांकि दिए गए आवेदन के आधार पर मालसलामी थाना में मामला दर्ज कर लिया गया है। इसमें ज्ञानी बलदेव सिंह का भतीजा और तख्तश्री कमेटी के मातहत कार्यरत सेवादार दीपक सिंह ने कहा कि जब उसे धमकी दी गई, तब वह घबड़ा गया था। इस कारण से इसकी जानकारी दो-तीन दिनों के बाद दिया। मालसलामी थाना के थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह ने कहा कि दिए गए आवेदन के आधार पर 24 सितंबर को कांड संख्या 448/24 धारा 126 (2), 351 (3)/3(5) बीएनएस के तहत दर्ज किया गया है। मामले की छानबीन की जा रही है। इस कांड का अनुसंधान एसआई अभिषेक कुमार को सौंपी गई है। आवेदन में दीपक सिंह ने कहा कि 17 सितंबर को अपराह्न करीब 4.35 में पिंटू सिंह के भट्ठा (दमराही घाट) जब पहुंचा, तो देखा कि काले रंग के पल्सर बाइक से दो लड़का वाहन लगा खड़ा था। बाइक पर सवार दो अज्ञात युवक ने उसे रोक कर बोला कि तुम बलदेव सिंह (जत्थेदार) का भतीजा हो। तुम्हारा नाम दीपक है। उसने बोला कि मैं बलदेव सिंह को एक माह के अंदर मार दूंगा। एक लड़का, जो बाइक चला रहा था, वह काला रंग का टी-शर्ट एवं ब्लू जींस पहना हुआ था। दूसरा लड़का हल्का ब्लू रंग का टी-शर्ट एवं ब्लू रंग का जींस पहना हुआ था। वाहन पर नंबर नहीं लिखा हुआ था। वह उन लड़कों को देखकर पहचान लेगा। दीपक का कहना है कि वह तख्तश्री पटना साहिब में बराबर उसी रास्ते से आता-जाता रहता है। उपरोक्त घटना के बाद वह काफी सहमा और डरा हुआ था। इस कारण से इसकी जानकारी दो-तीन दिन बाद दिया। इस घटना के बाद सेवादार कल्याण समिति के संरक्षक बलराम सिंह, अध्यक्ष तजिंदर सिंह बंटी, महासचिव अजायब सिंह, बलवंत सिंह खालसा, अवधेश सिंह के अलावा तख्तश्री पटना साहिब के तत्कालीन जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह गौहर-ए-मस्कीन आदि ने ज्ञानी बलदेव सिंह को सुरक्षा देने की गुहार लगायी है। जत्थेदार ने वरीय पुलिस अधीक्षक, एसडीओ, डीएसपी और चौक थाना को आवेदन देकर सुरक्षा देने की मांग की है। पुलिस ने बताया कि प्राथमिकी दर्ज कर मामले में जांच-पड़ताल की जा रही है। बताते चलें कि इससे पहले तख्तश्री पटना साहिब में मुख्य ग्रंथी रहे भाई राजेंद्र सिंह के मौत की गुत्थी भी पुलिस नहीं सुलझा पायी है। उनका शव तख्तश्री परिसर के लंगर हाल के बगल में स्थित कमरे में पाया गया था। इधर वर्तमान जत्थेदार ज्ञानी बलदेव सिंह को जान से मारने की धमकी मिल गई है। वहीं दूसरी ओर तत्कालीन जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह गौहर-ए-मस्कीन ने कहा कि उन्होंने अपने मामले में पटना के जिला एवं सत्र न्यायाधीश के यहां मामला दर्ज कर रखा है और उन्हें बराबर तारीख पर पटना आना-जाना लगा रहता है। वह अपने आवास में रहते हैं और केंद्र सरकार के द्वारा उन्हें वाई श्रेणी की सुरक्षा मिली है। मगर प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष व एक पदाधिकारी व सदस्य लगातार उनकी सुरक्षा को हटवाने का प्रयास कर रहे हैं। साथ ही उनकी हत्या की साजिश भी रची जा रही है। उन्होंने भी अपनी सुरक्षा बढ़ाई जाने की मांग की है।

डूबे किशोर का मिला शव, पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंपा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

खाजेकलां थाना क्षेत्र के गुरहट्टा कोटगस्त पुलिस चौकी के समीप रहने वाले रवि कुमार के 15 वर्षीय पुत्र मांशु कुमार गंगा स्नान के दौरान खाजेकलां घाट में मंगलवार को डूब गया था। घटना के बाद बुधवार को पुलिस ने घाट के पास से शव बरामद किया है। थानाध्यक्ष प्रभात रंजन सक्सेना ने बताया कि शव का नालंदा मेडिकल कॉलेज में पोस्टमार्टम कराने के बाद परिजनों को सौंप दिया गया है। दरअसल स्कूल जाने के बजाए मांशु अपने दोस्त के साथ गंगा स्नान करने के लिए आ गया था। जब वह डूबने लगा, तब उसके दोस्त ने उसे बचाने की पूरी कोशिश की, मगर खुद डूबने लगा। किसी तरह उसे घाट पर मौजूद दो महिलाओं ने अपनी साड़ी व दुपट्टा फेंक कर बचाई। घटना की सूचना मिलने के बाद पिता रवि कुमार, मां एवं परिजनों का रोकर बुरा हाल था। स्थिति यह रही कि परिजन पूरी रात खाजेकलां घाट पर ही गुजारी और गंगा माता से बेटे का शव देने की भीख मांगते रहे। अंततः पूर्वाह्न करीब 11.30 में शव देखा गया।

अरविंद बिहारी लाल बने दानापुर सुढ़ी संघ के अध्यक्ष, संघ की बैठक में सर्वसम्मति से चुने गए

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर। मंगलवार को दानापुर सुढ़ी संघ के कार्यालय में अरविंद बिहारी लाल सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद के लिए चुने गए। साथ ही अभिनंदन समारोह का आयोजन भी किया गया। और पूर्व अध्यक्ष विजय कुमार भोटी को सॉल देकर पूरे सम्मान के साथ बिदाई किया गया। पुराने पदाधिकारी का विदाई समारोह और नए पदाधिकारी का चयन भी सभी सदस्यों के मौजूदगी में की गई जिसमें उपाध्यक्ष नीरज, राजेश, विक्रम, रंजीत, राजीव बिहारी लाल महामंत्री पवन कुमार सह महामंत्री एवं मीडिया प्रभारी सुजीत कुमार, कोषाअध्यक्ष राजेश कुमार राजू सह कोषाध्यक्ष राजीव कुमार मंटू जी सचिव विजय मुख्य संरक्षक विजय कुमार भोटी,चंदेश्वर *संरक्षक*गणेश लाल,गौरी शंकर प्रसाद विजय ,डॉक्टर ओमप्रकाश,राजकुमार इत्यादि को पदाधिकारी बनाया गया अजीत बिहारी लाल,शंभू नाथ गुप्ता,राकेश बिहारी,संतोष ,उमेश ,रवि अन्य पदाधिकारी लोग मौजूद थे।

रेल, मुख्यालय में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

पटना/ हाजीपुर । छत्रसाल सिंह, महाप्रबंधक, पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर की अध्यक्षता में 25 सितंबर को राजभाषा पखवाड़ा-2024 का पुरस्कार वितरण समारोह व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ. इस अवसर पर राजभाषा पखवाड़ा-2024 की प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागियों को एवं वर्ष-2024 के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार में सराहनीय कार्य/कार्यान्वयन में सहयोग करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र व नकद पुरस्कार प्रदान किया गया. इसके साथ सर्वोत्तम पुस्तकालय के अंतर्गत मैथिलीशरण गुप्त हिंदी पुस्तकालय/धनबाद को प्रथम व हरिवंशराय बच्चन हिंदी पुस्तकालय/डीडीयू को द्वितीय, सर्वोत्तम समिति के अंतर्गत हाजीपुर स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति/सोनपुर को प्रथम व सीतामढ़ी स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति/डीडीयू को द्वितीय तथा सर्वोत्तम पत्रिका के अंतर्गत डीडीयू मंडल की ह्लरेलमुक्ताह्व पत्रिका को पुरस्कृत किया गया. सामूहिक पुरस्कार के अंतर्गत प्रशासन विभाग, पूमरे/हाजीपुर, डीडीयू मंडल के यांत्रिक शाखा एवं यांत्रिक कारखाना, पूमरे/समस्तीपुर को सामूहिक पुरस्कार प्रदान किया गया।

बिहार पेंशनर समाज और शाखा प्रबंधक पदाधिकारियों के साथ बैठक

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। बुधवार को भारतीय स्टेट बैंक, हाजीगंज, पहना-8 शाखा में बिहार पेंशनर समाज, सिटी जिला शाखा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के साथ शाखा प्रबंधक सतेन्द्र कुमार द्वारा आहूत बैठक में निम्न विषयों पर चर्चा की गयी। प्रबंधक द्वारा अपने शाखा से संबंधित विशिष्ट बातों के साथ-साथ विभिन्न समस्याओं के निदान को सुलभ व सरलतापूर्वक रखा गया। अध्यक्ष डॉ अविनाश प्रसाद बैठक के आरंभ में परिचय के साथ ही अन्य सभी पदा एवं सदस्यों के पदनाम आदि के साथ परिचय कराया गया। साथ ही बताया की आज जो चर्चा का विषय है हिन्दी भाषा हमारे राष्ट्र का गौरव है। केंद्र और राज्यों की लाभकारी योजनाओं की चर्चा। बढ़ते हुए अष्टाचार और उपाय।' उपस्थित लोगों में सचिव डॉ सुरेंद्रप्रसाद, प्रीशिष पूजन लाल एवं कैलाश, सं० सचिव, ब्रजेश्वर सिन्हा, उपा०, ईश्वरी प्रसाद, कोषाध्यक्ष एवं शम्ममूनाथ प्रसाद, जिला प्रतिनिधि के साथ-साथ अन्य लोगो ह्मने विचार रखे। शाखा प्रबंधक की गरिमामयी उपस्थिति में उनका दल पेंशनर बंधुओं का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। अल्पाहार एवं उपहार सबों को प्रदान किया गया। पारसनाथ प्रसाद ने इस बैठक के लिए सबो के प्रति आभार प्रकट किया।

विश्व कॉन्ट्रासेप्टिव डे पर विशेष नए गर्भनिरोधक के इस्तेमाल को राज्य में मिल रही स्वीकृति

प्रात :किरण संवाददाता

पटना- राज्य की लगभग 58 प्रतिशत जनसंख्या 25 वर्ष से कम है। यह सभी प्रजनन योग्य आबादी है। जाहिर है सरकार के द्वारा भी जनसंख्या स्थिरीकरण के लिए कई प्रयास किए गए हैं। इसके लिए स्थायी और अस्थायी दो प्रकार के साधन राज्य में उपलब्ध हैं। इसमें राज्य के लोगों ने 9 सितंबर, 2023 को राज्य में आए नए गर्भनिरोधक सब डर्मल इम्प्लांट को खूब स्वीकृति दी है। आलम यह है कि पीएमसीएच में मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल से भी सब डर्मल इम्प्लांट लगाने लाभार्थी आ रहे हैं। दो जिलों के तीन अस्पतालों में इसके इम्प्लांट लगाने की व्यवस्था के बाद भी राज्य के 22 जिलों के लोगों ने पीएमसीएच आकर सब डर्मल को अपनाया है। गर्भनिरोधकों के इस्तेमाल से मातृ मृत्यु दर में लगभग 20% से 30% तक की कमी आती है। राज्य में गर्भनिरोधक का इस्तेमाल करने वाली 90 प्रतिशत महिलाएं बंध्याकरण करा रही हैं। तीन साल में 10 हजार का लक्ष्य सब डर्मल इम्प्लांट लगाने में तकनीकी सहयोग करने वाली संस्था के मुताबिक, अगले तीन सालों के दौरान पटना एवं भागलपुर में लगभग 10 हजार सब डर्मल इम्प्लांट लगाने का लक्ष्य हैं। 24 सितंबर, 2024 तक कुल 2078 सबडर्मल इम्प्लांट किए गए हैं। इसमें 1355 पीएमसीएच, 723 गुरु गोविंद सिंह अस्पताल में लगाए गए हैं। वहीं पटना में कुल 19 चिकित्सक इसे लगा रहे हैं। 13 सितंबर को सब डर्मल के एक वर्ष पूरा होने पर एक कार्यक्रम के दौरान परिवार नियोजन के राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. ए.के. शाही ने सामूहिक प्रयास से अगले तीन वर्षों में इसे एक निश्चित संख्या पर लेकर जाने की भी बात कही थी। सबडर्मल इम्प्लांट करने में दूसरे नंबर पर बिहार 2078 सब डर्मल इम्प्लांट करने में बिहार देश में दूसरे नंबर है। असम पहले नंबर पर काबिज है। हालांकि परोक्ष रूप से देखने पर राज्य देश में पहले नंबर पर है। इसका कारण यह है कि सब डर्मल इम्प्लांट बिहार के दो जिलों जबकि असम के तीन जिलों में लगाया जा रहा है। इम्प्लांट में काउंसलिंग और फॉलोअप जरूरी द फेडरेशन ऑफ ऑब्सटेट्रिक्स एंड गायनेकोलॉजिकल सोसाइटी आफ इंडिया की सदस्य और वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ रीता झा कहती हैं कि यह अच्छी बात है कि गर्भनिरोधक की नई विधियों को तेजी से अपनाया जा रहा है। सब डर्मल इम्प्लांट में तेजी के लिए सटीक काउंसलिंग के साथ इम्प्लांट किए महिलाओं का फॉलोअप भी जरूरी है, ताकि इसके साइड इफेक्ट और प्रजनन स्वास्थ्य के असर को समझा जा सके। फॉलोअप में प्राप्त सूचनाओं को काउंसलिंग के दौरान भी उपयोग में लाया जा सकता है।

जिउतिया पर माताओं बेटे की खुशहाली को की पूजा-अर्चना

पटना सिटी, जिउतिया व्रत के तीन दिनों का अनुष्ठान का बुधवार को दूसरा दिन रहा। अष्टमी के दिन व्रती महिलाएं उपवास रह कर लव व कुश की पूजा-अर्चना कीं। मातृ नवमी के दिन गुरुवार को व्रती महिलाएं सूर्योदय के बाद व्रत का अनुष्ठान पूरा कर पारण करेंगी। त्योहार को लेकर बाजारों में शाम तक चहल-पहल बनी रही। इस दौरान पूजा पाठ के नियमित उपयोग में आने वाली पूजन सामग्री की खरीदारी की गई। व्रती महिलाओं ने सामूहिक पूजन का अनुष्ठान किया। पारण से पहले पूजा-अर्चना का अनुष्ठान व्रती महिलाओं की ओर से किया जाएगा। इसके पूर्व बुधवार की सुबह से लेकर अपराह्न तक भारतीयों के द्वारा गंगा नदी में स्नान कर पूजा-अर्चना की गई।

जयंती पर याद किये गये पंडित दीनदयाल उपाध्याय, सीएम, डिप्टी सीएम सहित अन्य ने किया नमन

सीएम नीतीश ने पुष्प अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने स्व पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के अवसर पर राजेन्द्र नगर, रोड नम्बर-3 स्थित पार्क में आयोजित राजकीय समारोह में स्व पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर अपनी श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, सहकारिता सह पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री डॉ प्रेम कुमार, राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री सह भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ दिलीप कुमार जायसवाल, सूचना एवं जनसम्पर्क मंत्री महेश्वर हजारी, गन्ना उद्योग मंत्री कृष्णनंदन पासवान, विधायक अरूण कुमार सिन्हा, विधान पार्षद संजय कुमार सिंह उर्फ गांधीजी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, मुख्यमंत्री के सचिव कुमार रवि, बिहार राज्य नागरिक परिषद् के पूर्व महासचिव अरविंद कुमार सिंह, बिहार बाल अधिकार संरक्षण आयोग के पूर्व सदस्य शिवशंकर निषाद सहित अनेक सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ताओं एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी स्व पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर अपनी श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग के कलाकारों द्वारा आरती पूजन, भजन-कीर्तन एवं बिहार गीत का गायन किया गया।

दीनदयाल के सपनों को साकार कर रही मोदी सरकार : सम्राट

पटना। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने दीनदयाल उपाध्याय की 108 वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार उनके सपनों को साकार कर रही है। श्री चौधरी ने कहा कि एकात्म मानववाद के प्रवर्तक दीनदयाल जी ने समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े गरीब आदमी की चिंता की इसलिए मोदी सरकार ने 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त राशन, 10 करोड़ गरीब महिलाओं को मुफ्त उज्ज्वला गैस कनेक्शन और पीएम आवास योजना के तहत 3 करोड़ गरीबों को पक्का आवास देने की योजना लागू की। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि गरीबी हटाओ का नारा देकर बहुत लोग सत्ता में आते रहे, लेकिन दीनदयाल उपाध्याय के आदर्शों पर चलने वाली भाजपा ने ही वास्तव में लोगों की गरीबी दूर की। बिहार में भाजपा-जदयू की सरकार ने केंद्रीय सहायता और सहयोग के बल पर 2.5 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाया।

उनके विचारों को पूरा कर रही भाजपा सरकार : विजय

पटना। भाजपा प्रदेश कार्यालय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती बड़े उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर भाजपा के नेताओं ने उनकी मूर्ति पर माल्यार्पण कर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर बिहार के उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने भी पंडित दीनदयाल उपाध्याय को नमन करते हुए कहा, पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपने जीवन में विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाकर खुद को एक कर्मयोगी के रूप में स्थापित किया। उनका सपना था कि विकास की किरण अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। आज पूरा देश उनकी विचारधारा और मार्गदर्शन से प्रेरित होकर गौरवान्वित महसूस कर रहा है। उप मुख्यमंत्री ने आगे कहा, आज भाजपा का हर कार्यकर्ता अपने रोटी की व्यवस्था कर राजनीति कर रहा है और समाज की सेवा में लगा हुआ है। हमें पंडित जी से प्रेरणा लेकर समाज के हर कमजोर वर्ग के लिए काम करना चाहिए। विजय सिन्हा ने इस मौके पर यह भी कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन और सोच आज भी प्रासंगिक है। उनके विचारों को आगे बढ़ाने का कार्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पूरी भाजपा सरकार कर रही है। हमारी सरकार समाज के कमजोर और पिछड़े वर्गों के लिए काम कर रही है, और यह पंडित जी के आदर्शों की ओर हमारा एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रनायक दीनदयाल उपाध्याय का जन्मदिन लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, और यह दिन हमारे लिए गर्व का दिन है। समारोह में बड़ी संख्या में पार्टी के वरिष्ठ नेता, कार्यकर्ता और समाजसेवी उपस्थित रहे।

दीनदयाल उपाध्याय के विचार आज भी प्रासंगिक : दिलीप

पटना। पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर बुधवार को प्रदेश कार्यालय में भाजपा के नेताओं ने उनकी मूर्ति पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ दिलीप जायसवाल ने कहा कि भारतीय राजनीति के महान चिंतक और मार्गदर्शक पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के अवसर पर, हम उनके आदर्शों और विचारों को नमन करते हैं। पंडित दीनदयाल ने अंत्योदय और एकात्म मानववाद का दर्शन प्रस्तुत कर समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास और समृद्धि पहुंचाने का संकल्प लिया था। उनका जीवन हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। इस विशेष अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने कहा, पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार आज भी प्रासंगिक हैं और हमें उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करना चाहिए। उनका दृष्टिकोण एक समरस समाज की स्थापना पर आधारित था, जहां हर व्यक्ति को समान अवसर मिले और समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने की प्रेरणा मिले। उन्होंने आगे कहा कि आज हमें पंडित दीनदयाल के आदर्शों को आत्मसात करते हुए समाज के हर व्यक्ति के उत्थान के लिए समर्पित रहना चाहिए। उनके एकात्म मानववाद के सिद्धांत के अनुसार, हमें मानवता की सेवा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान देना होगा। इस कार्यक्रम में मुख्यालय प्रभारी अरविंद शर्मा, मीडिया प्रभारी दानिश इकबाल, मीडिया सह प्रभारी अमित प्रकाश बबलू, कार्यालय मंत्री प्रवीण पटेल, सह कोषाध्यक्ष आशुतोष शंकर सहित प्रदेश के कई पदाधिकारी मौजूद थे।

राजद बिहार के विकास को चाहता है रोकना : मंगल

- पिछले 24 वर्षों में बिहार में हत्या की दर घट कर आधी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

स्वास्थ्य मंत्री मंगल पाण्डेय ने कहा है कि अपराध पर गलतबयानी कर राजद बिहार के विकास को रोकना चाहता है। बिहार पुलिस के आंकड़ों के अनुसार 2000 ई. के बाद के 24 वर्षों में बिहार में हत्या की दर घट कर आधी रह गई है, फिर भी राजद हाय-तौब्बा मचा कर बिहार की जनता को डराना व बिहार के विकास को झुठलाना, रोकना चाहता है। श्री पाण्डेय ने कहा कि 2001 में प्रति लाख आबादी पर हत्या की दर 4.4 के मुकाबले 2024 में यह घटकर 2.1 हो गयी है। देश के 20 से अधिक राज्यों में क्राइम का ग्राफ बिहार से ज्यादा है। कोरोना काल के वर्ष 2021 को छोड़ दें तो पिछले छह वर्षों में हत्या के मामलों में उल्लेखनीय कमी आयी है। उन्होंने कहा कि 2018 में हत्या के 2933, 2022 में 2929 और 2023 में 2844 मामले दर्ज किये गये थे। इनमें 72.2 फीसदी हत्याएं निजी कारणों से ही की गयी है। इसमें जमीन समेत अन्य कारणों से उपजा आपसी विवाद, प्रेम प्रसंग, अवैध रिश्ता सबसे मुख्य कारण रहे हैं। कानून के शासन के तहत हत्या सहित अपराध की हर घटना के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर सम्यक कार्रवाई होती है। श्री पाण्डेय ने कहा कि राजद राजनीतिक तौर पर जब एनडीए सरकार को विकास व सुशासन के मुद्दों पर नहीं घेर पाता है तो हत्या व अन्य अपराध की घटनाओं पर गलतबयानी कर बिहार की जनता को डराना व उनमें दहशत पैदा करना चाहता है। दरअसल राजद को बिहार का चतुर्दिक विकास पच नहीं रहा है।

विपक्ष के बयानबहादुर नेताओं को जनता से लगाव नहीं : श्रवण

- नीतीश कुमार के नेतृत्व में 2025 में एनडीए की होगी वापसी : सुनील

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने विपक्ष पर तंज कसा है। बुधवार को जदयू प्रदेश कार्यालय में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम में ग्रामीण विकास मंत्री ने कहा कि विपक्ष के नेताओं को जनता से कोई लगाव नहीं है। उन्होंने कहा कि विपक्ष के बयानबहादुर नेता हमेशा हेलिकॉप्टर में उड़ते हैं इसलिए उन्हें जमीनी हकीकत की जानकारी नहीं हैं और ना ही उनका जनता से कोई लगाव है। मंत्री ने आगे कहा कि नीतीश सरकार बाढ़, सुखाड़ एवं अन्य किसी भी तरह की आपदाओं से निपटने के लिए हमेशा तैयार रहती है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बार-बार यह दोहराते हैं कि सरकारी खजाने पर पहला हक आपदा पीड़ितों का है। शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ने प्रशांत किशोर के संबंध में पूछे जाने पर कहा कि प्रजातन्त्र में सभी को दल बनाने और राजनीति करने का अधिकार है लेकिन अंतिम फैसला जनता के हाथों में होता है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विगत 19 वर्षों के कार्यकाल में विकास का नया मानक स्थापित किया है। 2025 के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार के नेतृत्व में एनडीए की पुनः वापसी होगी। श्री सुनील कुमार ने कहा कि शिक्षकों के स्थानांतरण और पदस्थापना संबंधित नीति में दिव्यांग शिक्षक, असाध्य रोगों से पीड़ित शिक्षक, महिला शिक्षक एवं शिक्षक दंपत्ति से जुड़े आवेदनों को विशेष प्राथमिकता दी जाएगी। साथ ही उन्होंने बताया कि स्थानांतरण और पदस्थापना की नई नीति शीघ्र लागू होगी। इससे पहले मंत्रीगण ने प्रदेश के विभिन्न जिलों से पहुंचे आमजनों की समस्याओं से रूबरू हुए एवं उनके त्वरित निष्पादन हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस मौके पर विधानपार्षद ललन कुमार सर्राफ, जदयू महिला प्रकोष्ठ की प्रभारी सह पूर्व मंत्री रंजू गीता, प्रो नवीन आर्या चंद्रवंशी, संजय वर्मा मौजूद रहे।

पूर्व मध्य रेल

ई–निविदा सूचना

1. कार्य का नाम एवं स्थान : सोनपुर मंडल के विभिन्न स्थानों पर एलएचएस के निर्माण के कारण ओएचई में संशोधन। 2. कार्य का अनुमानित मूल्य (₹) : ₹45,39,566/–, 3. जमानत राशि (₹) : ₹90,800/–, 3. निविदा प्रपत्र का मूल्य (₹) : ₹0/–, 4. ई–निविदा प्रपत्र जमा करने एवं खुलने की तिथि : ई–निविदा प्रपत्र जमा करने की निर्धारित तिथि एवं समय : दिनांक 16.10.2024 को 12.00 बजे तक। ई–निविदा प्रपत्र खुलने का निर्धारित समय : दिनांक 16.10.2024 को 12.00 बजे वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (क.वि.) कार्यालय, पूर्व मध्य रेल/सोनपुर में खोले जायेंगे। 5. वेबसाईट एवं नोटिस बोर्ड का लोकेशन जहाँ से ई–निविदा संबंधित पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है : वेबसाईट : http://www.ireps.gov.in नोटिस बोर्ड : मंडल रेल प्रबंधक/सोनपुर के कैम्पस भवन, पूर्व मध्य रेल/सोनपुर

वरिय मंडल विद्युत इंजीनियर (क.वि.)/ पूमरे/सोनपुर

पीआर/01199/एसईई/ईटीआरडी/टी/24–25/28

नीतीश कुमार लोगों के जीवन को सुगम बनाने के लिए बना रहे हैं पुल : जदयू

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू ने विपक्ष दलों पर निशाना साधा है। बुधवार को प्रदेश कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुये मुख्य प्रवक्ता सह नीरज कुमार, प्रदेश प्रवक्ता हिमराज राम एवं मनीष यादव ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पुलों पर अनर्गल प्रलाप कर रूदाली बने हुये हैं। उन्हें घटित हुये किसी घटना की सच्चाई से कोई मतलब नहीं है। सच तो यह है कि बख्तियारपुर-ताजपुर गंगा महासेतु का ना तो स्पैम गिरा और ना ही पुल गिरा फिर भी राजनीतिक का बैताल अनर्गल आरोप लगाना शुरू कर दिया है। लेकिन उपरोक्त मामले में नेता प्रतिपक्ष को रूदाली बनने से कौन रोक सकता है। प्रवक्ताओं ने नेता प्रतिपक्ष से सवाल किया कि उनके माता-पिता के शासनकाल में कितने पुलों का निर्माण किया गया था? नीतीश कुमार ने अपने शासनकाल में ग्रामीण कार्य विभाग को छोड़कर सिर्फ बिहार राज्य पुल निर्माण निगम द्वारा अभी तक कुल 1874 पुलों का निर्माण करवाया। यह नीतीश कुमार जी की ही देन है जो आज नेता प्रतिपक्ष सड़क मार्ग से कार्यकर्ता संवाद यात्रा कर रहे हैं और उसी गाड़ी में खाना भी खा रहे हैं। प्रवकताओं ने कहा कि पुल का काम दो छोर को जोड़ना है नीतीश कुमार दलित, अतिपिछड़ा एवं कृषि से जुड़े लोगों के साथ ही बिहार की जनता के जीवन को सुगम बनाने के लिए पुल बना रहे हैं, जिससे राज्य के किसी जिले से 5 से 6 घंटे में लोग पटना पहुँच रहे हैं। वहीं नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव राजनैतिक पुल का निर्माण करने में लगे हुये हैं जिससे उनके परिवार के सदस्य राजनीति से जुड़ कर सेवा के नाम पर मलाई खा सकें। नेता प्रतिपक्ष रूदाली बन कर बिहार की जनता के साथ जो छलावा करना चाह रहे हैं, वह आम-आवाम को अच्छी तरह से पता है।

दाखिल खारिज में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों पर होगी कार्रवाई : मंत्री

- अंचल अधिकारियों की बैठक में बोलें राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के मंत्री

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग द्वारा कई प्रकार की ऑनलाइन सेवाएं दी जा रही हैं। इनमें से कई सेवाओं में अस्वीकृति की दर काफी अधिक है। कई बार अस्वीकृति का यह निर्णय जल्दबाजी में या निहित स्वार्थवश लिया जाता है। इससे निर्दोष लोगों के साथ अन्याय होता है। यह नहीं होना चाहिए। कई बार डीसीएलआर, एडीएम या डीएम के स्तर पर सुनवाई में पता चलता है कि आपका निर्णय गलत था। तबतक नुकसान हो चुका होता है। कई मामलों में वरीय पदाधिकारियों का आदेश लेकर रैयत भटकता रहता है, अंचल अधिकारी ध्यान नहीं देते हैं। लोग सालों तक दौड़ते रहते हैं। ये आपराधिक कृत्य हैं, जिनको नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के मंत्री डॉ दिलीप कुमार जायसवाल बुधवार को दशरथ मांझी श्रम एवं नियोजन संस्थान में अंचल अधिकारियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। डॉ जायसवाल ने जानबूझकर आवेदनों को अस्वीकृत करनेवाले अंचल अधिकारियों की पहचान करके उनके खिलाफ कार्रवाई करने का निदेश विभाग के अधिकारियों को दिया। बैठक में म्युटेशन के मामलों की विस्तार से समीक्षा की गई। दाखिल-खारिज के सर्वाधिक 47.93 फीसदी अस्वीकृति के मामले सीतामढ़ी के सुप्पी अंचल में पाए गए। 44 फीसदी अस्वीकृति के साथ पटना का पंडारक दूसरे जबकि 39.9 फीसदी अस्वीकृति के साथ बेगूसराय का साम्हो अखा कुरहा तीसरे स्थान पर था। निर्धारित समय सीमा के बाद लंबित आवेदनों की संख्या सर्वाधिक 7018 रोहतास के सदर अंचल में पाई गई जबकि 6748 लंबित आवेदनों के साथ पटना सदर अंचल दूसरे स्थान पर और 6428 लंबित आवेदनों के साथ पटना का संपतचक अंचल तीसरे स्थान पर रहा। पटना सदर अंचल अधिकांश मापदंडों पर फिसड्डी रहा और अंचल अधिकारियों की मासिक रैंकिंग में पटना सदर को अगस्त माह में सबसे नीचे यानि 534वां स्थान प्राप्त हुआ। सदर अंचल अधिकारी ने मात्र 2 फीसदी दस्तावेजों पर डिजिटल हस्ताक्षर किए जबकि वहां मात्र 25 फीसदी सरकारी जमीन की इंट्री की गई। इन्हीं मामलों में जिला का स्कोर क्रमशः 35 फीसदी एवं 90 फीसदी रहा। आज की बैठक में म्युटेशन प्लस के अलावे परिमार्जन प्लस की प्रगति की समीक्षा की गई। परिमार्जन प्लस में डिजिटाइज्ड जमाबंदी एवं छूटी हुई जमाबंदी की अलग-अलग समीक्षा की गई। दोनों में प्रगति को असंताषजनक पाया गया। यह तथ्य भी सामने आया कि 86 अंचल अधिकारियों ने जून माह से अबतक परिमार्जन प्लस में आए एक भी आवेदन का निष्पादन नहीं किया था। अपर मुख्य सचिव दीपक कुमार सिंह ने सभी अंचल अधिकारियों को अक्टूबर तक अपने प्रदर्शन में सुधार करने की चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि परिमार्जन प्लस पोर्टल पर दिए गए आवेदनों में से 50 फीसदी आवेदनों का निष्पादन हर हाल में अक्टूबर माह के आखिर तक हो जाना चांहिए। इसी तरह उन्होंने म्युटेशन के 6 लाख लंबित मामलों को घटाकर 2 लाख लाने की लक्ष्य दिया है। अपर मुख्य सचिव ने विभागीय अधिकारियों को म्युटेशन एवं परिमार्जन के रिजेक्टेड एवं रिवर्टेड मामलों की रैंडमली यानि बेतरतीब ढंग से जांच करने का आदेश विभागीय अधिकारियों को दिया ताकि यह स्पष्ट हो सके कि अस्वीकृति के पीछे कोई वाजिब कारण है या उसके पीछे अंचल अधिकारियों की मनमानी है। अपर मुख्य सचिव ने यह भी कहा कि जिन अंचल अधिकारियों की मासिक रैंकिंग लगातार खराब रहेगी, वह उनके खिलाफ कार्रवाई का सबसे मजबूत आधार बनेगी। उन्होंने आई0टी0 मैनेजर को कहा कि अक्टूबर माह से हरेक अंचल अधिकारी का पिछले 6 माह का रैंकिंग भी तैयार करें। सचिव जय सिंह ने कहा कि अंचल अधिकारी दैनिक और साप्ताहिक आधार पर अपने कर्मचारियों के साथ बैठक करें। लंबित मामलों की रोज प्रगति देखें। जिन मामलों में कागजी साक्ष्य कम हैं उनका फील्ड विजिट कर सत्यापन कर लें। की बैठक में पूरे बिहार से 170 अंचल अधिकारियों को बुलाया गया था। बाढ़ के कारण बेगूसराय एवं भागलपुर के अंचल अधिकारी बैठक में शामिल नहीं हुए। बैठक का उद्देश्य ऑनलाइन सेवाओं में जोड़ी गई नई विशेषताओं के बारे में अंचल अधिकारियों को जानकारी देना और उनके फीडबैक के आधार पर इन सेवाओं में और सुधार करना है। बैठक में विभाग के अपर सचिव अरूण कुमार सिंह समेत विशेष

पूर्व मध्य रेल

ई–निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से मंडल रेल प्रबंधक, दानापुर निम्नलिखित कार्यों के लिए मान्यता प्राप्त अनुभवी एवं वित्तीय रूप से सक्षम ठेकेदारों से एवं रेल, सिचांई, सी.पी.डबलु.डी., एम.ई.एस. अथवा अन्य लोक उपक्रम में रजिस्टर्ड अथवा कार्यरत ठेकेदारों से ऑन लाईन (ई–निविदा) आमंत्रित करते है।

निविदा सूचना संख्या : डबलू–7/ई–टेन्डर/08/ओपन/दानापुर/2024–25, **क्रमांक :01,** 1. कार्य के नाम, लोकेशन के साथ : वरीय मंडल अभियन्ता/2/दानापुर के तहत विभिन्न सेक्शनों पर आरडीएसओ/लखनऊ द्वारा मंजूर किए गए एच3सी वर्ग के इलेक्ट्रोड का उपयोग करके 52/60 कि. ग्राम प्वाइन्ट और क्रॉसिंग की पुनर्निर्माण/ पुनर्मुरदण। 2. अनुमानित निविदा राशि : ₹99,94,567.36, 3. बयाना की राशि : ₹1,99,900/–

क्रमांक :02, 1. कार्य के नाम, लोकेशन के साथ : वरीय मंडल अभियन्ता/2/दानापुर के तहत विभिन्न सेक्शनों पर रोबोटिक पुनर्निर्माण द्वारा 52/60 कि.ग्राम प्वाइन्ट और क्रॉसिंग की पुनर्निर्माण/ पुनर्मुद्रण जैसा कि आरडीएसओ/लखनऊ द्वारा मंजूर किए गए है। 2. अनुमानित निविदा राशि : ₹22,27,123/– 3. बयाना की राशि : ₹44,600/–

क्रमांक :03, 1. कार्य के नाम, लोकेशन के साथ : सिगरियावां और दनियावां स्टेशन पर (750 मीटर) नई माल लाइन का प्रावधान। 2. अनुमानित निविदा राशि : ₹5,73,44,541.89/– 3. बयाना की राशि : ₹4,36,700/–

क्रमांक :04, 1. कार्य के नाम, लोकेशन के साथ : हिलसा–इस्लामपुर सेक्शन के बीच एकंगर सराय पर ब्लॉक स्टेशन के साथ दो लूप लाइनें (750 मी.) का प्रावधान। 2. अनुमानित निविदा राशि : ₹4,88,51,690.83/–, 3. बयाना की राशि : ₹3,94,300/–

4. निविदा कागजात जमा करने की एवं निविदा खुलने की तिथि एवं समय : निविदा ऑन लाईन www.ireps.gov.in पर प्रस्तुत की जानी है। निविदाताओं द्वारा निर्धारित तिथि 15.10.2024 को 12.00 बजे तक निविदा प्रस्तुत कर दिया जाय एवं उसी दिन निविदादाताओं के समक्ष निर्धारित तिथि को 12.00 बजे के बाद निविदा खोली जायेगी। 5. वेब साईट नाम एवं निविदा संबंधी सूचना : 1. निविदा सूचना पात्रता मान दंड तथा निविदा क्रिस के वेब साईट CRIS website http.//www.ireps.gov.in पर देखा जा सकता है, एवं सूचना की पूर्ण जानकारी के लिये कार्यालय के नोटिस बोर्ड में देखें। उपरोक्त निविदा से संबंधित यदि कोई भी संशोधन/परिवर्तन किया जाता है तो इसकी सूचना समाचार पत्रों में प्रकाशित नहीं किया जायेगा बल्कि वेब–साईट पर अपलोड कर दिया जायेगा। 2. विवाद की स्थिति में हिन्दी एवं अंग्रेजी में दी सूचना में किसी प्रकार की भिन्नता पाये जाने पर आई.आर.ई.पी.एस पोर्टल में प्रकाशित सूचना मान्य होगा। 3. संशोधनों के लिए वेब साइट देखने और तदनुसार अपनी निविदा प्रस्तुत करने के लिए निविदाकारों की जिम्मेदारी है।

मंडल रेल प्रबंधक (इन्जी.)/ पूमरे/दानापुर

पीआर/01201/डीएनआर/अभि./टी/24–25/76

पूर्व मध्य रेल

ई-नीलामी सूचना

भारत के राष्ट्रपति के तरफ से मण्डल रेल प्रबन्धक (वाणिज्य), पूर्व मध्य रेल, पं० दीन दयाल उपाध्याय मंडल द्वारा मंडल में प्राथमिक रखरखाव वाले यात्री ट्रेनों के प्रत्येक कोच में ट्रेन के मिरर, मध्य बर्थ और उपरी बर्थ की बीच की जगह और गेट (भीतरी तरफ) पर विनाइल स्टिकर लगाने हेतु ई–नीलामी आमन्त्रित किया जाता है। विस्तृत विवरण निम्न हैं: (1) (AA/1) **कार्य का नाम, स्थान एवं पूर्ण अवधि:** पंडित दीन दयाल उपाध्याय मंडल में प्राथमिक रखरखाव वाले यात्री ट्रेनों के प्रत्येक कोच में ट्रेन के मिरर, मध्य बर्थ और उपरी बर्थ की बीच की जगह और गेट (भीतरी तरफ) पर विनाइल स्टिकर लगाने हेतु 03 वर्षों के लिए। **ई–नीलामी कैटेलॉग संख्या:** NFR-HyB-DDU-04 **ई–नीलामी लॉट संख्या:** HyB-OnB-155029-24-1 **ई–नीलामी की तिथि एवं समय:** ई–नीलामी दिनांक 05.10.2024 को 10:00 बजे शुरू होगी और 10:30 बजे बंद होगी। (2) **वेबसाइट का पता जहाँ ई–नीलामी का पूर्ण विवरण उपलब्ध है:** www.ireps.gov.in (E-auction Leasing)

मण्डल रेल प्रबन्धक (वाणिज्य)

पू०म०रेल, पं० दीन दयाल उपाध्याय।

पीआर/01193/डीडीयु/सीओएमएल/एन/24–25/28

सुपौल में मिड-वे सर्विस प्लाजा निर्माण हेतु 29.53 करोड़ की स्वीकृति : मंत्री

- जिले के आसनपुर कुपहा में पर्यटन विभाग की भूमि पर होगा निर्माण
- फूड कोर्ट, रेस्टोरेंट, इनडोर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज, रिटेल स्टोर व पार्किंग सहित कई सुविधाएं होगी उपलब्ध

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पर्यटन विभाग पूरे प्रदेश में बेहतर पर्यटकीय सुविधाओं के निर्माण हेतु सतत कार्यशील है। इस कड़ी में सुपौल में एनएन-27 पर मिड-वे सर्विस प्लाजा के निर्माण का निर्णय किया गया है। बुधवार को पर्यटन विभाग ने सुपौल जिलान्तर्गत आसनपुर कुपहा में पर्यटन विभाग की भूमि पर मिडवे सर्विस प्लाजा फेज-1 के निर्माण हेतु 29.53 करोड़ की स्वीकृति प्रदान कर दी है। पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा ने इसकी विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि ईस्ट-वेस्ट कॉरिडोर (पोरबंदर से सिलचर) एनएच- 27 पर कोसी महासेतु के समीप सुपौल जिलान्तर्गत आसनपुर कुपहा में पर्यटन विभाग की भूमि पर मिडवे सर्विस प्लाजा के निर्माण हेतु पर्यटन विभाग द्वारा 29.53 करोड़ की स्वीकृति प्रदान की गई है। आने वाले समय में इस बहुउद्देशीय भवन में फूड कोर्ट, क्विक सर्विस रेस्टोरेंट, इनडोर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज, रिटेल स्टोर, ई-चार्जिंग पॉइंट्स, फ्यूल आउटलेट, जन सुविधा व पार्किंग सहित यात्रियों के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। इस योजना के अन्तर्गत मुख्य भवन का निर्माण किया जाना है। इस भवन के अन्तर्गत उपरोक्त सुविधाओं के अतिरिक्त इन्टरटेनमेंट जोन, एडवरटाइजिंग फसाड आदि का निर्माण कार्य किया जाना प्रस्तावित है। इस योजना की कार्यकारी एजेंसी बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा योजना को आगामी 24 माह में पूर्ण किया जायेगा। विदित हो कि एनएच-27 अतिव्यस्त राजमार्ग है और इन सुविधाओं के विकास से निश्चित ही इस मार्ग से यात्रा करने वाले यात्रियों को एक सुखद अनुभव प्राप्त होगा। इसके निर्माण से पर्यटकों के साथ जनसामान्य को भी उच्चस्तरीय पर्यटकीय सुविधाएं प्राप्त होंगी।

स्मार्ट मीटर के खिलाफ राजद का प्रखंड मुख्यालय पर आंदोलन

- सरकार स्मार्ट मीटर लगाने की प्रक्रिया को रोके : राजद

पटना। राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानन्द सिंह ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि स्मार्ट मीटर के नाम पर लूट मचाया जा रहे है। उसके खिलाफ पूरे राज्यभर के प्रखंड मुख्यालयों पर 01 अक्टूबर को आन्दोलन किया जायेगा। साथ ही नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव ने जो 200 युनिट बिजली मुफ्त देने का संकल्प को पूरा किया जायेगा। श्री सिंह ने आगे कहा कि 2025 तक सभी उपभोक्ताओं के घरों में स्मार्ट मीटर लगाने को कहा गया है। जबरन अधिकारी स्मार्ट मीटर लगा रहे हैं। श्री सिंह ने आरोप लगाया कि ऐसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि इन कंपनियों द्वारा रकम नौकरशाह को दिया है, जिसके तहत 58 लाख स्मार्ट मीटर लगाने का एग्रीमेंट नॉर्थ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड से किया है। अब जो पुराने मीटर की तुलना में स्मार्ट मीटर से बढ़ा हुआ बिल उपभोक्ताओं के पास आ रहा है, इसके माध्यम से उपभोक्ताओं से वसूली कर रही है । पर अब तो हालात यह है कि गरीब परिवार के घरों की बिजली काटी जा रही है और अब तो पूरे गांव की ही बिजली काटी जा रही है। यह तो आफत बन गई है और शिकायतों का अंबार लगा हुआ है। हमारा फर्ज बनता है कि जनता के कठिनाईयों को लेकर सड़क से सदन तक इसका विरोध करें और संघर्ष करके स्मार्ट मीटर की खामियों और पुराने मीटर की तुलनात्मक अध्ययन कर जनता को राहत दिया जा सके। इस अवसर पर राष्ट्रीय महासचिव बिनु यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष अशोक कुमार सिंह, प्रदेश प्रधान महासचिव रणविजय साहू, प्रदेश मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव, प्रवक्ता एजाज अहमद, चितरंजन गगन, मृत्युंजय तिवारी, अरूण कुमार यादव, प्रदेश महासचिव प्रमोद कुमार राम, अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रवक्ता उपेन्द्र चन्द्रवंशी सहित अन्य गणमान्य नेतागण उपस्थित थे।

बिहार सरकार

बन्दोबस्त कार्यालय, पटना

अतिअल्पकालीन निविदा आमंत्रण संख्या–01 (बन्दो./2024)

भू–अभिलेख एवं परिमाप निदेशालय, बिहार, पटना से प्राप्त निदेश के आलोक में पटना जिलान्तर्गत नवगठित विशेष सर्वेक्षण शिविरों कार्यालयों के संचालन हेतु आवश्यक उपस्कर सामग्री एवं विशेष सर्वेक्षण अमीनों के कार्यार्थ सामग्रियों का क्रय कर आपूर्ति की जानी है।

निदेशालय द्वारा निर्दिष्ट Specification के अनुसार उपस्कर एवं सामग्री इत्यादि की आपूर्ति हेतु योग्य निबंधित फर्मो से द्विलिफाफा पद्धति के तहत दिनांक 01.10.2024 के अपराह्न 5:00 बजे तक मुहरबंद निविदा हाथों–हाथ अथवा डाक के माध्यम से बन्दोबस्त कार्यालय, पटना में आमंत्रित की जाती है। डाक से प्राप्त निविदा को निर्धारित तिथि एवं समय के पश्चात् प्राप्त होने वाले निविदा पर विचार नहीं किया जायेगा।

इस तरह से प्राप्त निविदाओं को अधोहस्ताक्षरी के कक्ष में 03.10.2024 को 01:00 बजे अपराहन् में खोली जायेगी जिसमें संबंधित निविदादाता अथवा उनके प्रतिनिधि उपस्थित रह सकेंगे। तकनीकी निविदा में सफल होने पर ही वित्तीय निविदा खोली जायेगी।

विशेष जानकारी के लिए सहायक बन्दोबस्त पदाधिकारी, मुख्यालय, पटना के मोबाईल संख्या– 9204777780 एवं प्रभारी पदाधिकारी, बन्दोबस्त पटना के मोबाईल संख्या– 6200380376 पर संपर्क किया जा सकता है।

उक्त सूचना www.state.bihar.gov.in/prdbihar पर भी देखी जा सकती है।

PR. No. 009043 (District) 2024-25

बन्दोबस्त पदाधिकारी
पटना

नशे की मार, बर्बाद करे सुखी परिवार।

अवधेश कुमार को धर्मजागरण से किया गया निष्कासित : कृष्ण

पटना। धर्म जागरण समन्वय के प्रान्त सांस्कृतिक प्रमुख कृष्ण कुमार मिश्रा ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधि धर्म जागरण समन्वय के उत्तर बिहार प्रान्त के संयोजक अवधेश कुमार को वित्तीय अनियमितता, संगठन के विपरीत कार्य, चुनाव के समय संगठन कार्य के विरूद्ध अनर्गल सोशल मीडिया पोस्ट आदि विभिन्न आरोपों के आधार पर उन्हें दायित्व मुक्त कर निष्कासित किया गया। साथ ही उत्तर बिहार के प्रान्त संयोजक का दायित्व श्री विजय यादव को बनाने का प्रस्ताव डॉ. आशुतोष कुमार के द्वारा किया गया जिसे बैठक में उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने समर्थन कर स्वीकार किया। ज्ञात हो कि सोनपुर में धर्म जागरण समन्वय व बिहार सांस्कृतिक विकास परिषद के तत्वधान में भव्य संकट मोचन मंदिर स्थापित किया गया है जिसके परिसर में निःशुल्क चिकित्सालय, महिलाओं के स्वावलंबन हेतू सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, श्री भारती वेदविद्या गुरुकुलम, मुकुन्द राव शोध संस्थान, प्रतियोगी परीक्षाओं हेतू निःशुल्क कोचिंग आदि की व्यवस्था की गयी है, जिससे समाज के गरीब व कमजोर वर्ग के लोगों को काफी लाभ मिलता है। अवधेश कुमार इन सभी व्यवस्थाओं और संगठन कार्य से प्रभावित हो सक्रिय रूप से लम्बे समय तक कार्य भी किया परन्तु अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और महत्वाकांक्षाओं के कारण विगत कुछ महीनों से संघ-संगठन विरोधी गतिविधियों में शामिल होकर विचारधारा के विपरीत सोशल मीडिया पोस्ट, समाज के लोगों के बीच संगठन विरुद्ध वातालर्प के कारण कई बार चेतावनी भी दी जा चुकी है

संक्षिप्त खबरें

स्कूल गई किशोरी लापता, युवक पर अपहरण का आरोप

बोचहा।गायघाट थाना क्षेत्र के एक गांव के रहने वाली हाईस्कूल की छात्रा रहस्यमय ढंग से लापता हो गई। छात्रा की मां ने बोचहां थाना क्षेत्र के बलिया गांव निवासी रितिक कुमार व रौशन कुमार पर अपहरण का आरोप लगाते हुए पुलिस से शिकायत की है। पुलिस से की गई शिकायत में किशोरी की मां ने कहा है कि सोमवार को करीब 9:30 बजे हाईस्कूल में पढ़ने गई थी। देर शाम तक घर नहीं लौटी तो काफी खोजबीन करने पर पता चला कि उक्त युवक द्वारा अपहरण किए जाने की बात कही है। वही परिजन ने किशोरी के साथ अप्रिय घटना होने की आशंका जताई है। थाना अध्यक्ष राकेश कुमार यादव ने बताया कि किशोरी की अपहरण की शिकायत की गई है, मामले की जांच कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

जिला युवा उत्सव 28 को आरडीएसओ कॉलेज में

मुजफ्फरपुर।जिला युवा उत्सव का आयोजन 28 सितंबर को स्थानीय राम दयाल सिंह महाविद्यालय मुजफ्फरपुर के सभागार में आयोजित होगा। इस इस आयोजन में जिला के 15 वर्ष से 29 वर्ष आयु वर्ग के इच्छुक एवं योग्य कलाकार भाग लेंगे। इस आयु वर्ग के इच्छुक कलाकार समूह गायन,समूह लोक नृत्य , शास्त्रीय नृत्य , एकांकी , शास्त्रीय गायन , शास्त्रीय वादन वक्तृता , हारमोनियम तबला ,पखावज वादन विधाओं में 26 सितंबर से 27 सितंबर तक सूचना भवन स्थित जिला कला संस्कृति कार्यालय में अपना -अपना निबंधन करा सकते हैं। भाग लेने के इच्छुक कलाकारों एवं उनके समूह के कलाकारों की संख्या आदि के सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश जारी कर दिया गया है।उपरोक्त विधाओं के अतिरिक्त युवा कलाकारों के प्रोत्साहन हेतु लोक गाथा गायन ,लोकगीत, सुगम संगीत, वायलिन वादन ,सारंगी वादन, सरोद वादन ,शहनाई, पखावज ,ध्रुपद धमाड़ आदि तथा चाक्षुष कला में चित्रकला ,हस्तशिल्प, मूर्तिकला ,फोटोग्राफी आदि की प्रतियोगिता भी होगी। कलाकारों के पंजीकरण के समय आयु के सत्यापन हेतु दो पासपोर्ट साइज फोटो एवं आधार कार्ड लाना होगा।

चेक बाउंस मामले के दोषी व्यक्ति को दो वर्षो का कारावास

दरभंगा। व्यवहार न्यायालय दरभंगा के अपर मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी नवम आरती कुमारी की अदालत ने मंगलवार को एन आई ऐक्ट(चेक बाउंस)के एक मामले में बहेड़ी थानाक्षेत्र के घनौली गांव के सरोवर सिंह के पुत्र संजय सिंह को दो बर्षो का कारावास की सजा सुनाई है।वहीं कोर्ट ने एक लाख 2 हजार,377 रुपये का चेक बाऊंस के ऐवज में 2,लाख,20हजार,577 रुपये भुगतान करने का निर्णय सुनाई है।वादी के अधिवक्ता पंकज कुमार सिंह ने बताया कि बहेड़ी थानाक्षेत्र के पवरा गांव के गणेश प्रसाद सिंह मुर्गी का चूज्जा और मुर्गीदाना बिक्रय करता था।जिससे अभियुक्त संजय ने लाखों रुपये का मुर्गी का बच्चा और दाना उधारी में लिया था। उधारी राशि का तगादा करने पर संजय ने उसके प्रतिष्ठान से खरीददारी बंद कर दिया।पीड़ित गणेश द्वारा उधारी राशि की तगादा करने पर उसने एसबीआई बैंक के अपने खाता का चेक दिया जो बाऊंस कर गया।पीड़ित ने रुपये भुगतान के लिए विधिक नोटिस भेजवाया,लेकिन उसने बकाये राशि का भुगतान नही किया।बाध्य होकर पीड़ित ब्यवसाई को न्यायालय में परिवाद पत्र संस्थित कराना पड़ा।एसीजेएम नवम, आरती कुमारी की कोर्ट ने मंगलवार को इस मामले की सुनवाई पुरी कर अभियुक्त संजय को दो बर्ष का कारावास तथा अर्थदंड की सजा सुनाई है।अर्थदंड नही चुकाने पर 6 माह का अतिरिक्त कारावास भुगतने का प्रावधान किया है।इस निर्णय से अब अपर्याप्त राशि के खाते से चेक देनेवाले लोगों की खैर नहीं रहेगी।

अवैध वसूली करने वाले बिचौलियों से रहे सावधान : बीडीओ

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)।बीडीओ अशोक कुमार जिज्ञासु ने अपने फेसबुक अकाउंट पर लोगों को प्रधानमंत्री आवास योजना के नाम पर अवैध वसूली करने वाले बिचौलियों से सावधान रहने की अपील किया है। कहा कि ऐसी सूचना मिल रही है कि गांव गांव में बिचौलिया द्वारा लोगों को पीएम आवास योजना ग्रामीण के अन्तर्गत आवास प्लस में नाम जोड़ने के लिए अवैध वसूली कर रहा है। सरकार के द्वारा अभी तक इस संदर्भ में कोई आदेश प्राप्त नहीं हुआ है। आदेश प्राप्त होने इसकी आम सूचना प्रसारित किया जाएगा। उन्होंने अपना मोबाइल नंबर जारी करते हुए कहा कि कोई बिचौलिया प्रधानमंत्री आवास योजना में नाम जोड़ने के लिए राशि की मांग करता है तो मेरे मोबाईल नंबर पर शिकायत दर्ज करें। उन्होंने प्रखंड के बुद्धिजीवियों और जनप्रतिनिधियों को इसके लिए लोगों को जागरुक करने की अपील किया।

स्वच्छता सेवा को जन-जन व कण-कण का संकल्प बनायें : डीएम

जिला पदाधिकारी ने समहरणालय परिसर में स्वयं किया पौधारोपण

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। जिलाधिकारी राजीव रौशन द्वारा समाहरणालय परिसर में पौधारोपण कर स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का विधिवत प्रारंभ किया गया। तत्पश्चात समाहरणालय परिसर से स्वच्छता ही सेवा अभियान अंतर्गत जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

हम सब ने ठाना है, नदी, तालाबों को स्वच्छ बनाना है।नमामि गंगे, हर हर गंगे !अब हमने यह ठाना है, नदियों को बचाना है।नहीं रुकेंगे, स्वच्छ करेंगे जैसे नारों के साथ स्वच्छता जागरूकता हेतु ऊर्जान्वित सैकड़ों एनसीसी कैडेट्स, गंगा दूत व नेहरू युवा केन्द्र के स्वंयसेवक समाहरणालय परिसर से आयुक्त कार्यालय, प्रेक्षागृह, जेल रोड, लोहिया चौक, लहेरियासराय टावर, चट्टी गुमती,अतिथिगृह होते हुए पुनः समाहरणालय परिसर पहुंचे। जिला पदाधिकारी ने सम्बोधित करते हुए कहा जिला गंगा समिति के तत्वाधान में आयोजित स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम में एनसीसी कैडेट्स, युवा स्वंयसेवक ने जिस प्रकार भाग लिया है इससे पूरे देश, राज्य एवं जिले में एक विशेष संदेश जाता है। जिस प्रकार हमलोगों की आबादी बढ़ी है, पृथ्वी पर मानव गतिविधि का भार बढ़ा है,उस संदर्भ में अगर हम स्वच्छता, रिसाइकिल, रियूज के महत्व को नहीं समझेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी पृथ्वी,हमारी मिट्टी उपजाऊ नहीं रह जायेगी और हमलोग को खाने में काफी दिक्कत हो जायेगी।

उन्होंने कहा यह बात आज के युवा पीढ़ी को भी समझना पड़ेगा तभी हम भविष्य की पीढ़ी को सुरक्षित पृथ्वी, सुरक्षित देश और सुरक्षित मानव संसाधन दे पाएंगे।स्वच्छता के लिए हमें इंड-टू-इंड डिस्पोजल अर्थात ऑर्गेनिक कचड़ा को कंपोस्ट बनाकर कृषि में इस्तेमाल एवं इनॉर्गेनिक कचड़े को रिसाइकिल का हिस्सा बनाकर पुनः नए उत्पाद के रूप में इस्तेमाल करने की जरूरत है।उन्होंने कहा राष्ट्रपिता बापू ने स्वच्छता का जीवन दर्शन आज से बहुत पहले ही हम लोगों को दिया था कि जो आदमी कचड़ा उत्पन्न करता है,वह उसी की जिम्मेदारी है, वह उत्पन्न कचड़े का उचित निपटारा करे और उस चक्र का हिस्सा बना दे जहाँ से उसकी उत्पत्ति हुई है ताकि उसे रिसाइकिल कर पुनः उसका इस्तेमाल हो सके। कार्यक्रम में नगर आयुक्त राकेश कुमार गुप्ता, जिला योजना पदाधिकारी शक्ति रंजन, गंगा समिति के जिला परियोजना पदाधिकारी फारूक इमाम, जिला योजना कार्यालय से प्रशांत कुमार सिंह, गोपाल कुमार चौधरी, आशीष झा, मनहर मुर्मू, अभय सिंह, नाटक मण्डली के सदस्य सुष्मिता, हर्षिता, लक्ष्मी, हिमांशु, कृष, विकास आशुतोष, गौरव, सोनू व विक्रम, नेहरू युवा केंद्र स्वंयसेवक मुकेश झा, मणिकांत ठाकुर, प्रशांत झा, राम नारायण पंडित, पूजा कुमारी, संगीता कुमारी, गंगा दूत साक्षी कुमारी, वर्षा कुमारी, संजीव कुमार, दिनकर कुमार, एन सी सी कैडेट दीपक, अली, खुशीदा, ईशा सहित सैकड़ों कैडेट्स ने हिस्सा लिया।

टैक्स डिफॉल्टर वाहन मालिकों के लिए शुरू हुई सर्व क्षमा योजना

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। टैक्स डिफॉल्टर वाहन मालिकों को राहत देने के लिए परिवहन विभाग ने सर्वक्षमा योजना शुरू किया है। इस योजना के तहत बकाया पथकर, हरित कर, अस्थायी निबंधन की फीस और ट्रेड सर्टिफिकेट पर प्रति वाहन लगने वाला व्यापार कर के एकमुष्त भुगतान पर अर्थदण्ड और ब्याज से विमुक्ति दी जाएगी। विभिन्न ट्रक-बस मालिकों एवं विभिन्न संघों के मांगों पर विचार करते हुए एकमुश्त टैक्स जमा करने में छूट का सुनहरा अवसर दिया गया है। जिला परिवहन पदाधिकारी ने बताया कि विभिन्न कारणों से बड़ी संख्या में परिवहन,गैर परिवहन वाहन टैक्टर-टेलर, बैट्री चालित (इलेक्ट्रिक) वाहन स्वामी द्वारा ससमय कर जमा नहीं करने के कारण टैक्स डिफॉल्टर हो गए थे। समीक्षा के क्रम में कुछ ऐसे वाहन विक्रेता भी संज्ञान में आये, जिनके पास व्यापार कर से संबंधित पुराने बकाये हैं। वे इसे जमा करने के लिए तैयार हैं, लेकिन बकाये से अधिक अर्थदंड लगने के कारण मूल कर की राशि नहीं दे पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में जनहित को देखते हुए एकमुश्त टैक्स जमा करने पर विशेष छूट का प्रावधान किया गया है।इस योजना का लाभ 31 मार्च 2025 तक उठा सकते हैं। टैक्स डिफॉल्टर निबंधित ट्रेक्टर-ट्रेलर के वाहन स्वामी, टैक्स डिफॉल्टर बैट्री चालित (इलेक्ट्रिक) वाहन स्वामी, टैक्स डिफॉल्टर निबंधित,अनिबंधित परिवहन गैर परिवहन वाहन स्वामी और ट्रेड टैक्स डिफॉल्टर वाहन डीलर उठा सकते हैं। जिला परिवहन पदाधिकारी ने वाहन मालिकों से अपील की है कि वे इस योजना का लाभ उठाएं और अपने बकाया करों का भुगतान करें। इस योजना से वाहन मालिकों को अपने बकाया करों का भुगतान करने में मदद मिलेगी और उन्हें अर्थदण्ड से विमुक्ति मिलेगी। इसके अलावा, राजस्व में भी वृद्धि होगी। एकमुश्त 30 हजार रुपये जमा करने पर अर्थदंड से सर्वक्षमा दी जाएगी। जिन टैक्स डिफॉल्टर (कर प्रमादी) टैक्टर-ट्रेलर का पथकर बकाया है उन्हें एकमुश्त 30,000 रु. जमा करने पर शेष कर/अर्थदंड से सर्वक्षमा दी जायेगी। वहीं टैक्स डिफॉल्टर सभी प्रकार के निबंधित वाहन (अस्थायी निबंधन सहित) तथा सभी प्रकार के अनिबंधित वाहन (टैक्टर-ट्रेलर एवं उत्सर्जन मानक बीएस-4 के अनिबंधित वाहनों को छोड़कर), बैट्री चालित (इलेक्ट्रिक) वाहन का पथ कर बकाया उन्हें मूल पथकर एवं 30 प्रतिषत अर्थदंड जमा करने पर शेष अर्थदंड से मुक्ति दी जायेगी। जिनके विरुद्ध नीलाम पत्र दायर है, उन्हें एकमुश्त राशि,कर और अर्थदंड जमा करने पर नीलाम पत्र वापस ले लिया जायेगा एवं नीलाम पत्र पर ब्याज की राशि भी माफ कर दी जायेगी।

भाकपा ने किया 16सूत्री मांगों के समर्थन में समाहरणालय पर प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के आह्वान पर मुजफ्फरपुर जिला को सूखाग्रस्त घोषित करने, विशेष भूमि सर्वेक्षण को स्थगित कर जमीन संबंधी विसंगतियों को दुरुस्त करने सहित 16 सूत्री मांगों को लेकर रोषपूर्वक प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन के दौरान वास विहीन ,भूमिहीन परिवारों को पांच डीसमल आवासीय जमीन देने, पर्चा धारियों को जमीन पर कब्जा तथा कब्जा वाली जमीन का पर्चा देने, दाखिल-खारिज के लंबित मामलों का शीघ्र निष्पादन करने, शहर को जाम से निजात दिलाने के लिए एन एच 28 के मधौल से एन एच 57 तथा एन एच 527सी के मिलन स्थल मझौली तक रिंगरोड का निर्माण करने, शहर के रामदयालू नगर, सादपुरा तथा गोबरसही रेलवे क्रासिंग पर ओवरब्रिज बनाने, लकड़ीढ़ाई पुल के सम्पर्क पथ का शीघ्र निर्माण करने, अखाड़ाघाट पुल के समानांतर फोरलेन पुल बनाने, दादर-कोल्हुआ से बड़ी कोठिया तक बूढ़ी गंडक नदी किनारे मेरिन ड्राइव सड़क का निर्माण करने की मांग की। प्रदर्शन से पूर्व मुजफ्फरपुर क्लब मैदान से प्रदर्शनकारियों ने लाल झंडे तथा मांगों से संबंधित तख्तियां लिए गगनभेदी नारों के साथ आकर्षक जुलूस निकाला जो शहर के मुख्य मार्गों से गुजरते हुए समाहरणालय पहूंचकर रोषपूर्ण प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनकारियों के विशाल कारवां से समाहरणालय के मुख्य द्वार घंटों जाम रहा। प्रदर्शन स्थल पर सभा को संबोधित करते हुए पार्टी नेताओं ने कहा कि जिला भीषण सूखा के चपेट में है और सरकार सूखा का सामना करने में पूरी तरह फेल हो चुकी है। वक्ताओं ने सूखा का सामना करने के लिए अभियान चलाकर निजी नलकूपों में बिजली कनेक्शन देने तथा डीजल अनुदान योजना को सरल बनाने की मांग की। वक्ताओं ने कहा कि सरकार द्वारा आनन-फानन बिना पूर्व तैयारी किए भूमि सर्वेक्षण शुरू कर देने से किसानों में संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई है। सरकार भूमि सर्वेक्षण को फिलहाल स्थगित कर जमीन संबंधी समस्याओं का निदान सुनिश्चित करें। वक्ताओं ने जिला में प्रशासनिक सुविधा के लिए कटरा, सकरा, सरैया, मोतीपुर तथा सदर को अनुमंडल बनाने तथा भुसरा, हथौड़ी, पहसौल, मनियारी, भिखनपुर और देवरिया को प्रखंड बनाने की मांग पूरजोर ढ़ंग से उठाया।अंत में जिला पदाधिकारी सुब्रत कुमार सेन से सात सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल मिलकर 16 सूत्री मांग -पत्र के निदान के लिए शीघ्र कार्रवाई की मांग की। प्रदर्शन का नेतृत्व पार्टी के राज्य सचिव मंडल सदस्य अजय कुमार सिंह, जिला सचिव रामकिशोर झा, सहायक जिला सचिव द्वय जगदीश गुप्ता तथा चंदेश्वर प्रसाद चौधरी और राज्य परिषद् सदस्य शंभू शरण ठाकुर कर रहे थे। प्रदर्शन में शिवजी प्रसाद, विश्वनाथ राय, कमलेश्वर चौधरी, मो० मोसाफिर, रंजन महतो, महेश चौधरी, रघुवर भक्त, उमेश चौधरी, राम बालक महतो, विश्वनाथ सिंह, राम बच्चन यादव, अजित कुमार, मो० नईम, सुनील श्रीवास्तव, प्रो० लक्ष्मीकांत, सुनील ठाकुर, मो० जहीर, उदय ठाकुर, सकलदेव सहनी आदि पार्टी नेताओं ने शिरकत किया। सभा की अध्यक्षता जिला सचिव रामकिशोर झा ने किया।

युवा मानस को सशक्त बनाने के लिए कार्यशाला आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। डाक्टर राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के मानव विकास और परिवार अध्ययन विभाग में मंगलवार को ह्युवा मानस को सशक्त बनानाः बुलिंग और सोशल मीडिया के मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण पर प्रभावह्व विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला राजेंद्र शिशु सदन के स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए आयोजित की गई थी।

कार्यशाला की अध्यक्षता माननीय कुलपति डॉ. पी.एस. पांडेय ने की। उन्होंने स्कूली बच्चों से बातचीत की और उनके भविष्य के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए। डॉ पांडेय ने कहा कि स्कूल में ही बच्चों में शिक्षा और संस्कार की नींव पड़ती है जो उनके व्यक्तित्व का निर्माण करती है। इसलिए बच्चों के स्कूली शिक्षा पर अभिभावकों और शिक्षकों को बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है।कॉलेज ऑफ कम्युनिटी साइंस की डीन डॉ. उषा सिंह ने बच्चों को उनके भविष्य के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरित किया।एलपी कोर्स की समन्वयक डॉ. आरती सिन्हा ने कहा कि युवा मानस को अनोखी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए इस तरह की कार्यशालाएं आयोजित करना आवश्यक है।

कार्यशाला का समापन मानव विकास और परिवार अध्ययन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. वीणा शाही ने धन्यवाद ज्ञापन देकर किया।इसके बाद तकनीकी सत्र आयोजित किया गया, जिसमें एलपी के छात्रों ने युवाओं को सशक्त बनाने के लिए अपने विचार साझा किए। इस कार्यशाला का उद्देश्य स्कूली बच्चों को बुलिंग और सोशल मीडिया के प्रभाव से निपटने के लिए जागरूक करना और उनके मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देना था।

एम्स के जमीन हस्तांतरण की प्रक्रिया पूरा होना एतिहासिक : सांसद

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। दरभंगा एम्स निर्माण के लिए बिहार सरकार द्वारा जमीन हस्तांतरण की प्रक्रिया पूरी किए जाने पर दरभंगा के सांसद सह लोकसभा में पार्टी के सचेतक डा गोपाल जी ने प्रसन्नता व्यक्त की है तथा इसके लिए देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी गृह मंत्री श्री अमित शाह स्वास्थ्य मंत्री श्री जेपी नड्डा बिहार के सीएम नीतीश कुमार बिहार के स्वास्थ्य मंत्री श्री मंगल पाण्डेय सहित एनडीए के शीर्ष नेतृत्व के प्रति आभार प्रकट किया है। सांसद डा ठाकुर ने एम्स निर्माण में जमीन हस्तांतरण की प्रक्रिया को मील का पत्थर बताते हुए कहा 2015- 16 में जब से दरभंगा में बिहार के दुसरे एम्स की स्वीकृति प्रदान की गई एवं 750 बेड वाले इस अस्पताल के लिए 2020 में 1261 करोड़ राशि की मंजूर की गई तब से आठ करोड़ से ऊपर मिथिलावासियों सहित नेपाल एवम पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों को सुलभ स्वास्थ का सपना साकार दिखने लगा जो अब हकीकत में बदलने जा रहा है। उन्होंने कहा कि 188 एकड़ जमीन मे बनने वाला यह एम्स सवा दो लाख वर्ग मीटर में इसका निर्माण होगा तथा एच एस सी सी कंपनी 36 महीने में इसे पूरा करेगी।

मधुबनी में दो बाइक की टक्कर में एक युवक की मौत तीन घायल, इलाज जारी

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी के ललमनियां थाना क्षेत्र के तोरियाही कालेज एनएच 227 पर दो बाइक की आमने-सामने टकराने से,एक बाइक सवार की मौत हो गया जबकि, तीन घायल हो गए। जिसमे एक की हालत गंभीर बताई जा रही है।जानकारी के अनुसार दो अलग-अलग बाइक पर चार युवक सवार थे। एक बाइक सवार लौकहा से ललमनियां की ओर आ रहा था। तो दूसरा बाइक सवार ललमनियां से लौकहा की ओर जा रहा था। प्रत्यक्षदर्शियो के अनुसार दोनो बाइक सवार की रफ्तार अत्यधिक था अचानक आमने-सामने की टक्कर हो गया।टक्कर इतनी जबरदस्त हुआ की दोनो बाइक सवार एनएच पर घसीटते हुए दूर जाकर गिरे। जिससे एक की मौत मौके पर ही हो गया। ललमनियां पुलिस को जानकारी मिलते ही घटना स्थल पर पहुंचकर। ग्रामीणो के सहयोग से सभी को इलाज के लिए खुटौना सीएचसी लाया गया जहां जांच कर डाक्टरो ने मधुबनी रेफर कर दिया इसमें एक की हालत गंभीर बताई गई है।मृतक की पहचान लाल साह के 22 वर्षीय बेटा कृष्णा साह के रूप में हुआ है। ये लौकहा थाना क्षेत्र के नहरी गांव का रहने वाला बताया गया है। इन्होने उसी गांव के अपने क्लास साथी 23 वर्षीय मनीष कुमार झा के साथ बाइक पर सवार होकर घर से ललमनियां के तोरि याही कालेज में 12 वीं की फार्म जमा करने के लिए आ रहा था। दूसरा घायल बाइक सवार रघुनंदन मंडल के 25 वर्षीय बेटा अवि कांत कुमार है। ये अपने साथी रामदुलार सुपौल जिला के भप टियाही थाना क्षेत्र के सपतहा सरायगढ़ रहने वाला बताया गया है। आरोपी यूट्यूब चैनल की रिपोर्टिंग कर ललमनियां से लौट रहा था। बता दें कि पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज परिजन को दिया गया ।

जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव ने बालगृह का किया निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव रंजन देव ने मंडल कारा पर्यवेक्षण गृह एवं बालगृह का निरीक्षण किया।उन्होंने मंडल कारा में महिला वार्ड सहित सभी वार्डो का निरीक्षण कर बंदियों के रहन सहन व खान पान की जानकारी लिए।निरीक्षण के दौरान जुवेनाइल आरोपी के बारे मे भी पूछताछ किया गया साथ ही मंडल कारा स्थित जेल लीगल एड क्लिनिक का निरीक्षण कर प्रतिनियुक्त पैनल अधिवक्ता एवं जेल पीएलवी को जरूरी दिशा निर्देश दिया।सचिव ने कहा कि विचाराधीन बंदियों या कोई भी बंदी जिसे विधिक सहायता की आवश्यकता हो तो आवेदन जेल लीगल एड क्लिनिक के जरिए भेजा जाये। उन्होंने बालगृह एवं पर्यवेक्षण गृह में आवासित बच्चों से बात कर बच्चों की सुरक्षा,खान पान, शिक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य आदि की जानकारी लिए।उन्होंने चाइल्ड केयर होम्स के प्रबंधकों से कहा कि आवासित बच्चों के साथ किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार नहीं होना चाहिए।

मौके पर बाल गृह के प्रभारी मजिस्ट्रेट बृजनाथ,अधीक्षक दीपक कुमार,पैनल अधिवक्ता इंदू कुमारी, सहायक मुन्ना दास आदि मौजूद थे।

पं दीनदयाल उपाध्याय गरीब व वंचितो के उत्थान के लिए आजीवन काम किया : पप्पू सिंह

प्रात : किरण संवाददाता

अलीनगर(दरभंगा)। जनसंघ के संस्थापक स्व. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का बुधवार को 108वां जयंती अलीनगर मंडल के जयंतीपुर दाथ में मनाया गया। इस मौके पर संयुक्त मोर्चा की सदस्यता प्रभारी सह किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष संजय सिंह उर्फ पप्पू सिंह भाजपा कार्यकर्ताओ के साथ उनके तैलचित्र पर पुष्पांजलि कर श्रद्धांजलि अर्पित किए। इस मौके पर उन्होंने कहा कि हर वर्ष की 25 सितंबर को स्व. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जयंती के उपलक्ष्य में अंत्योदय दिवस मनाया जाता है। यह दिन भारतीय समाज में गरीबों और वंचितों के उत्थान के प्रति समर्पण को दशार्ता है। अंत्योदय का अर्थ है अंतिम व्यक्ति का उदय, अर्थात समाज के सबसे गरीब और पिछड़े व्यक्ति को समाज की मुख्यधारा में लाना है। जिलाध्यक्ष ने आगे कहा कि पंडित जी महान भारतीय विचारक, संगठनकर्ता और राजनीतिक नेता थे, जिन्होंने भारतीय समाज की जड़ों को मजबूत करने और देश के गरीब और वंचित लोगों के उत्थान के लिए आजीवन काम किया। 1960 और 1970 के दशक में उन्होंने अपनी विचारधारा के माध्यम से गरीबों के सशक्तिकरण और आर्थिक सुधार पर जोर दिया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने यह मान्यता दी कि जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति का विकास नहीं होता, तब तक समाज का समग्र विकास संभव नहीं है। इस दौरान उन्होंने सदस्यता अभियान को लेकर कहा कि जिस तरह से भाजपा कार्यकर्ता सदस्यता अभियान को लेकर घर-घर जाकर लोगों को सदस्य बनाने का काम कर रहे हैं, वह दिन दूर नहीं जब देश में हर जगह भारतीय जनता पार्टी के सदस्य दिखाई देंगे और इसमें अहम भूमिका कार्यकर्ता की होगी। इस मौके पर मंडल संयोजक लाल मुखिया, पंकज सहनी, गंगाराम सहनी, रामनाथ सहनी, अशोक सदा, सियाराम सहनी, जगरनाथ यादव, घुरन सहनी आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में 26-28 सितंबर के बीच भारी बारिश को लेकर चेतावनी जारी

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

मौसम विभाग के अनुसार 26 सितंबर को राज्य के अधिकांश भागों के एक या दो स्थानों में मेघगर्जन व वज्रपात के साथ 30-40 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना व इस दौरान गोपालगंज, सहरसा, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, वैशाली, मधेपुरा, पूर्णिया, सीवान व सारण जिले के एक या दो स्थानों में भारी वर्षा होने की संभावना को लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है। वहीं इस दौरान सीतामढी, शिवहर, मधुबनी, पूर्वी चंपारण और पश्चिमी चंपारण जिलों के एक या दो स्थानों में बहुत भारी वर्षा होने की संभावना को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। गोपालगंज, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पूर्वी चंपारण और पश्चिमी चंपारण जिलों के एक या दो स्थानों में 27 सितंबर को बहुत भारी वर्षा होने की संभावना को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। वहीं इस दौरान समस्तीपुर, सहरसा, शिवहर, वैशाली, सीवान, सारण और सीतामढी जिलों के एक या दो स्थानों में भारी वर्षा होने की संभावना को लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है। वहीं 28 सितंबर को गोपालगंज, सीवान, सारण और पश्चिमी चंपारण जिले के एक या दो स्थानों में भारी वर्षा होने की संभावना को लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है। वहीं बुधवार को अधिकतम तापमान सामान्य से 2.5 डिग्री सेल्सियस कम रहते हुए 30 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं न्यूनतम तापमान सामान्य से 0.8 डिग्री सेल्सियस कम रहते हुए 24.5 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इस दौरान 13.8 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पुरवा हवा चली।

अंतर जिला वाहन लुटेरा गिरोह के चार बदमाश गिरफ्तार, एक देसी कट्टा, एक रिवाल्वर व पांच गोली बरामद

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

पुलिस ने अंतरजिला वाहन लुटेरा गिरोह के चार अपराधियों को गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर गिरफ्तार किया है। उनके पास से पुलिस ने एक कार, एक देसी कट्टा, एक रिवाल्वर, पांच गोली व छह मोबाइल बरामद किया है। पुलिस ने उन्हें वाहन लूट की घटना की योजना बनाने के दौरान गिरफ्तार किया है। वहीं इस दौरान स्कार्पियो सवार तीन अपराधी भागने में सफल रहे, जिनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है। गिरफ्तार अपराधियों की पहचान वैशाली जिले के भगवानपुर थाना क्षेत्र के सहथा वार्ड नंबर दो के रहने वाले अरविंद सहनी, काजीपुर थाना क्षेत्र के दौलतपुर चांदी के नागेंद्र महतो, मुजफ्फरपुर जिले के सरैया थाना क्षेत्र के मुंगौली वार्ड नंबर तीन के मनीष कुमार उर्फ मुंशी एवं तुर्की थाना क्षेत्र के तुर्की चैनपुर वार्ड नंबर नौ के मंजीत कुमार के रूप में हुई है। इस संबंध में बुधवार को अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित प्रेस वार्ता में वाहन लुटेरा गिरोह का खुलासा करते हुए एएसपी सह सदर एसडीपीओ-1 संजय कुमार पाण्डेय ने बताया कि यह गिरोह जिले के उजियारपुर में दो व सरायरंजन में चार वाहन लूट की घटना को अंजाम दे चुका है। इसके अलावा इस गिरोह ने वैशाली, सारण, मुजफ्फरपुर व दरभंगा जिले में लूट की कई घटनाएं की हैं। एएसपी संजय कुमार पाण्डेय ने बताया कि ऐसे गिरोह के खुलासे व आपराधिक घटना में संलिप्त बदमाशों की गिरफ्तारी को लेकर एसपी अशोक मिश्रा ने पदभार ग्रहण करते ही एएसपी संजय कुमार पाण्डेय के नेतृत्व में एक एसआईटी का गठन किया गया था।

जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने योजनाओ के बारे मे बताया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा के निर्देशक अलोक में जिला निबंधन एवं परामर्श केंद्र मधुबनी के द्वारा संचालित योजनाओ यथा बिहार स्टूडेंट काक्रेडिट कार्ड योजना कुशल युवा कार्यक्रम मुख्यमंत्री स्वयं सहायता भत्ता योजना व्यापक प्रसार प्रसार एवं काउसलिग कार्य के.भी.ऐस .कॉलेज उच्चैठ मधुबनी में किया गया । कार्यक्रम में लग-भाग 100से अधिक छात्र छत्राओ ने भाग लिया। मुकेश कुमार सहायक प्रबंधक रहड घनश्याम झा रहड मनोज कुमार रहड के द्वारा विस्तार से योजना के लाभ सहित आवेदन की प्रक्रिया आदि की जानकारी दी गई। उक्त जानकारी डी आरसीसी प्रबंधक अखिलेश कुमार भारती ने दी।

संक्षिप्त खबरें

बाढ़ के पानी में चार बच्चों के डूबने से हुई मौत

बरियारपुर(मुंगेर)। बरियारपुर प्रखंड के अलग अलग स्थानों पर चार बच्चों के डुबकर मरने का समाचार प्राप्त हुआ हैं। बरियारपुर दक्षिणी पंचायत के साधु बाबा स्थान पर शिशम के पेड़ से छलांग लगाने के क्रम दो बालक करहरिया पश्चिमी पंचायत से एक बालक के डुबने से मौत हो गया वहीं पडिया पंचायत के वार्ड संख्या 2 के तीन वर्षीय बच्ची जो खाट से गिरने से मौत हो गया है इस आशय की जानकारी पुलिस निरीक्षक सह थाना अध्यक्ष बिरभद्र सिंह ने बताया। उन्होंने बताया कि यहां के महिलाओं के लापरवाही से ही आये दिन बच्चों के साथ यह हादसा देखने को मिल रही है।

सड़क दुर्घटना में घायल युवक को अस्पताल में पुलिस ने करवाया भर्ती

जमुई [झाझा] मंगलवार की देर शाम को धपरी मोड़ के समीप सड़क दुर्घटना में एक युवक घायल अवस्था में सड़क किनारे पड़ा हुआ। गश्ती कर रहे एसआई मुकेश सिंह के द्वारा घायल अवस्था में सड़क किनारे पड़े युवक को देखने के बाद तुरंत उसे अस्पताल से एंबुलेंस बुलवाकर इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाकर भर्ती करवाया। अस्पताल में डयूटी पर तैनात डॉक्टर सदाब अहमद के द्वारा घायल का इलाज किया गया। घायल की पहचान थानाक्षेत्र के बाराजोर गांव के रहने वाले 30 वर्षीय जहांगीर अंसारी के रूप में हुई है। घायल का इलाज डॉक्टर की देखरेख में अस्पताल में किया और पुलिस ने परिजनों को भी घायल युवक के संदर्भ में सूचना दिया।

3 अक्टूबर को राजा महाराज अग्रसेन की मनाई जाएगी जयंती

जमुई [झाझा] प्रत्येक वर्ष आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को अग्रवाल समाज के अग्रदूत, कूलप्रवर्तक अग्रोहा के राजा महाराज अग्रसेन की जयंती 3 अक्टूबर को अग्रवाल पंचायत समिति के द्वारा अग्रवाल पंचायत भवन में मनाई जाएगी। समिति के प्रवक्ता सह सामाजिक, सांस्कृतिक मंत्री संजय बंका ने बताया कि प्रत्येक वर्ष अग्रसेन जयंती मनाई जाएगी जिसमें महाराज अग्रसेन के तैल्यचित्र पर माल्यार्पण, पूजन, आरती व प्रसाद का भोग लगाया जाएगा साथ ही साथ स्थानीय समाज के साथ एक संगोष्ठी का भी कार्यक्रम निर्धारित है जिसमें समाज के उत्थान एवं अन्य बिंदुओ पर चर्चा कि जाएगी।

जेपी नड्डा अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी हरिमोहन सिंह को सम्मानित करेंगें

महिला खेल एवं दिव्यांग खेल को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं हरिमोहन सिंह

- पूर्व में भी बिहार के मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री ,खेलमंत्री , समाज कल्याण मंत्री आदि के हाथों सम्मानित हो चुके हैं

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। खेल व खिलाड़ी को बढ़ावा देने के लिए जनकल्याण शिव शक्ति हरिमोहन फाउंडेशन के फाउंडर सह अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी युवा समाजसेवी हरिमोहन सिंह को 28 सितंबर को पटना में बिहार कोच के तौर पर खेल के प्रति ईमानदारी से समर्पित होकर निस्वार्थ भाव से स्पोर्ट्स को पूरे प्रदेश में बढ़ावा देने के लिए सम्मानित किए जाएंगे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्रीय स्वास्थ एवं परिवार कल्याण मंत्री जे पी नड्डा बतौर मुख्य अतिथि शामिल होंगे एवं बतौर विशिष्ट अतिथि बिहार भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार सरकार के मंत्री डॉ दिलीप जायसवाल, बिहार सरकार के उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, विजय कुमार सिन्हा एवं खेल मंत्री सुरेंद्र मेहता शामिल होंगे एवं अन्य गणमान्य अतिथि शामिल होंगे ज्ञात हो कि हरिमोहन सिंह बरियारपुर प्रखंड के कल्याणपुर गांव के रहने वाले हैं एवं इससे पहले देश के विभिन्न राज्यों में आयोजित विभिन्न खेलों के नेशनल लेवल चैंपियनशिप में कोच , मैनेजर , टेकनिकल रेफरी , ऑफिशियल्स के रूप में भाग ले चुके हैं । दिव्यांग खेल एवं महिला खेल को बढ़ावा देने में लिए इन्होंने खासकर विशेष रूप से अपना योगदान दिया है । ये वर्तमान में कई सारे स्पोर्ट्स को बढ़ावा देने वाले अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के संगठन से जुड़कर (मुंगेर जिला खो- खो संघ , मुंगेर पैरा स्पोर्ट्स एसोसिएशन , बिहार डांस बैटल स्पोर्ट्स एसोसिएशन , मुंगेर योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन , मुंगेर पीडब्ल्यूडी संघ , स्पेशल ओलंपिक्स भारत बिहार , फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया बिहार सहित दर्जनों) खेल एवं खिलाड़ी को बढ़ावा देने के लिए कार्य कर रहे हैं।खेल- खिलाड़ी को राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने एवं सामाजिक कार्य के लिए हरिमोहन सिंह को बिहार के मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री, खेलमंत्री , समाज कल्याण मंत्री , विधि कानून मंत्री , स्वास्थ्य मंत्री , पथ निर्माण मंत्री आदि के हाथों सम्मानित कर चुके हैं।अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खुद भी स्पोर्ट्स में इंडिया के लिए गोल्ड मेडल जीत चुके हैं।युवाओं में इनकी लोकप्रियता को देखते हुए चुनाव आयोग द्वारा विधानसभा एवं लोकसभा में ब्रांड एंबेसडर भी बनाएं जा चुके हैं । हरिमोहन सिंह को चयनित होने पर मुंगेर जिला प्रशासन , मुंगेर जिला खो- खो संघ , मुंगेर योगासन सपोटस एसोसिएशन, जनकल्याण शिव शक्ति हरिमोहन फाउंडेशन, मुंगेर पीडब्ल्यूडी संघ , स्पेशल ओलंपिक्स भारत बिहार , फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया बिहार के वरीय पदाधिकारीगण ने शुभकामनाए दी ।

जिलाधिकारी ने डेंगू के रोकथाम के लिए किया बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई जिलाधिकारी श्रीमती अभिलाषा शर्मा की अध्यक्षता में बुधवार 24 सितम्बर को अपराह्न 4:30 बजे समाहरणालय स्थित अपने कार्यालय कक्ष में कार्यपालक पदाधिकारी नगर परिषद जमुई, झाझा तथा नगर पंचायत सिकंदरा के साथ डेंगू के रोकथाम के लिए बैठक आयोजित की गयी एवं आवश्यक निर्देश दिए गये । जिलाधिकारी श्रीमती शर्मा द्वारा डेंगू से रोकथाम हेतु सभी कार्यपालक पदाधिकारी को सुबह एवं शाम के समय फागिग करने एवं जहां-जहां पानी का जमाव है, वहां पर एंटी लार्वा का छिड़काव करने का निर्देश दिया गया । जिलाधिकारी श्रीमती शर्मा ने सिविल सर्जन जमुई को जहां-जहां डेंगू का मरीज पाया गया है, उनकी सूची सभी कार्यपालक पदाधिकारी को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया । सिविल सर्जन जमुई से प्राप्त सूची के अनुसार उन सभी जगह पर फागिंग करने का निर्देश सभी कार्यपालक पदाधिकारी को दिया गया । बैठक में सिविल सर्जन जमुई, कार्यपालक पदाधिकारी, नगर परिषद जमुई एवं झाझा तथा नगर पंचायत सिकंदरा उपस्थित रहे ।

हादसा का आमंत्रण दे रहा 66 वर्ष पहले बना सरकारी बस पड़ाव तारापुर, 1956 में बना था भवन

भवन का आधा से अधिक भाग पूरी तरह से टूट कर हो चुका है बर्बाद

- तारापुर सुल्तानगंज एस एच 22 सड़क के किनारे है बस पड़ाव यात्री सुविधाओं का है घोर अभाव

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर सुल्तानगंज एस एच-22 मुख्य सड़क पर तारापुर में लगभग 65 वर्ष पहले बिहार राज्य पथ परिवहन विभाग द्वारा बनाए गए जर्जर बस पड़ाव भवन हर रोज बड़ा हादसा का आमंत्रण दे रहा है। गौरतलब है कि 1956 में संयुक्त बिहार झारखंड के समय उस वक्त इस बस पड़ाव का निर्माण हुआ था । पूर्व में इस बस पड़ाव से तारापुर से बोकारो , गया, धनबाद ,हजारीबाग , दुमका , देवघर, एवं भागलपुर से रांची, भाया तारापुर सहित पूर्णिया, मुंगेर ,के लिए सरकारी बसें चला करती थी। जहां आज यात्रियों को तारापुर से मुंगेर को छोड़कर लंबी दूरी के लिए एक जगह से दूसरी जगह आवागमन के लिए एक भी सरकारी बसें नहीं है । आज जर्जर ईट दीवाल से सीमेंट पूरी तरह से गिरकर बर्बाद होकर रह गया है।

दीवाल के ऊपर अल्बेस्टर भी पूरी तरह से कई जगहों पर टूट कर बर्बाद हो चुका है । बस पड़ाव के पिछले हिस्से में लगभग 2 एकड़ से अधिक खाली पड़ी जमीन भी लोगों द्वारा अतिक्रमण किया जा रहा है । खासकर बरसात के समय में इस बस पड़ाव पर सर छुपाना भी यात्रियों के लिए मुश्किल भरा साबित होता है।

सरकारी खजाने में यात्रियों से किराया वसूल कर सबसे अधिक रुपया जमा करने वाला इस बस पड़ाव पर यात्री सुविधाओं के नाम पर शौचालय पानी बिजली पंखा एवं बैठने के लिए बेहतर व्यवस्था तक नदारद है । इधर तारापुर शांति समिति के वरिष्ठ सदस्य सह लोजपा के राष्ट्रीय सचिव मिथिलेश कुमार सिंह ने बताया कि इस सरकारी बस पड़ाव को डिपो का रूप देना था जो नहीं मिला । कई बार परिवहन विभाग को पत्राचार के माध्यम से नए भवन निर्माण कराने की मांग को भी क्षेत्र के लोगों द्वारा सामूहिक रूप से रखा जा चुका है, लेकिन आज तक निर्माण की बात तो दूर गई जर्जर भवन की मरम्मति कराना भी मुनासिब नहीं समझा गया । श्री सिंह ने बिहार राज्य पथ परिवहन निगम के डिविजनल मैनेजर के साथ-साथ सांसद अरुण भारती से बस पड़ाव के नए भवन निर्माण कराने को लेकर पहल करने की मांग किया है । जिससे क्षेत्रवासियों को एक जगह से दूसरे जगहों के लिए आने जाने में यात्रियों को बेहतर सुविधा मिल सके ।

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जीवित्पुत्रिका व्रत

संग्रामपुर (मुंगेर)। संतान की लंबी आयु, सुख-समृद्धि और स्वास्थ्य के लिए माताओं द्वारा रखें जाने वाले जीवित्पुत्रिका व्रत प्रखंड क्षेत्र में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाए जाने वाले इस व्रत में महिलाएं निर्जला उपवास रख अपने पुत्र-पुत्रियों के दीघार्यु और कल्याण की कामना की। इस वर्ष जितिया का पर्व प्रखंड क्षेत्र में कहीं मंगलवार तो कहीं बुधवार को मनाया गया। मंगलवार को उपवास रखने वाली व्रतियों ने बुधवार को शाम में पारण किया तो वहीं बुधवार को उपवास रखने वाले व्रतियों ने गुरुवार की सुबह पारण किया। व्रत के एक दिन पूर्व महिलाओं ने गंगा स्नान कर अपने व्रत का समापन किया। व्रत उपवास के एक दिन पूर्व व्रतियों ने गंगा स्नान कर नहाय खाय से व्रत का शुरूआत किया। अगले दिन विभिन्न प्रकार के फलों फूलों से डलिया भरकर व्रत को रखा। जितिया पर्व को लेकर बाजारों में पूजन सामग्री सहित फल-फूल सहित मिठाइयों के दुकानों पर लोगों की अच्छी खासी भीड़ देखी गई।

एनएसएस डे के शुभ अवसर पर छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर (कोर्ट)। 24 सितंबर मंगलवार को आरएस कॉलेज तारापुर में एनएसएस डे के शुभ अवसर पर छात्रों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।इसकी अध्यक्षता आर एस कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर यूएस दास के द्वारा किया गया।इस मौके पर उन्होंने दीप प्रज्वलित करके इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया । मंच संचालन प्रोफेसर नीरज कुमार के द्वारा किया गया। इस मौके पर एनएसएस के पूर्वक्तिछात्र के द्वारा गुलदस्ता देखकर सभी प्रोफेसर को सम्मानित किया गया एवं कॉलेज की प्राचार्य को भी सम्मानित किया गया।इस अवसर पर बच्चों के द्वारा नित्य भाषण एवं संगीत का प्रदर्शन किया सोनाली कुमारी एवं साजन कुमार के द्वारा बहुत ही शानदार नित्य का परफॉर्मेंस रहा भाषण में श्रेया भारती सेजल कुमारी ने अपनी बात रखी संगीत में रामकुमार पंडित के द्वारा गाया गया गजल वक्त का यह परिंदा रुका है कहां दर्शकों का मन मोह लिया एनएसएस के पूर्व आइकॉन मोहम्मद अखलाक उद्दीन ने कहा कि बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ समाज की भी सेवा करनी चाहिए एनएसएस के कार्यक्रम पदाधिकारी प्रोफेसर नीरज कुमार ने कहा कि जब हमारा समाज विकसित होगा तभी हमारा देश भी विकसित होगा कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर यूएस दास ने कहा कि हम सभी की जिम्मेदारी है पिछड़े हुए समाज मैं जाकर जागरूकता फैलाना चाहे शिक्षा के क्षेत्र में हो चाहे कोई बीमारी के बारे में या सामाजिक कार्य के बारे और उन्होंने कहा कि छात्र एवं छात्राओं को ज्यादा से ज्यादा एन एस एस में जुड़कर समाज के लिए कार्य करना चाहिए इस मौके पर एन एस एस के पूर्वक्ति छात्र एवं छात्राओं को तीन वर्षीय सर्टिफिकेट मेडल देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर मौजूद प्रोफेसर अर्चना कुमारी प्रोफेसर पूर्णिमा गुप्ता प्रोफेसर जसीम राजा प्रोफेसर संतोष कुमार उसके अलावा छात्र एवं छात्राएं सूरज कुमार अंकित कुमार अनिकेत कुमार राहत परवीन कायनात खातून राबिया खातून मिलेनियम क्वीन साक्षी कुमारी नेहा कुमारी स्नेहा कुमारी नीतू कुमारी संगम कुमारी इत्यादि मौजूद थे।

गिद्धौर दुर्गा मंदिर के सामने पुल पर बारिश का पानी भरा,कभी भी हो सकती है दुर्घटना

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर।प्रखंड मुख्यालय में भले ही सड़क का निर्माण हुआ हो लेकिन गिद्धौर में प्रवेश करने से पहले गड्ढों व उखड़े पुल से राहगीरों को सामना करना होगा। इस जर्जर पुल की मरम्मत के नाम पर भले ही खानापूर्ति जिम्मेदार विभाग द्वारा की गई हो। लेकिन वर्तमान में पुल की जो स्थिति है,उससे कभी भी बड़ी सड़क दुर्घटना हो सकती है।दो दिन से हो रही बारिश से पुल पर पानी भर गया।

बीती रात हुई बारिश से पुल पर पानी भर हुआ है। इसका प्रमुख कारण पुल पर बनाए गए छोटे-छोटे छेद कीचड़ व मिट्टी से बंद हो गए हैं, जिसके कारण पानी भर गया है। वहीं जिम्मेदार विभाग व प्रशासन के आला अधिकारी के अलावे जनप्रतिनिधि भी इस मार्ग से होकर गुजरते हैं लेकिन उन्हें पुल की यह दुर्दशा दिखाई नहीं देती और न ही कोई इस पुल की मरम्मत कराने पर ध्यान दे रहा है।अधिकारियों की लापरवाही के कारण ही पुल की स्थिति बेहाल है।अगर पुल की नए सिरे से पूरी मरम्मत करवा दी जाए तो राहगीरों को भी काफी राहत मिलेगी। साथ है जिस प्रकार से बिहार में लगातार पुल गिरने की घटना सामने आ रही है इसका मुख्य कारण पुल का सही रखरखाव भी है। सरकार के द्वारा सही रखरखाव नहीं होने के कारण पानी के जमाव से पुल धीरे-धीरे क्षतिग्रस्त होते चली जाती है। विभाग को है घटना का इंतजार वहीं जिम्मेदार विभाग को इस पुल पर किसी बड़ी घटना का इंतजार है, जिसके बाद ही इस पुल की मरम्मती की जाएगी। पुल की मरम्मती करने में आखिर क्यों शासन व प्रशासन ढिलाई बरत रही हैं,यह समझ से परे है।वही पुल पे जगह-जगह गड्ढे किसी खतरे से कम नहीं।

इस पुल पर कांक्रीट उखडने.से पुल पर कुछ-कुछ जगहों पर गड्ढे भी हो चुके हैं।अब तो राहगीर भी कह रहे हैं कि इस पुल की मरम्मती एक बार कराएं लेकिन अच्छे से कराएं। पुल टिकाऊ और लोगों को आने-जाने में परेशानी सामना नहीं करनी पड़े।

जामुखरैया पंचायत में उपमुखिया पद के लिए निर्विरोध चुनी गई कंचन देवी

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] उपमुखिया के बीते दो दिनों से हो रहे उपचुनाव के तीसरे और आखिरी दिन प्रखंड क्षेत्र के जामुखरैया पंचायत के लिए उपमुखिया का उपचुनाव शांतिपूर्ण माहौल में प्रखंड कार्यालय के सभागार में संपन्न किया गया। चुनाव की प्रक्रिया बीडीओ सह निवार्ची पदाधिकारी रविजी की अगुवाई में किया गया। गुरूवार को जामुखरैया पंचायत के उपमुखिया के लिए उपचुनाव के लिए एकमात्र महिला उम्मीदवार कंचन देवी ने नामांकन पत्र भरा। अन्य कोई उम्मीदवार के द्वारा उपमुखिया पद के लिए नामांकन पत्र नही भरने से कंचन देवी को निर्विरोध चुनाव में जीत मिली। निवार्ची पदाधिकारी ने बताया कि उपचुनाव में 15 मे से चार वार्ड सदस्य अनुपस्थित रहे और उपस्थित 11 वार्ड सदस्य के बीच ही उपचुनाव की प्रक्रिया पूरी कि गई। उपचुनाव शांतिपूर्ण रूप से हो इसको लेकर पुलिस पदाधिकारी भी दलबल के साथ प्रखंड कार्यालय में मौजूद रहे। निर्विरोध जीत हासिल कर उपमुखिया को निवार्ची पदाधिकारी के द्वारा शपथ दिलवाया गया।

पूरी तरह से जर्जर हुआ तारापुर खड़गपुर पीडब्ल्यूडी मुख्य सड़क

पिछले कई महीनों पूर्व वाहनों की चपेट में आने से कई लोगों ने गंवाई है अपनी जान

- हर रोज बड़ी दुर्घटना का दे रहा आमंत्रण
- लगभग 6 वर्ष पहले हुआ है सड़क मरम्मती का काम

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर (मुंगेर)। तारापुर असरगंज एवं संग्रामपुर क्षेत्र निवासियों के लिए जिला मुख्यालय मुंगेर जाने वाली सबसे अति महत्वपूर्ण माने जाने वाले तारापुर खड़गपुर पीडब्ल्यूडी सड़क पर 24 घंटे बालू से लदी भारी वाहनों के चलने से यह सड़क जगह-जगह दबकर पूरी तरह से ठेहुने भर गड्ढे में तब्दील हो गया । गौरतलब है कि घोरघट पुल निर्माण होने के बाद भी जमुई लक्ष्मीपुर खड़गपुर के रास्ते इसी सड़क मार्ग में छोटी-बड़ी हर तरह की भारी वाहनों के साथ साथ ओवरलोड बालू लदी गाड़ियों के दबाव के कारण इन दिनों यह सड़क बरसात के मौसम में पूरी तरह से टूट कर बर्बाद हो चुका है । इस सड़क मार्ग में पिछले 12 वर्षों के दौरान छोटी बड़ी वाहनों का परिचालन काफी बढ़ा है। जमुई,एवं नवादा से ट्रक में बालू लादकर इसी सड़क मार्ग से तारापुर के रास्ते उत्तर बिहार के विभिन्न जिलों के लिए रातों दिन गाड़ियां निकलती रहती है। जिसके दबाव के कारण सड़क कई जगहों पर दबकर - धसकर बर्बाद हो चुका है। पिछले दो महीनों से शाम 7:00 बजे के बाद इस सड़क के रास्ते छोटी बड़ी सवारी गाड़ी, मोटरसाइकिल, का भी पार करना लोगों के लिए मुसीबत भरा साबित हो रहा है । देर - सवेर एवं सुरक्षा के दृष्टिकोण से संग्रामपुर असरगंज प्रखंड क्षेत्र के लोगों के लिए भी जिला मुख्यालय आने जाने के लिए यह सड़क वर्षों से प्रमुख सड़क के रूप में सुरक्षित माना जाता रहा है। राजा रानी तालाब , रविदासटोला परसा ,महपुर से लेकर बेलहरनी नदी के बीच कई जगहों पर यह सड़क पूरी तरह से टूटकर गड्ढे में तब्दील हो चुका है । इतना ही नहीं साल भर पहले इसी सड़क मार्ग के रास्ते पटना के लिए भ रात्रि में बड़ी-बड़ी वातानुकूलित बसें भी चलती है। जो इन दिनों सड़क खराब होने के कारण परिचालन बंद है। सड़क खराब रहने के कारण इन दिनों इस सड़क मार्ग में बड़ी सावधानी के साथ आस-पड़ोस के लोगों को अपने अपने कार्यों के लिए तारापुर एवं खड़गपुर आना जाना पड़ता है। भारी वाहनों के हमेशा चलते रहने के कारण इस मार्ग में सड़क दुर्घटना की आशंका हमेशा बना रहता है। इस सड़क मार्ग से सटे कई गांवों के प्रबुद्ध जनों द्वारा अब लगातार सड़क मरम्मती की मांग उठाए जा रहे हैं। जनसुराग के युवा जिला अध्यक्ष समीर मधुकर ने बताया कि लगभग 06 वर्ष पहले इस सड़क की मरम्मती का काम कराया गया था । इधर तारापुर खड़गपुर पीडब्ल्यूडी पथ प्रमंडल कार्यालय तारापुर के सूत्रों के अनुसार बताया जा रहा है कि सड़क मरम्मती, कालीकरण, एवं चौड़ीकरण को लेकर बनाए गए प्राक्कलन की सहमति स्वीकृति के बाद सड़क मरम्मती का कम शुरू नहीं हुआ है । यह सड़क जब तक सड़क चौड़ी होती नहीं है इसका लाभ क्षेत्रवासियों को नहीं मिलेगा ।

दुर्गा पूजा को लेकर चंद्रदीप थाने मे शांति समिति की बैठक, डीजे पर पूर्ण प्रतिबंध

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंजः- चंद्रदीप थाना परिसर में बुधवार 25 सितम्बर को दुर्गा पूजा शांतिपूर्वक संपन्न कराने को लेकर शांति समिति की बैठक थानाध्यक्ष राजेंद्र साह की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में प्रखंड विकास पदाधिकारी अभिषेक भारती ,अंचलाधिकारी रंजन कुमार दिवाकर सहित कई जनप्रतिनिधियों,समाजसेवी एवं दुर्गा पूजा समिति के अध्यक्ष ने भाग लिया। इस दौरान बीडीओ एवं अंचलधिकारी ने बैठक में उपस्थित सभी पूजा समिति एवं समाजसेवी को शांति पूर्वक दुर्गा पूजा समारोह आयोजित करने का निर्देश दिया गया। उपस्थित प्रत्येक पूजा समिति के अध्यक्षों ने अपनी अपनी समस्याओं से पदाधिकारियों को अवगत कराया, बैठक में सर्व प्रथम प्रखंड के उन गावों को चिन्हित किया गया जहां दशहरा के मौके पर मूर्ति की स्थापना वा मेले का आयोजन किया जाता है, जहाँ श्रद्धालुओं की काफी भीड़ होती है,और उसपर विचार विमर्श किया गया, वहीं प्रखंड विकास पदाधिकारी अभिषेक भारती ने बताया की दुर्गा पूजा आपसी भाईचारे के साथ मनाने का त्योहार है। प्रेम पूर्वक शांति ढंग से पूजा में शामिल होकर परिवार समाज और राज्य की सलामति के लिये दुआएं करें।,वहीं प्रखंड विकास पदाधिकारी ने सभी पूजा समिती से कलश स्थापना,मूर्ति स्थापना, मेला एवं मूर्ति विसर्जन की तिथि समय एवं रूट चार्ट की जानकारी लेते हुऐ कहा की पूजा स्थल पर पंडाल व

भीड़ भाड़ वाले स्थान पर श्रद्धालूओं के आने जाने के लिए उचित व्यवस्था हो, महिला एवं पुरुष के लिए व्यवस्था अलग हो,श्रद्धालूओं की उचित व्यवस्था पर जोर बिजली, स्वास्थ्य, पानी, साफ सफाई यातायात नियंत्रण व सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम हो,पूजा कमिटी के सदस्य एवं वोलेन्टेयर हमेसा श्रद्धालुओं की सेवा प्रदान करे,कोई भी समस्या हो तुरंत जानकारी प्रसाशन को दे,उन्होंने अलीगंज बाजार मे जाम की समस्या पे चर्चा करते हुऐ समाधान की बात कही,वहीं अंचलधिकारीं रंजन कुमार दिवाकर ने सभी को सम्बोधित करते हु कहा की दुर्गा पूजा एक महत्व त्योहार है जिसमे सच्चे मन से श्रद्धालू माता की भगति मे विलीन होकर पूजा अर्चना करते है, सभी लोगो की मिलजुलकर शांति से त्योहार मनाये,पूजा स्थलों पर मनचलों पर नजर रखे के लिए पंडालों में सीसीटीवी कैमरा,अग्निसामक,बिजली व्यवस्था दुरुस्त एवं भीड़ भाड़ पर नजर रखने और पर्याप्त व्यवस्था करने पर जोर दिया,कोई भी अपिर्य घटना हो इसकी सूचना पुलिस को तुरंत दे,साथ ही उन्होंने कहा की डीजे एवं आर्केस्टा पर प्रतिबंध है,उन्हों ने कहा की पंडाल में किसी प्रकार का तीव्र ध्वनि बजाने पर पूर्णतः प्रतिबंध रहेगा। दुर्गा पूजा में भीड़-भाड़ वाली जगहों पर पुलिस बल की भी तैनाती की जाएगी।मेला के दौरान ड्रोन कैमरा से निगरानी की जाएगी,थानाध्यक्ष राजेंद्र साह ने कहा कि किसी भी हाल में दुर्गा पूजा के मौके पर हुड़दंग करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। दुर्गा पूजा में भीड़-भाड़ वाले जगहों पर पुलिस बल की भी तैनाती की जाएगी। पूजा समिति को भी इस बात का ख्याल रखना होगा कि पूजा पंडाल में किसी प्रकार का भगदड़ न हो एवं सरकार द्वारा जारी किए गए गाइडलाइन के अनुसार ही पूजा होगी। सभी दुर्गा पूजा समिति दुगार्पूजा का अनुज्ञप्ति लेना अनिवार्य है, असमाजिक तत्वों पर पुलिस की पैनी नजर रहेगी,मेले के दौरान जगह जगह पर पर्याप्त मात्रा में फोर्स मैजिस्टेट एवं चौकीदार की तैनाती रहेगी,कोई भी घटना हो तुरंत जानकारी दे,

मौके पर मुखिया प्रतिनिधि शमसाद आलम,मुखिया जनार्दन यादव ,मुखिया प्रतिनिधि सोनू सिंह, पुजासमिति अध्यक्ष मनोज मेहता, सोनू कुमार,रुद्रनारायण सिंह,रामबालक सिंह,रमाकांत सिंह,राणा राम नरेश सिंह,मो शमीम मल्लिक,मोङ्ग आदिल,गोपाल सिंह,रोहित, दीपक, संजय कुमार,सहित सभी पुजासमिति सदस्य एवं समाजसेवी,बुद्धिजीवी एवं प्रतिनिधि उपस्थित थे।

गोलीबारी की घटना को लेकर दोनों पक्षों के एक-एक व्यक्ति गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)।थाना क्षेत्र अंतर्गत पृथ्वी चक गांव में रविवार को पूर्व के विवाद को लेकर हुई गोलीबारी की घटना में शामिल दोनों पक्ष के एक-एक व्यक्ति को संग्रामपुर पुलिस ने सोमवार की रात गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में मुंगेर भेज दिया। गिरफ्तार व्यक्ति पृथ्वी चक गांव निवासी संजीव कुमार और चंद्रगुप्त हर्षवर्धन उर्फ छोटू हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार की संध्या पूर्व के विवाद को लेकर पृथ्वी चक गांव में गोलीबारी की घटना को अंजाम दिया गया था इस घटना में पृथ्वी चक निवासी रोशन कुमार उम्र 14 वर्ष पिता निरंजन यादव वहीं दूसरा अभिषेक कुमार उम्र 17 वर्ष पिता छबील यादव हवेली खड़गपुर का रहने वाला है जो अपने मौसी के यहां सावन होटल में मदद करने आया हुआ था। इस घटना में दोनों के पैर में गोली लगी हुई थी। इस मामला को लेकर दोनों पक्षों के द्वारा संग्रामपुर थाना में आवेदन देकर प्राथमिकी दर्ज करवाई गई थी दिए गए आवेदन के आधार पर पुलिस ने घटना की जांच के पश्चात दोनों पक्षों के एक-एक लोगों को गिरफ्तार कर मंगलवार को न्यायिक हिरासत में मुंगेर भेज दिया। संग्रामपुर थाना एस आई सत्यम कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि पृथ्वी चक गांव के पोरस यादव और अशोक यादव के बीच पूर्व से विवाद था रविवार को पूर्व के मामले को लेकर दोनों में बहस हुई बहस होते-होते दोनों ओर से गोलीबारी होने लगी जिसमें दो लोग घायल हो गए दोनों पक्ष से आवेदन प्राप्त हुआ है आवेदन के आलोक पर कार्यवाही करते हुए दोनों पक्ष के एक-एक लोगों को गिरफ्तार किया गया है पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

रेलवे कॉलोनी में स्वच्छता कर्मी सीटी बजाकर रेलकर्मियों के घरों से उठाएगा कचरा

- स्वच्छता को लेकर सीएचआई की अगुवाई में डोर टू डोर चला जागरूकता कार्यक्रम

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक चलाए जा रहे स्वच्छता ही सेवा 2024 कार्यक्रम को लेकर रेलवे के वरीय पदाधिकारी के आदेशानुसार स्थानीय रेलवे विभाग स्वास्थ्य निरीक्षक कार्यालय की ओर से रेलवे कॉलोनी में अभियान चलाया गया। इस दौरान सीएचआई गिरीश कुमार सिंह के द्वारा रेलवे कॉलोनी में लोगों के बीच जागरूकता चलाते हुए डोर टू डोर पहुंचकर रेलकर्मी और उसके परिजनों को स्वच्छता कितना आवश्यक है इसकी विस्तृत जानकारी दिया और बताया कि आप स्वयं जागरूक हो अन्य लोगों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक करे जिससे स्वच्छता मिशन पूरी तरह से सफल हो। सीएचआई ने रेलवे कॉलौनी में रहने वाले लोगों से कहा कि अगर आपके यहां कचरा है तो उसे इधर उधर न फेंक बल्कि एक जगह एकत्रित कर रखे और स्वच्छताकर्मी आए तो उसे दे दे। सीएचआई ने बताया कि रेलवे के वरीय पदाधिकारी के आदेशानुसार स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए डोर टू डोर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इसके लिए दो ट्रॉली भी मुहैया हुआ जिसमें स्वच्छताकर्मी रेलवे कॉलौनी में घूमघूम कर सीटी बजाऐगे और रेलकर्मियों के घर से कचरा का उठाव करेगे।

फूट और झूठ के सहारे वैतरणी पार करने के कुत्सित प्रयास

आगामी 5 अक्टूबर को होने जा रहे हरियाणा विधानसभा चुनावों की सरगर्मियां अपने चरम पर हैं। भारतीय जनता पार्टी तीसरी बार राज्य में सत्ता में वापसी के लिये जोर आजमाइश कर रही है जबकि कांग्रेस पार्टी दस वर्षों के बाद सत्ता में वापसी की उम्मीद लगाये बैठी है। गौरतलब है कि 2019 के विधानसभा चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी बहुमत के लिये जरूरी 46 सीटें हासिल करने से 6 सीट पीछे रह गयी थी और उसे केवल 40 सीटें ही हासिल हुई थीं। उस समय कांग्रेस ने 31 सीटें जीत कर मजबूत विपक्ष के रूप में अपना किरदार अदा किया था। जबकि राज्य में 10 सीटें जीतने वाली जननायक जनता पार्टी ने भाजपा के साथ मिलकर भाजपा-जजपा की गठबंधन सरकार बनाई थी। इसके बदले में जजपा को उपमुख्यमंत्री सहित कुल 2 मंत्री पद मिला था। परन्तु मार्च 2024 में जजपा ने भाजपा से नाता तोड़ लिया। खबर तो यह आई कि जजपा 2024 के लोकसभा चुनावों में हरियाणा की 10 में से 2 सीट पर अपनी दावेदारी जता रही थी जिसके लिये भाजपा तैयार नहीं हुई। परन्तु राजनैतिक हल्कों में चर्चा यह थी कि जजपा ने किसान आंदोलन के बाद उपजे सत्ता विरोधी हालत के मद्देनजर जजपा ने भाजपा से अपना नाता तोड़ा था। इस बार कांग्रेस व भाजपा के अतिरिक्त पिछली बार की सत्ता की भागीदार जजपा सहित और भी कई क्षेत्रीय दल चुनाव मैदान में हैं। इनमें कुछ दल ऐसे हैं जो अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये चुनाव मैदान में हैं तो कुछ हरियाणा की जनता से अपना परिचय कराने के लिये यानी राज्य की राजनीति में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने मात्र के लिये चुनाव लड़ रहे हैं। जबकि 90 सीटों की विधानसभा में कांग्रेस ने एक सीट अपने [illegible] गठबंधन सहयोगी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के लिये छोड़कर शेष सभी 89 सीटों पर अकेले ही चुनाव लड़ने का फैसला किया है। [illegible] गठबंधन की सहयोगी आम आदमी पार्टी से कांग्रेस की सीटों के बंटवारे को लेकर पैदा हुई असहमति के बाद आप ने अकेले ही चुनाव लड़ने का फैसला किया है। 2019 के चुनावों में आप ने राज्य की 46 सीटों पर चुनाव लड़ा था परन्तु एक भी सीट जीत नहीं सकी थी। परन्तु इस बार उसने सभी 90 सीटों पर अपने प्रत्याशी मैदान में उतार दिये हैं। गौरतलब है कि 2019 के हरियाणा विधानसभा चुनाव में आप को ठ0ठ से भी कम वोट हासिल हुये थे। इसके बावजूद 90 सीटों पर पार्टी द्वारा अपने प्रत्याशी खड़े करने का अर्थ राज्य की जनता, आम आदमी पार्टी द्वारा सीटें जीतना नहीं बल्कि भारतीय जनता पार्टी की अप्रत्यक्ष रूप से मदद करना जरूर लगा रहा है। अभी तक हरियाणा को लेकर चुनाव पूर्व जो भी सर्वेक्षण सामने आ रहे हैं लगभग उन सभी में भाजपा की सत्ता की विदाई और कांग्रेस की वापसी की संभावना जताई जा रही है। चुनाव प्रचार के दौरान राज्य के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से लेकर अन्य कई मजबूत से मजबूत भाजपा प्रत्याशियों तक को भी जिस तरह किसानों, ग्रामीणों व आम जनता का विरोध सहना पड़ रहा है उसे देखकर भाजपाइयों के पैरों तले से जमीन खिसक रही है। इसलिये टिकट वितरण से पूर्व से ही भाजपा व इससे जुड़ा आइ टी सेल, [illegible] गोदी मीडिया व वॉट्सऐप एवं सोशल मीडिया के अन्य प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से कांग्रेस के बारे में झूठ फैलाने में अपनी पूरी ताकत झोंक रही है। जिस समय कांग्रेस में पार्टी की भीतरी खींचातानी के कारण टिकट वितरण में देर की थी उस समय इसी [illegible] सत्ताधारी नेटवर्क द्वारा एक अफवाह यह फैलाई गयी कि राहुल गाँधी से नाराज होकर भूपेंद्र हुडा व दीपेंद्र हुडा दिल्ली में कांग्रेस की टिकट सम्बन्धी एक मीटिंग से उठकर बाहर आ गये। चंद घंटों में ही इसी तंत्र ने अपने इसी झूठ का [illegible] तैयार किया कि [illegible] कांग्रेस छोड़कर अपनी पार्टी खड़ी करने जा रहे हैं। बाद में जब इन्हें पता चला कि हुड्डा 89 में से 72 सीटों पर अपने उम्मीदवारों को टिकट दिलाने में सफल रहे तो हुड्डा से नया राजनैतिक दल बनाने की झूठी आस लगाये बैठा यह झूठा प्रचार तंत्र बगलें झाँकने लगा। इसके बाद एक शर्मनाक वीडीओ सामने आया जिसमें कोई बुजुर्ग ग्रामीण व्यक्ति पूर्व केंद्रीय मंत्री कुमारी शैलजा के लिये अपमानजनक शब्दों का प्रयोग कर रहा है। इस विषय को लेकर भी भाजपा का यही तंत्र पूरी तरह सक्रिय हो उठा और इसी वीडियो को वायरल क्र डाला। गोया शैलजा के अपमान से गोया उनकी लाटरी खुल गयी हो। कांग्रेस को दलित विरोधी प्रचारित किया जाने लगा और उत्साहित भाजपाइयों द्वारा शैलजा को भाजपा में आने का न्यौता भी दिया जाने लगा। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर एक भाजपा प्रत्याशी की चुनाव सभा में शैलजा के प्रति न केवल हमदर्दी जताते नजर आये बल्कि उन्हें भाजपा में शामिल होने का सार्वजनिक मंच से न्यौता भी दे डाला। इसका कारण यही था कि हुड्डा के मुकाबले शैलजा समर्थक प्रत्याशियों को टिकट कम मिला।

सरंक्षित हों तीर्थस्थल की हिन्दू वंशावलियों की पंजिका

ये पंडे जनपद के हसाब से हैं। तीर्थ स्थल में पहने वालों को पता है कि किस जनपद के पंडा कौन हैं। किसी दूसरे के यजमान को कोई अन्य पंडा खुद क्रिया- कर्म नही कराता। संबधित जिले के पंडा के पास उसे भेज देता है। शताब्दियों से हो रहा ये लेखन भोज पत्रों और ताम्र पत्रों के बाद अब कागज की बहियों पर शुरू किया गया। तीर्थ पुरोहितों के पास सैकड़ों वर्ष पुरानी बहियां आज भी सुरशित हैं। तीर्थ पुरोहितों की बहियों में देश भर के राजाओं, महाराजाओं, साधु, संतों, राजनेताओं एवं आम लोगों के परिवारों के वंश लेखन बहियों में मौजूद हैं।

-अशोक मधुप-
लेखक वरिष्ठ पत्रकार

हिंदू तीर्थस्थल धार्मिक मान्यताओं और पूजन अर्चन के लिए विख्यात है। इन सब कार्य को इन स्थलों के ब्राह्मण पंडित कराते हैं। ये ब्राह्मण पंडित पंडा कहे जाते हैं। ये पंडा सदियों से एक कार्य करते और कराते आ रहे हैं। ये पंडा अपने पास आने वाले यजमान(भक्तों)के परिवार का इतिहास अपनी बहियों में संजोते जा रहें हैं। ये काम सदियों से अनवरत रूप से जारी है। ये हिन्दू वंशावलियों की पंजिकाएं एतिहासिक धरोहर हैं। आज इनके संरक्षण की आवश्यक्ता है। इनके संजोकर रखने की जरूरत है। हिंदू परिवारों को इस बारे में बहुत कम यान के बराबर जानकारी है। उन्हें पता भी नही कि इन स्थानों पर उनके परिवार का इतिहास संग्रहित है। सदियों से बहियों में ये रिकार्ड व्यापारी के खाते की तरह लिखकर रखा जा रहा है। अधिकतर भारतीयों व वे परिवार जो विदेश में बस गए उनको आज भी पता नहीं कि इन तीर्थस्थल की पंडो की बहियों में उनके परिवार की वंशावली दर्ज है। हिन्दू परिवारों की पिछली कई पीढ़ियों की विस्तृत वंशावलियां इन पंडा के पास संग्रहित हैं। ये पंडा आने वाले यजमान से उसके परिवार की जानकारी नोट करने के बाद उसके हस्ताक्षर कराकर बही में अपने पास रखते हैं। ये पंडा ये बहियां अपनी आने वाली अपनी पीढ़ी को सौंपते जाते हैं। ये बहियां जिलों व गांवों के आधार पर वगीर्कृत की गयीं हैं। प्रत्येक जिले की पंजिका का विशिष्ट पंडित होता है। यहाँ तक कि भारत के विभाजन के उपरांत जो जिले व गाँव पाकिस्तान में रह गए व हिन्दू भारत आ गए उनकी भी वंशावलियां यहाँ हैं। कई स्थितियों में उन हिन्दुओं के वंशज अब सिख हैं, तो कई के मुस्लिम अपितु ईसाई भी हैं। किसी - किसी की सात वंश या उससे भी ज्यादा की जानकारी पंडों के पास रखी इन वंशावली पंजिकाओं से होना साधारण सी बात है। शताब्दियों पूर्व से हिन्दू पूर्वजों ने हरिद्वार या किसी पावन नगरी की यात्रा की1 तीर्थयात्रा के लिए या/ शव- दाह या स्वजनों के अस्थि व राख का गंगा जल में किया होगा तो वे संबद्ध पंडा के पास गए होंगे। ये पंडा इन आने वालों के रहने खाने तक की वयवस्था करते हैं1 इन पंडाओं ने अपनी पंजिका में वंश- वृक्ष को संयुक्त परिवारों में हुए सभी विवाहों, जन्म व मृत्युओं के विवरण दर्ज किया हुआ हैं। वर्तमान में धार्मिक स्थल पर जाने वाले भारतीय हक्के- बक्के रह जाते हैं जब वहां के पंडित उनसे उनके अपने वंश- वृक्ष को नवीनीकृत कराने को कहते हैं। आजकल जब संयुक्त हिदू परिवार का चलन खत्म हो गया है। लोग एकल परिवारों को तरजीह दे रहे हैं, ये पंडित चाहते हैं कि आगंतुक अपने फैले परिवारों के लोगों व अपने पुराने जिलों- गाँवों, दादा- दादी के नाम व परदादा- परदादी और विवाहों, जन्मों और मृत्यु, परिवारों में हुए विवाह आदि की पूरी जानकारी के साथ वहां आएं। आगंतुक परिवार के सदस्य को सभी जानकारी नवीनीकृत करने के उपरांत वंशावली पंजीका को भविष्य के पारिवारिक सदस्यों के लिए व प्रविष्टियों को प्रमाणित करने के लिए हस्ताक्षरित करना होता है। साथ आये मित्रों व अन्य पारिवारिक सदस्यों से भी साक्षी के तौर पर हस्ताक्षर करने की विनती की जा सकती है। इन तीर्थ स्थल के पुरोहितों के पास देश और दुनिया भर के यजमानों का दशकों पुराना लिखित रिकॉर्ड वंशावली के रूप में मौजूद है। किसी यजमान के आने पर चंद मिनटों में ही संबंधित पुरोहित कंप्यूटर से भी तेज गति से वंशावली देखकर उनके पूर्वजों की जानकारी दे देते हैं। पितृ पक्ष के दौरान इन तीर्थ स्थल पर आने वाले लोग अपने तीर्थ पुरोहितों के पास आकर वंशावली में अपने वंश के बारे में जरूर जानते हैं। ये पंडे जनपद के हसाब से हैं। तीर्थ स्थल में पहने वालों को पता है कि किस जनपद के पंडा कौन हैं। किसी दूसरे के यजमान को कोई अन्य पंडा खुद क्रिया- कर्म नही कराता। संबधित जिले के पंडा के पास उसे भेज देता है। शताब्दियों से हो रहा ये लेखन भोज पत्रों और ताम्र पत्रों के बाद अब कागज की बहियों पर शुरू किया गया। तीर्थ पुरोहितों के पास सैकड़ों वर्ष पुरानी बहियां आज भी सुरक्षित हैं। तीर्थ पुरोहितों की बहियों में देश भर के राजाओं, महाराजाओं, साधु, संतों, राजनेताओं एवं आम लोगों के परिवारों के वंश लेखन बहियों में मौजूद हैं। अकेले हरिद्वार में 30 हजार से अधिक की संख्या में वंशावली की बहियां सुरक्षित और संरक्षित हैं। इन बहियों में लेखन करने के लिए अलग स्याही तैयार करके तीर्थ पुरोहित वही लेखन करते हैं, जो काफी वर्षों तक सुरक्षित रहती है। इन वंशावलियों में जातियों, गोत्रों, उपगोत्रों का भी जिक्र रहता है। सबसे अहम बात इन बहियों में देखने को मिलती हैं कि तीर्थ पुरोहितों ने लेखन को भेदभाव से दूर रखा है। जहां राजाओं, महाराजाओं की वंशावलियां जिस क्रम में अंकित हैं, उसी क्रम में तीर्थ नगरी में पहुंचने वाले अन्य श्रद्धालुओं की हैं। विभिन्न राजवंशों की मुद्रांए, हस्त लेखन, दान पत्र, अंगूठे और पंजों के निशान बहियों में मौजूद हैं। यहां की वंशावलियों में देश की कई रियासतों के राजाओं के आने के उल्लेख दर्ज हैं। अक्तूबर २००७ में हमें इंडियन वर्किंग जर्नलिस्ट की एक कांफ्रेस में बद्रीनाथ जाने का अवसर मिला। मेरे साथ गए मेरे दोस्त नरेंद्र मारवाड़ी भी थे। हम मारवाड़ी के साथ बद्रीनाथ में, अजमेर के महावर वालों की धर्मशाला में चले गए। ये मारवाड़ी के परिवारवालों की धर्मशाला हैं1वहां पंडित जी से बात की। वंशानुक्रम के बारे में बताया। बात करते-करते पंडित जी ने अपनी बही खोलकर उनके गोत्र का विवरण खोला तो पता चला कि मारवाड़ी के पिता जी 41वर्ष पूर्व यहां यात्रा को आए थे। यात्रा को आने के बाद हुए उनके दो बच्चों का विवरण दर्ज नहीं थे। पंडित जी ने बही देखकर बताया कि ९३ साल पूर्व उनके दादा जी बद्रीनाथ आए थे। दोनों के आने की तिथि तक वही में दर्ज थी। उनके हस्ताक्षर भी बही में मौजूद थे। मित्र को अपने बाबा का नाम ज्ञात था। यहां बही से उन्होंने अपने बाबा के पिता उनके भाई, बाबा के दादा और उनके भाईयों आदि का विवरण नोट किया। पंडित जी ने अपनी वही में मित्र से अपने और उनके बच्चे, भाई और भाइयों के बच्चों की जानकारी नोट की। नीचे तारीख, माह, सन डालकर हस्ताक्षर कराए। सदियों से चले आ रहा इतिहास को संजोकर रखना एक दुरूह कार्य है। इस कार्य को ये पंडे सुगमता से पीड़ियों से करते चले आ रहे हैं। आज इस इतिहास को संजोने और संरक्षण की जरूरत है। अच्छा रहे कि इनका कंप्यूटरीकरण हो जाए। बहियों को लेमिनेट करके भी संरक्षित किया जा सकता है। कैसे भी हो, ये होना चाहिए, नही तो समय के साथ ये गलता और खराब होता चला जाएगा। । ये काम इनके व्यक्तिगत स्तर से संभव नही। सरकार को अपने स्तर से कराना होगा, तभी ये संभव हो पाएगा।

स्वावलंबी और समर्थ समाज निर्माण के प्रेरक पं. दीनदयाल उपाध्याय

अंत्योदय अर्थात समाज के सबसे अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का कल्याण। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अंत्योदय के लिये जो मार्ग बताया था, वह माननीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में धरातल पर दिखाई दे रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी गांव, गरीब, किसान, वंचित, शोषित, युवा और महिलाओं के कल्याण के लिये संकल्पित हैं। देश के गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन में सामाजिक सुरक्षा, मुद्रा, जनधन, उज्ज्वला, स्वच्छता मिशन, शौचालय निर्माण, दीनदयाल ग्राम ज्योति, प्रधानमंत्री आवास, जन औषधि केंद्र तथा आयुष्मान भारत जैसी जनकल्याणकारी योजनाओं से अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है।

डॉ.मोहन यादव
लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री

विलक्षण व्यक्तित्व के धनी, ऋषि राजनेता, एकात्म मानव दर्शन तथा अंत्योदय के प्रणेता और हमारे मार्गदर्शक पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के चरणों में कोटिशः नमन। संपूर्ण समाज, मानवता और राष्ट्र के लिये समर्पित श्रद्धेय दीनदयाल जी ने राष्ट्र निर्माण के लिये जो सूत्र दिये हैं वह भारतीय संस्कृति, परंपरा, देशज ज्ञान और एकात्म पर केंद्रित हैं। श्रद्धेय दीनदयाल जी ने जनसंघ की स्थापना से लेकर अंतिम सांस तक, अपने जीवन को यज्ञ में आहुति की तरह समर्पित किया और समग्र कल्याण का दर्शन दिया। इस दर्शन को विश्व एकात्म मानव दर्शन के रूप में जानता है। पंडित जी मौलिक विचारक थे। उनका कहना था कि हमारी विरासत हजारों साल पुरानी है। हमें अतीत से प्रेरणा लेनी है और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना है। उनका मानना था, जब समाज आत्म-निर्भर होगा तभी स्वाभिमानी होगा और जब स्वाभिमानी होगा तभी स्वावलंबी होगा। वे कहते थे, हमें देशानुकूल होने के साथ युगानुकूल भी होना है। मौलिक भारतीय चिंतन के आधार पर विकास के लिये पंडित दीनदयाल जी ने एकात्म मानव दर्शन दिया। एकात्म मानव दर्शन में व्यक्ति के सुख की समग्र परिकल्पना की गई है। इसमें शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समन्वय तथा एकात्मता का विचार है। यह दर्शन समस्त मानव के उत्थान पर केंद्रित है। इसमें सहज, सरल और सरस समाज निर्माण का मार्ग है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का सबका साथ, सबका विकास और सबका कल्याण इसी अवधारणा का प्रकटीकरण है। पंडित दीनदयाल जी ने अपने व्याख्यानों में विकास और निर्माण का मंत्र दिया। वे कहते थे, स्वाभिमानी बनो! अपने पुरुषार्थ से स्वाभिमानी कैसे बना जाये, वह इसका भी उल्लेख करते थे। उन्होंने देश-दुनिया को चतुपुर्रुषार्थ की संकल्पना दी। ये पुरुषार्थ हैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। यह चतुपुर्रुषार्थ मन, बुद्धि, आत्मा और शरीर के संतुलन से संभव हैं। इनके द्वारा ही एक आदर्श समाज और आदर्श राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। पहला पुरुषार्थ धर्म है जिसमें शिक्षा, संस्कार और व्यवस्था है तो दूसरे अर्थ में साधन, संपन्नता और वैभव आता है। अर्थ उपार्जन सही तरीके से हो, इसके लिये पंडित दीनदयाल जी ने मानव धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस तरह धमार्नुकूल, अर्थात उचित मार्ग से अर्थ उपार्जन करने का मार्ग प्रशस्त किया। तीसरा पुरुषार्थ है काम, जिसमें मन की समस्त कामनाएं शामिल हैं। मनुष्य को संतुलित, समयानुकुल और सकारात्मक स्वरूप में कार्य करना चाहिए। चौथा पुरुषार्थ है मोक्ष, अर्थात संतोष की परम स्थिति। यदि व्यक्ति संतोषी होगा तो वह समाज और राष्ट्र निर्माण का आधार बन सकता है। इन चार पुरुषार्थों की अवधारणा के अनुसार, यदि व्यक्ति और समाज को विकास के अवसर दिये जायें तो स्वावलंबी और समर्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है। इस समाज की परिकल्पना हमारे वेदों में की गई है। यही पंडित दीनदयाल जी की एकात्म मानव दर्शन की मूल अवधारणा है। पंडित दीनदयाल जी की स्वावलंबी समाज निर्माण की अवधारणा को हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी विश्वकर्मा योजना, आत्मनिर्भ भारत, स्टार्टअप इंडिया, वोकल फॉर लोकल, एक भारत-श्रेष्ठ भारत आदि योजनाओं के माध्यम से धरातल पर लाने को प्रयासरत हैं। इन योजनाओं ने समाज को सशक्त बनाया और हर जन की अंतरात्मा को पुरुषार्थ करने के लिये प्रेरित किया है। अंत्योदय अर्थात समाज के सबसे अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का कल्याण। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अंत्योदय के लिये जो मार्ग बताया था, वह माननीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में धरातल पर दिखाई दे रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी गांव, गरीब, किसान, वंचित, शोषित, युवा और महिलाओं के कल्याण के लिये संकल्पित हैं। देश के गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन में सामाजिक सुरक्षा, मुद्रा, जनधन, उज्ज्वला, स्वच्छता मिशन, शौचालय निर्माण, दीनदयाल ग्राम ज्योति, प्रधानमंत्री आवास, जन औषधि केंद्र तथा आयुष्मान भारत जैसी जनकल्याणकारी योजनाओं से अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। मुझे यह बताते हुए संतोष है कि हम समाज के सभी वर्गों की सहभागिता के साथ, सबके विकास को ध्यान में रखते हुए कार्य कर रहे हैं। प्रदेश में प्रत्येक स्तर पर त्वरित पारदर्शी उत्तरदायी तथा संवेदनशील शासन व्यवस्था सुनिश्चित करने की दिशा में प्रभावी कदम उठाये जा रहे हैं। प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से हम हर जन के कल्याण और प्रदेश के विकास के लिये चार मिशन, युवा शक्ति मिशन, गरीब कल्याण मिशन, किसान कल्याण मिशन और नारी सशक्तिकरण मिशन बनाकर काम करने जा रहे हैं। इससे युवा, गरीब, किसान और महिलाओं के समग्र विकास पर कार्य किया जायेगा। यह मिशन पंडित दीनदयाल जी के अंत्योदय कल्याण के लक्ष्य पूर्ति में सहभागी बनेंगे। मध्यप्रदेश में गरीब कल्याण के लिये कई योजनाएं और कार्य अमल में लाये जा रहे हैं। इनमें इंदौर की हुकुमचंद मिल के 4 हजार 800 श्रमिक परिवारों को उनका अधिकार दिया गया है। स्वामित्व योजना के माध्यम से 23 लाख 50 हजार लोगों को भू-अधिकार पत्र वितरित किये गये हैं। मुख्यमंत्री जनकल्याण योजना 2.0 के अंतर्गत 30 हजार 500 से अधिक श्रमिक परिवारों को 670 करोड़ रुपये से अधिक की अनुग्रह सहायता प्रदान की गई है और सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना से प्रतिमाह 55 लाख 60 हजार से अधिक हितग्राहियों को पिछले एक वर्ष में लगभग 4 हजार करोड़ रुपये से अधिक की पेंशन राशि वितरित की गई। इसी तरह तेंदूपत्ता संग्राहकों का मानदेय 3 हजार रुपये प्रति मानक बोरा से बढ़ाकर चार हजार रुपये किया गया। पीएम जन-मन योजना से विशेष पिछड़ी जनजातियों को अधोसंरचना, बिजली की उपलब्धता, आहार अनुदान तथा अन्य समुचित व्यवस्था के लिये योजनाएं चलाई जा रही हैं। पंडित दीनदयाल जी ने एकात्म मानवदर्शन और अंत्योदय से भारत राष्ट्र के कल्याण का जो मार्ग बताया, वह आकार ले रहा है। गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन में बदलाव आये, उन्हें मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हों और उनका जीवन सफल हो, ऐसे हर संभव प्रयास करना श्रद्धेय पंडित दीनदयाल जी के दर्शन का मूल भाव है। भारत, वर्ष 2047 तक विश्व की महाशक्ति बनने के संकल्प के साथ प्रगति पथ पर अग्रसर है। भारत को सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनाने के लिये हमें दीनदयाल जी के मौलिक चिंतन और आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा को आत्मसात करना होगा। हमारे पथ प्रदर्शक, मार्गदर्शक, राष्ट्र निर्माण के द्दष्टा, विराट समर्पण के प्रतीक, मां भारती की सेवा में जीवनपर्यंत समर्पित पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी को एक बार पुनः नमन।

हरियाणा चुनाव में कांग्रेस के अति उत्साह के मायने क्या ?

हरियाणा में सभी 90 सीटों पर एक चरण में 5 अक्टूबर को मतदान होना है, जिसके नतीजे 8 अक्टूबर को आएंगे। 2019 के चुनाव के बाद बीजेपी और जेजेपी के गठबंधन ने सरकार बनाई थी। हरियाणा में पिछले एक दशक से बीजेपी की सरकार है, हालांकि इस बार बीजेपी के सामने इनकंबेंसी की भी बड़ी चुनौती है। वैसे भी अगर किसी दल की सरकार लगातार दो या उससे अधिक बार सत्ता में रहती है, तो वोटरों का रुझान उसकी तरफ थोड़ी कम होना स्वाभाविक है। वहीं भाजपा लोकसभा चुनाव के बाद थोड़ा बैकफुट पर दिखाई दे रही है। बीजेपी और कांग्रेस ने लोकसभा चुनावों में हरियाणा की पांच-पांच सीटों पर जीत दर्ज की थी। लेकिन, बीजेपी ने 44 तो इंडिया गठबंधन में शामिल कांग्रेस ने 42 और आम आदमी ने चार सीटों पर बढ़त बनाई थी। बीजेपी की बढ़त वाली 17 विधानसभा सीटों, कांग्रेस की बढ़त वाली 13 सीटों और आम आदमी पार्टी की बढ़त वाली तीन सीटों पर हार-जीत का अंतर 10 प्रतिशत से कम रहा था। अब विधानसभ ा चुनावों में इन सीटों पर कांटे की टक्कर होना तय माना जा रहा है। लेकिन इन सीटों पर मतदाता का झुकाव जिस पार्टी की तरफ होगा, उसकी पूरी जीत की संभावना रहेगी। 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने 6 सीटों पर एकतरफा जीत हासिल की थी। इसके बाद 2019 के विधानसभा चुनावों में इन 6 सीटों के अंतर्गत आने वाली 54 विधानसभा सीटों पर बीजेपी जीती थी। अब बात करें 2024 के लोकसभा चुनाव की तो बीजेपी सिर्फ करनाल सीट पर ही अपना प्रदर्शन दोहरा पा जबकि भिवानी-महेंद्रगढ़ लोकसभा सीट पर बीजेपी ने 6 और कांग्रेस ने तीन हलकों में लीड ली। कुछ ऐसा ही गुरुग्राम और फरीदाबाद सीट पर दिखाई दिया, यहां बीजेपी 6 और कांग्रेस ने 3 विधानसभा हलकों में लीड ली। इसके अलावा अंबाला सीट पर बीजेपी 4 और कांग्रेस 5, कुरुक्षेत्र में बीजेपी 5, इंडिया गठबंधन 4, सोनीपत में बीजेपी 5 और कांग्रेस 4, हिसार में बीजेपी 3 और कांग्रेस ने 6 विधानसभा हलको में लीड ली। 2019 के लोकसभा और विधानसभा चुनाव के आंकड़े पर नजर डालें तो हार-जीत के अंतर में कमी आई है। लोकसभा चुनाव के नतीजों को अगर विधानसभाअनुसार देखें तो 30 सीटों पर हार जीत का अंतर सिर्फ 13.3 प्रतिशत वोटों का रहा, जो पिछले लोकसभा चुनाव में घटकर 3.8 प्रतिशत रह गया। 2019 के विधानसभा चुनाव में हार-जीत का अतंर 5 हजार से भी कम वोटों का रहा था। 2024 लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद से भाजपा की बेचैनी बढ़ गई है। नायाब सिंह सैनी को सीएम बनाए जाने के बाद अनिल विज भी असंतुष्ट हैं, हालांकि अनिल विज इससे पहले भी कई बार खुद सीएम बनने की महत्वाकांक्षी सोच जाहिर कर चुके है। भारतीय जनता पार्टी ने अंबाला कैंट विधानसभा सीट से 71 वर्षीय अनिल विज को उम्मीदवार बनाया है। वो इस सीट से छह बार से विधायक रह चुके हैं। हालांकि, इस बार विधायक बनने की राह उनके लिए पहले जैसी आसान नहीं होगी। दरअसल, कांग्रेस ने कुमारी शैलजा के करीबी पूर्व पार्षद परविंदर सिंह परी को टिकट दिया है। आप ने राज कौर गिल को टिकट देकर आधी आबादी को साधने की कोशिश की है। वहीं, इनेलो-बसपा गठबंधन से ओंकार सिंह, जजपा-असपा गठबंधन से करधान मैदान में हैं।

इन आंकड़ों पै कौन न मर जाये अय खुदा

राकेश अचल

इस देश में अब सब कुछ चौंकाने वाला हो रहा है। चुनाव पूर्व सर्वे हों या मतदान के बाद के सर्वे। सब चौंकाने वाले होते है। सर्वे गलत हों या सही, लेकिन कोई इसके लिए जिम्मेदार नहीं होता। सर्वे का काम लोगों को भरमाना और अपने प्रायोजक का नफा-नुक्सान देखना भर होता है। सर्वेक्षणों के झूठ-सच पर निगाह रखने के लिए देश में कोई नियामक आयोग नहीं है। अब एक नया सर्वे आया है पीरियोडिक लेबर फोर्स के इस सर्वे के मुताबिक हमारा प्यारा मध्यप्रदेश अकेला ऐसा प्रदेश हैं जहां बेरोजगारी न के बराबर है यानि मात्र 1 फीसदी। नेशनल सेंपल सर्वे ऑफिस द्वारा जुलाई 2023 से जून 2024 के लिए जारी पीरियोडिक लेबर फोर्स सर्वे (पीएलएफएस) की सालाना रिपोर्ट से यह भी पता चला है कि महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए लेबर फोर्स पार्टिसिपेशन रेट (एलएफपीआर) 2023-24 के दौरान सात साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई ह। ये सर्वे किसी गोदी मीडिया का नहीं है बल्कि सरकार का है इसलिए इसके ऊपर ऊँगली उठाने में भी संकोच होता है, लेकिन इस सर्वे के नतीजे हकीकत और अफसाने जैसे हैं, इसलिए उँगलियाँ अपने आप उठाई जाती हैं। दरअसल इस सर्वे की रिपोर्ट जारी करने के समय को लेकर ही पहला सवाल उठाया जा सकता है कि ये सर्वे हरियाणा विधानसभा के चुनावों के ठीक ११ दिन पहले आया है। सर्वे का दावा है की देश में सबसे ज्यादा बेरोजगारी हरियाणा में घटी है, अर्थात सबसे ज्यादा रोजगार हरियाणा ने दिए हैं। रिपोर्ट कहती हैकि 2023 -2024 में हरियाणा में बेरोजगारी दर ३ दशमलव 4 फीसदी है जो बीते साल 6 प्रतिशत से ज्यादा थी। जाहिर है की ये रिपोर्ट साबित करना चाहती है कि हरियाणा की डबल इंजिन की सरकार ने बीते साल में हरियाणा में सबसे जयादा रोजगार मुहैया कराये हैं। सर्वे रिपोर्ट पर आप यकीन करें या न करें ये अलग बात है लेकिन सरकार तो अपना काम कर रही है, सर्वे के मुताबिक एक साल में इसमें 2.7 फीसदी की गिरावट आई है। हरियाणा से ज्यादा गोवा 9.7 फीसदी के बाद देश में सबसे ज्यादा थी। ये गिरावट देश के किसी भी अन्य राज्य के मुकाबले सबसे ज्यादा है। साल 2023-24 में गोवा में बेरोजगारी दर देश में सबसे ज्यादा 8.5 फीसदी है। केरल में ये 7.२ फीसदी है। वहीं, देश की औसत बेरोजगारी दर 3.2 फीसदी है।

सर्वे तो कहता है कि मध्य प्रदेश देश का एकमात्र राज्य है, जहां बेरोजगारी दर 1 फीसदी से भी कम यानि (0.9%) फीसदी है। यानि मध्यप्रदेश युवाओं कि लिए रोजगार कि मामले में किसी स्वर्ग से कम नहीं है इस सूची में दूसरे नंबर पर गुजरात (1.1)फीसदी और तीसरे पर झारखंड (1.3) फीसदी है। यानि मध्य प्रदेश और गुजरात की डबल इंजिन की सरकारों ने तो रोजगार देने में कमाल ही कर दिया है। मुझे याद आता है कि मध्यप्रदेश विधानसभा में भी मप्र की सरकार ने भी कुछ-कुछ इसी तरह के आंकड़े दिए थे। मध्य प्रदेश सरकार का दावा है कि 2023 की तुलना में मई 2024 तक 9, 90, 935 बेरोजगारों की संख्या कम हो गई है. सरकार दावा करती है कि पिछले साल 35 लाख 73 हजार बेरोजगार थे, जबकि इस साल मई 2024 की स्थिति में यह संख्या घटकर 25 लाख 82 हजार हो गई है. जबकि ताजा आर्थिक सर्वे में ये आंकड़ा 33 लाख से कुछ ज्यादा हैं। अब सवाल ये है कि जनता इन आंकड़ें पर यकीन करे या जमीनी हकीकत देखे? आंकड़े कुछ और कहते हैं और जमीनी हकीकत कुछ और है। एलएफपीआर को जनसंख्या में काम करने वाले या काम की तलाश करने वाले या काम के लिए उपलब्ध लोगों के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया जाता है. पीएलएफएस की सालाना रिपोर्ट, जो ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों को कवर करती है, ने दिखाया कि महिलाओं के लिए एलएफपीआर 2023-24 में बढ़कर 41.7 फीसदी हो गया, जो पिछले साल 37 फीसदी था.

सरकारी आंकड़े धोखा देते हैं या हकीकत बयान करते हैं ये कहना कठिन काम है क्योंकि इन्हें झुठलाने के लिए जिन आंकड़ों की जरूरत है वे भी सरकार के ही पास होते हैं, लेकिन जनता को पता है की आंकड़े कितने हवा -हवाई हैं और कितने असली? देश के 25 राज्यों और केंद्र शासित क्षेत्रों का लेबर पार्टिसिपेशन रेट राष्ट्रीय औसत से अधिक है। आप हैरान होंगे ये जानकर किसिक्किम का लेबर पार्टिसिपेशन रेट यानी राज्य की कुल आबादी में काम करने या काम खोजने वाले लोग सबसे अधिक 60.5 फीसदी हैं। यहां महिलाओं की हिस्सेदारी 55 फीसदी और पुरुषों की 65 फीसदी है।

संक्षिप्त खबरें

श्रद्धांजलि सभा आयोजित

छपरा कार्यालय।बुधवार को भारतीय क्रांतिकारी कमेटी के प्रधान कार्यालय रतनपुरा छपरा में प्रखर समाजसेवी स्वर्गीय संतोष सिंह की 11वींपुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसके आयोजक स्वर्गीय संतोष सिंह के पुत्र एवं लोकप्रिय छात्र नेता रोहित रमन सिंह थे। कार्यक्रम में मुख्य रूप से वक्ता के तौर पर सारण संसदीय क्षेत्र के पूर्व प्रत्याशी एवं वरीय क्षेत्र नेता शेख नौशाद, युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के अध्यक्ष अमित नयन, सरताज खान, शादाब अहमद मजहरी, सूर्य प्रताप सिंह,मिमीला कुमार, कादिर हुसैन अंसारी,यादव, धनंजय सिंह, राजेश यादव समेत सैकड़ो लोगों ने श्रद्धांजलि सभा में शिरकत की। सभा के बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें भोजपुरी के लोकप्रिय गायक कृष्णकांत सौरव उर्फ मुखिया ने अपनी शानदार प्रस्तुति से लोगों का मन मोह लिया। कार्यक्रम के अंत में स्वर्गीय संतोष बाबू के जीवन पर आधारित लेखक तस्लीम तन्हा के द्वारा रचित संघर्ष एक जीवन कथा का विमोचन किया गया।

नल जल योजना की होने लगी जांच पड़ताल

छपरा कार्यालय।जिलाधिकारी अमन समीर के निदेश पर आज जिला, अनुमंडल एवं प्रखंड स्तरीय 58 पदाधिकारियों द्वारा जिला के विभिन्न प्रखंडों के पंचायतों में नल जल योजना की जाँच कराई जा रही है। सभी जाँच पदाधिकारियों को जाँच हेतु सम्बद्ध पंचायतों में पीएचईडी द्वारा क्रियान्वित की जा रही नल जल योजनाओं के अद्यतन क्रियाशीलता की स्थिति तथा गुणवत्ता की जाँच की जा रही है। सभी जाँच पदाधिकारियों को अपना जाँच रिपोर्ट जिला विकास शाखा में समर्पित करने का निदेश दिया गया है। जाँच रिपोर्ट में उल्लेखित कमियों को सूचीबद्ध कर इसके सुधार हेतु अग्रेतर कार्रवाई की जायेगी।

4 अक्तूबर से होगा साक्षात्कार

छपरा कार्यालय। सचिव जिला विधिक जागरूकता समिति, सारण से प्राप्त जानकारी के अनुसार सारण जिलान्तर्गत कुल 30 पैनल/रिटेनर अधिवक्ताओं के चयन हेतु आमंत्रित किये गये आवेदनों के आलोक में सभी आवेदकों का साक्षात्कार लिया जायेगा। साक्षात्कार का आयोजन 4 से 7 अक्टूबर तक लगातार निर्धारित किया गया है। विशेष जानकारी हेतु आवेदक जिला विधिक सेवा प्राधिकार, छपरा, विधि मंडल छपरा, अनुमंडलीय न्यायालय , विधि मंडल सोनपुर एवं मढ़ौरा के सूचना पट का अवलोकन कर सकते हैं।

शिक्षक की पटना में ब्रेन हैमरेज से मौत

परसा। स्थानीय प्रखंड के बभनगावा निवासी शिक्षक कृष्णा सिंह का ब्रेन हेमरेज होने के कारण पटना में इलाज के दौरान मौत हो गई । वे 50 वर्ष के थे । घटना की सूचना मिलते ही स्वजनों के रोदन क्रंदन से कोहराम मच गया । वही शिक्षक का शव उनके पैतृक गांव बभनगावा पहुंचते ही अंतिम दर्शन के लिए आस पास से के सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा हो गई। स्वजनों के अनुसार शिक्षक कृष्णा सिंह मकेर प्रखंड के डीही बेसिक स्कूल में सहायक शिक्षक के पद पर कार्यरत थे और चार भाईयो में सबसे छोटा थे। स्वजनों के अनुसार गत 18 सितंबर को विद्यालय परिसर में करीब साढ़े दस बजे शिक्षक कृष्णा सिंह गिर कर बेहोश हो गए। आनन फानन में उन्हें ब्रेन हेमरेज की शिकायत पर पटना इलाज के भर्ती कराया गया ।जहा बुधवार की सुबह उन्होंने अंतिम सासे ली। घटना को लेकर शिक्षक अनिल सिंह,अमरनाथ मांझी, अनिल कुमार,पूर्व मुखिया प्रतिनिधि हरेश्वर सिंह,अजय साह,पंचायत समिति सदस्य मुकेश सिंह, पैक्स अध्यक्ष अजय सिंह,सरपंच संघ अध्यक्ष प्रतिनिधि रौशन कुमार,राम भजन सिंह,रमेश सिंह,शैलेंद्र सिंह आदि ने शोक संवेदना व्यक्त किया है। वही घटना को लेकर भाई मालिक सिंह,रमेश सिंह,शिवजी सिंह,पत्नी आशा देवी,पुत्र अमित कुमार,सुमित कुमार,पुत्री प्रिया कुमारी,प्रियंका कुमारी का रो रो कर बुरा हाल है। घटना को लेकर पूरे गांव में मातम है

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की काव्यकृति कुरुक्षेत्र का किया गया नाट्य मंचन

छपरा कार्यालय कला संस्कृति एवं युवा विभाग के तत्वावधान में जिला प्रशासन के सौजन्य से मंगलवार को श्री भिखारी ठाकुर प्रेक्षागृह छपरा में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की काव्यकृति कुरुक्षेत्र का नाट्य मंचन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद महराजगंज जनार्दन सिंह सिग्रीवाल, माननीय विधायक छपरा डॉ सी एन गुप्ता, महापौर छपरा नगर निगम, जिला परिषद सदस्य जयमित्रा देवी उपस्थित थे। अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर नाट्य मंचन का शुभारंभ किया गया।

स्मार्ट मीटर के रिचार्ज से परेशान हो रहे लोग

रिचार्ज के एक सप्ताह बाद भी बिजली आपूर्ति नहीं

स्मार्ट मीटर के नाम पर लोग हो रहे ठगी का शिकार

प्रात : किरण संवाददाता

बगहा। बगहा समेत पूरे अनुमंडल क्षेत्र के लोग स्मार्ट मीटर से परेशान हो रहे है। कहीं कनेक्शन और रिचार्ज के बावजूद बिजली आपूर्ति नहीं तो कहीं पैसे के अनुरूप बिजली आपूर्ति नहीं। ऐसे कई लोग हैं जो बिजली विभाग के द्वारा लगाए जा रहे नए सिस्टम से परेशान दिख रहे हैं। वाल्मीकिनगर स्थित बिसहा गांव गाछी टोला निवासी आरती देवी ने बताया की मेरे नाम से बिजली कनेक्शन है हमने एक सप्ताह पहले 6 सौ 60 रुपये का रिचार्ज कराया था मगर एक सप्ताह होने को हैं लेकिन अबतक बिजली बहाल नहीं हुई है। एक सप्ताह से अंधेरे में रहने को मजबूर हैं। आरती देवी ने आगे बताया कि जब हमने इसकी शिकायत बिजली विभाग के ऑफिस पहुंचकर अधिकारियों से की तो उन्होंने कहां की 50 रुपये का और रिचार्ज कराओ तो बिजली आ जाएगी,हमने 50 रुपये का और रिचार्ज कराया मगर रिचार्ज के 12 घंटे बीत जाने के बावजूद अबतक बिजली बहाल नहीं हुई।वहीं इसी गांव के दसरे व्यक्ति ने बताया कि 5 सौ रुपये के रिचार्ज में महज 2 घन्टे ही बिजली मिली दो घंटे के बाद बिजली कट हो गई जो अबतक नहीं मिल पाई है। न तो रिचार्ज का मैसेज आया और न ही मीटर में रिचार्ज शो हो रहा है।मीटर तक बिजली आ रही है लेकिन घर पूरी तरह से अंधेरे में डूबा हुआ है। बतादें की ऐसे दर्जनों के लोग हैं जिन्हें विभिन्न तरह की शिकायतें है स्मार्ट मीटर के लगने से । जगह जगह इसके खिलाफ लोग गोलबंद होकर आंदोलन कर रहे हैं। इसके बावजुद शिकायतें अब भी दर्ज कराई जा रही है।लोग स्मार्ट मीटर के नाम पर ठगी के शिकार हो रहे हैं।

बच्चों के घर के सामने पेशाब करने को लेकर हुए विवाद में दो पक्षो में चली लाठियां

महिला समेत 5 लोग घायल एक महिला की हालत गम्भीर

प्रात : किरण संवाददाता

बगहा। बगहा में बच्चों को घर के सामने सड़क पर पेशाब करने को लेकर दो पड़ोसी आपस मे भीड़ गए इनके बीच खूब चले लाठी डंडे। इस मारपीट में महिला समेत पांच लोग घायल हो गए वहीं एक महिला की हालत गंभीर बताई जा रही है।घटना नगर थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 34 मलपुरवा मोहल्ले की बताई जा रही है । स्थानीय मोहल्ले वासियों के द्वारा दोनों पक्षों मे लाठी डंडे से मारपीट हो रही थी तो उन लोगों के सहयोग से झगड़े को सुलझाया गया । बतादे की सभी घायलों को परिजनों के सहयोग से इलाज के लिए अनुमंडलीय अस्पताल में लाया गया जहां डॉक्टर अरुण कुमार यादव के द्वारा सभी घायलों को प्रायमरी ट्रीटमेंट किया गया।डॉ अरुण कुमार यादव ने बताया कि सभी का इलाज अनुमंडल अस्पताल में जारी है वही एक महिला की स्थिति नाजुक है जिसको बेहतर इलाज के लिए जीएमसीच बेतिया रेफर कर दिया गया है। एक पक्ष की पहचान नगर थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 34 मोहल्ला निवासी कुंज बिहारी कुशवाहा और उनकी पत्नी संध्या देवी जो पति-पत्नी दोनों घायल हैं दूसरे पक्ष की पहचान नगर थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 34 मोहल्ला निवासी मदन शाह 60 वर्षीय और उनकी पत्नी राजफली देवी 55 वर्षीय और उनके पुत्र परशुराम शाह के रूप में की गई है। इस घटना की सूचना नगर थाना की पुलिस को दे दी गई है जो मौके पर पहुंचकर पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी हुई है।

छपरा जंक्शन पर भाजपा किसान मोर्चा ने चलाया सदस्यता अभियान

- आज समाज का हर वर्ग बीजेपी से जुड़ना चाहता है -सिंह,

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के अवसर पर छपरा जंक्शन पर किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष मनोज पांडेय के नेतृत्व में सदस्यता अभियान कैंप लगाकर किया गया इसमें जंक्शन पर कार्यरत सफाई कर्मियों को भाजपा के सदस्यता अभियान से जोड़ा गया तथा बड़ी संख्या में सारण लोकसभा के लोग भी सदस्यता अभियान से जुड़े इस अवसर पर सदस्यता अभियान की शुरूआत जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के तैल चित्र पर जयंती के अवसर पर पुष्प अर्पित करके किया इस अवसर पर जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह ने कहा कि कहा कि आज भाजपा से समाज का हर वर्ग जोड़ना चाहता है किसान मोर्चा के अध्यक्ष मनोज पांडे ने कहा भाजपा देश एवं समाज को जोड़ने का काम करती हैं, आज हर एक आदमी भाजपा से जुड़कर अपने को गौरवान्वित महसूस करता है भाजपा भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए कृत संकल्पित है इस अवसर पर सैनिक प्रकोष्ठ के जिला संयोजक उमाकांत पांडे ,किसान मोर्चा जिला मंत्री राकेश कुमार सिंह, अशोक कुमार सिंह, रविंद्र पांडे , कैलाश जी सहित बड़ी संख्या कार्यकर्ताओ ने भाग लिया।

गौतमबुद्ध सेतु पुल चौराहे बाजार में लगी आग से दर्जनों दुकान जले

छोटे कारोबारियों के लाखों की संपत्ति जलकर राख

प्रात : किरण संवाददाता

बगहा। उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित मधुबनी के धनहा रतवल गौतम बुद्ध सेतु पुल चौराहे पर स्थित बाजार में भीषण अगलगी की घटना हुई है। आग लगने से आधा दर्जन दुकानें जलकर खाक हो गईं हैं। अग्नि तांडव में छोटे कारोबारियों के लाखों की सम्पति का नुकसान हुआ है। किसी दुकानदार का फल जला है तो किसी दुकानदार का कैश रुपया और फर्नीचर व फ्रीज समेत दुकान में रखें गए सारे सामान जलकर राख हो गए हैं । घटना के बाद मौके पर अफरा तफरी मच गईं और पीड़ितों का रो रोकर बुरा हाल हो गया है । आरोप है की बगल के ही दो लोगों द्वारा बीती रात करीब 2 बजे जवलंशील पदार्थ डालकर आग लगाई गईं है। क्योंकि बाजार वाली जमींन को लेकर कुछ लोगों से विवाद चल रहा था। लिहाजा सक्षम न्यायालय से यह जमींन सरकारी घोषित किये जाने के बाद दबंगों नें दुस्साहस दिखाई है और सात लोगों के आशियाना समेत उनके जीविकोपार्जन को नष्ट कर दिया है । इधर सूचना पर पहुंची पुलिस प्रशासन व एफएसएल की टीम घटना की विभिन्न पहलुओं से जाँच करने में जुटी है। पीड़ित बता रहे हैं की मंगलवार की रात्रि दो बजे के करीब जानबूझकर असामाजिक तत्वों द्वारा आग लगाया गया है जिनकी पहचान का भी लोग दावा कर रहें हैं । हालांकि पुलिस प्रशासन की ओर से इसकी कोई पुष्टि नहीं की गईं है और ना हीं कोई अधिकारी अभी कैमरे के सामने आ रहें हैं । घटना धनहा थाना क्षेत्र के चेक पोस्ट से सटे धनहा-रतवल पुल चौक के समीप की है । इस चौक पर फल मूल समेत किराना और मछली भुजा बेचने वालों की दर्जनों दुकानें एक साथ कतार में हैं ।

राष्ट्रीय होमियोपैथी सम्मेलन में सम्मानित हुए डॉ घनश्याम

प्रात : किरण संवाददाता

बेतिया(प.च)।नगर के सविता होमियो क्लीनिक एंड रिसर्च सेंटर के निदेशक डॉ घनश्याम मंगलवार को होमियो चिकित्सा सेवा सम्मान अवार्ड से सम्मानित हुए।बेलसन होमियोपैथी के तत्वावधान में पश्चिम बंगाल के मंदारमनी में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय होमियोपैथी शिखर सम्मेलन में एमडी संजय भूषण सिंह और डॉ अनूप कुमार सिंह के द्वारा संयुक्त रूप सेबयह सम्मान दिया गया।वही इस सेमिनार में बिहार,असम,यूपी, झारखंड,बंगाल और नेपाल के सैकड़ों चिकित्सक शामिल हुए।सेमिनार में चिकित्सकों द्वारा जटिल बीमारियों का होमियोपैथिक उपचार से ठीक किए गए केसो और अपने अनुभवों को साझा किया गया।वही अवार्ड मिलने पर खुशी जताते हुए उन्होंने जिले के लोगों को इसे समर्पित करते हुए डॉ घनश्याम ने कहा कि आज मैं जिस मुकाम पर हूँ वो जिलेवासियों के प्यार और आशीर्वाद की ही देन है।आपको बता दें कि डॉ घनश्याम नगर के नया बाजार चौक स्तिथ सविता होमियो क्लीनिक एंड रिसर्च सेंटर के निदेशक है।

ऑन ड्यूटी टीटीई की सतर्कता और तत्परता से बची यात्री की जान

- सोनपुर -छपरा रेलखंड के बीच सीपीआर देकर बचाई बुजुर्ग की जान
- पवन एक्सप्रेस में बुजुर्ग के लिए देवदूत बना टीटीई

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा।दरभंगा से लोकमान्य तिलक जा रही गाड़ी संख्या 11062 पवन एक्सप्रेस में ऑन ड्यूटी टीटीई सविंद कुमार की सतर्कता और तत्परता द्वारा हार्ट अटैक आए एक बुजुर्ग यात्री को सीपीआर देकर जान बचाई गई । इसके उपरांत रेल चिकित्सको के सहयोग से छपरा में ट्रेन से उतार कर स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया।पवन एक्सप्रेस में सफर कर रहे 65 वर्षीय बुजुर्ग यात्री ए-वन कोच में अपने भाई के साथ बनारस के लिए यात्रा कर रहे थे। इस दौरान वे बेहोश हो गए। उनके भाई द्वारा रेल मदद पर इसकी जानकारी देकर मदद मांगी। उसके बाद सोनपुर कमर्शियल कंट्रोल से कोच के टीटीई को जानकारी दी गई। इसी बीच यात्री के साथ चल रहे उनके भाई ने अपने फैमिली डाक्टर से बात की। बताया कि वे पूरी तरह बेहोश हैं, सांसें चल रही। फैमिली डाक्टर द्वारा सीपीआर देने की सलाह दी गई । सोनपुर -छपरा रेलखंड के बीच बेहोश यात्री को टीटीई ने करीब 15 मिनट तक सीपीआर देने से उनकी आंख खुल गई। थोड़ी देर में ट्रेन छपरा स्टेशन पहुंच गई। वहां रेलवे के चिकित्सकीय दल पहले से मौजूद थे। उसके बाद स्थानीय हास्पिटल में भर्ती कराया गया। इस घटना की जानकारी प्राप्त होते ही तत्काल मंडल रेल प्रबंधक विवेक भूषण सूद ने टीटीई सविंद कुमार को सम्मानित करने की घोषणा की तथा सीनियर डीसीएम रौशन कुमार द्वारा भी नगद पुरस्कार से सम्मानित करने का घोषणा किया गया। इस उल्लेखनीय कार्य के लिए सोनपुर मंडल को सविंद कुमार पर गर्व है।

स्वच्छता को दैनिक आदत बनाने की आवश्यकता: प्राचार्य

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।राष्ट्रीय सेवा योजना, राजेंद्र कॉलेज, छपरा के तत्वावधान में चल रहे स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के अंतर्गत डोर टु डोर अभियान चलाया गया। इस कार्यक्रम के प्रारंभ में स्वयंसेवकों को प्राचार्य ने संबोधित करते हुए कहा कि स्वच्छता को दैनिक आदत बनाने की आवश्यकता है और इसके लिए सभी को प्रेरित करना होगा। विदित है कि राजेंद्र कॉलेज, छपरा 17 सितंबर से 02 अक्टूबर तक आयोजित स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत प्रतिदिन अलग अलग विषयों से जन जागरूकता का कार्यक्रम आयोजित कर रहा है । कल एनएसएस स्थापना दिवस के अवसर पर देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी की प्रतिमा स्थल की सफाई की गई । इसी क्रम में आज डॉ. अनुपम कुमार सिंह के मार्गदर्शन में स्वयंसेवकों ने घर घर जाकर और आस पास के दुकानदारों को जागरूक किया। इसमें यह संदेश दिया गया कि स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह अपनाना चाहिए कि वो आदत बन जाए। इसके अलावा घरेलू गीले और सूखे कचरे को अलग अलग करने हेतु जागरूक किया गया। देश तभी सुंदर बन पाएगा जब यहाँ का हरेक नागरिक अपने घर और आसपास की गंदगी को साफ करेगा। इस कार्यक्रम में आरती, तरन्नुम, उजाला, रुचि, सुष्मिता, तृप्ति आदि ने जनजागरूकता में अपनी भूमिका निभाई।

रहबरे काईनात कान्फ्रेंस में पहुंचे पूर्व मंत्री कई लोगों को किया गया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

गड़खा(सारण)। हजरत मोहम्मद साहब की जयंती के मौके पर बसंत रोड स्थित गड़खा जामे मस्जिद में रहबरे काईनात कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया।मौलाना नेसार अहमद मिसवाही की सदारत व तकाबत में पूरी रात कार्यक्रम चला।इस मौके पर कोलकात्ता से आए सैफुल्लाह अलीमी साहब ने मोहम्मद पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनके आने के बाद बेवाओ, यतिमो, मजलूमो और बेटियों को सम्मान और अधिकार मिला। उनके आने के पूर्व बेटियों को जिंदा दफन करने की प्रथा थी जिन्होंने समाप्त करवाया।झारखंड से आए आसिफ एकबाल ने समाज में फैले हुए कुरीतियों एवं दहेज को खत्म करने के लिए लोगों को बेदार किया।गया से आए नसीर सदर ग्यावी व हबीबुल्लाह फौजी ने अपने शायरी से कार्यक्रम में चार चांद लगा दिया। इस मौके पर उपस्थित पूर्व मंत्री मुनेश्वर चौधरी,पूर्व मंत्री सुरेंद्र राम, जिप के पूर्व अध्यक्ष वैद्यनाथ प्रसाद सिंह विकल, जदयू नेता अल्ताफ आलम राजू, पूर्व मुखिया प्रतिनिध अशोक गुप्ता, दिनेश राय, पत्रकार राजेश उपाध्याय, योगेंद्र मकवाना,राहुल कुमार आदि को आयोजकों ने अंगवस्त्र से सम्मानित किया। कार्यक्रम के आयोजक एजाज अहमद, अख्तर हुसैन, इम्तेयाज परवेज साहब, जमशेद, इबरार,बाबू जान, नइम अहमद, एजाज अहमद, जुबैर, डा.मुस्तफा, मो.मुस्तफा, असलम मास्टर आदि थे। अहमद, जुबैर, डा.मुस्तफा, मो.मुस्तफा, असलम मास्टर आदि थे।

थरूहट विकास अंतर्गत योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर क्रियान्वित कराने का जिलाधिकारी ने दिया निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

बेतिया। जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय की अध्यक्षता में बुधवार को समाहरणालय सभाकक्ष में समेकित थरूहट विकास अभिकरण योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु प्रस्तावित योजनाओं के चयन से संबंधित प्रबंधनकारिणी समिति की बैठक सम्पन्न हुयी। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि राज्य सरकार एवं जिला प्रशासन थरूहट क्षेत्र के समग्र विकास के लिए कृतसंकल्पित है तथा इस हेतु लगातार कार्रवाई की जा रही है। वर्ष 2024-25 में 23 करोड़ 80 लाख रुपए की राशि से विभिन्न विकासात्मक एवं कल्याणकारी योजनाओं को क्रियान्वयन किया जाना है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से कहा कि थरूहट विकास अंतर्गत योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर क्रियान्वित किया जाना है। योजनाओं के क्रियान्वयन में गुणवता का पूरा ख्याल रखा जाय। ऑनगोइंग स्कीम को ससमय पूरा करना है तथा चयन की जाने वाली योजनाओं को भी निर्धारित समयावधि में गुणवतापूर्ण तरीके से क्रियान्वित कराना है। उन्होंने माननीय सदस्यों से अनुरोध किया कि थरूहट विकास अभिकरण योजनान्तर्गत बड़ी योजनाओं से संबंधित प्रस्ताव दिया जाय। छोटी योजनाओं का क्रियान्वयन अन्य योजना अंतर्गत कराया जा सकता है। प्रभारी पदाधिकारी, समेकित थरूहट विकास अभिकरण द्वारा बताया गया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में समेकित थरूहट विकास अभिकरण के माध्यम से ली जाने वाली योजनाओं के लिए विषयवार बजट प्राप्त हो गया है। कुल-3000.00 लाख रुपए प्राप्त हुए हैं। जिसमे सहायक अनुदान-वेतन के लिए 20 लाख, सहायक अनुदान-परिसंपतियों के निर्माण हेतु 2380 लाख तथा सहायक अनुदान-गैर वेतन के लिए 600 लाख रुपए शामिल हैं। उन्होंने बताया कि थरूहट क्षेत्र अंतर्गत बगहा-02 प्रखंड, गौनाहा प्रखंड, रामनगर प्रखंड एवं मैनाटांड़ प्रखंड सम्मिलित हैं। उन्होंने बताया कि बगहा-02 प्रखंड अंतर्गत खरहट त्रिभौनी, ढ़ोलबजवा लक्ष्मीपुर, बकुली पंचगांवा, बेलहवा मदनपुर, बलुआ छत्रौल, महुअवा कटहरवा, बिनवलिया बोदसर, जिमरी नौतनवा, हरनाटांड़, भड़छी, संतपुर सोहरिया, सेमरा कटकुईयां, देवरिया तरूअनवा, चमौलिया, बरिअरवा, चम्पापुर गोनौली, नौरंगिया दरदरी, लक्ष्मीपुर रमपुरवा, बैरागी सोनवर्षा, पैकवलिया मर्जादपुर पंचायत आते हैं। इसी तरह गौनाहा प्रखंड अंतर्गत रूपौलिया, धमौरा, धनौजी, बेलसंडी, मटियरिया, महुई, मेहनौल, भितिहरवा, सिट्ठी, डरौल, दोमाठ, जमुनिया, गौनाहा एवं लछनौता पंचायत आते हैं। रामनगर प्रखंड अंतर्गत बनकटवा करमहिया, बगही, मनचगवा, परसौनी, सोहसा एवं नौरंगिया दोन आते हैं। इसके साथ ही मैनाटांड़ प्रखंड अंतर्गत रामपुर, भंगहा एवं चौहट्टा पंचायत आते हैं। प्रबंधनकारिणी समिति की बैठक में माननीय जनप्रतिनिधियों तथा अधिकारियों से प्राप्त प्रस्तावित योजनाओं पर विचार-विमर्श किया गया। इसके साथ ही उपस्थित माननीय जनप्रतिनिगण द्वारा थरूहट क्षेत्र के समेकित विकास के लिए अपने-अपने सुझाव व्यक्त किये गये। माननीय विधायक, श्री वीरेन्द्र प्रसाद गुप्ता ने कहा कि थरूहट क्षेत्र की बच्चियों को पटना आदि शहरों में जाकर आगे की पढ़ाई करने में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनके लिए जिला मुख्यालय में छात्रावास का निर्माण करने की दिशा में कार्रवाई की जाय। बगहा में विवाह भवन का निर्माण कराया जाय। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित योजनाएं जो क्रियान्वित हो रही है, उसकी जानकारी सभी सदस्यों को उपलब्ध करायी जाय। समेकित थरूहट विकास अभिकरण अंतर्गत योजनाओं का कार्यान्वयन करने में शामिल सभी अधिकारियों को आगामी बैठक में शामिल किया जाय। माननीय विधान पार्षद, श्री अफाक अहमद ने कहा कि उपस्थित सदस्यों ने दोन क्षेत्र के कई परेशानियों को सामने रखा है। इनके परेशानियों के मद्देनजर दोन क्षेत्र का समुचित विकास अभिकरण के माध्यम से कराने की दिशा में कार्रवाई की जाय। अन्य माननीय सदस्यों ने रामनगर, चौहट्टा में ट्राइसेम भवन को ठीक कराने, रामपुर-परचौता सड़क निर्माण, सहोदरा माता मंदिर के समीप जमीन को अतिक्रमणमुक्त कराने, सहोदरा माता मंदिर का सौंदर्यीकरण, दोन क्षेत्र में सड़क, पुल-पुलिया का निर्माण, सुचारू विद्युत व्यवस्था, समुचित चिकित्सा व्यवस्था कराने, कला संस्कृति भवन, प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी की व्यवस्था, सड़क निर्माण, अनुदानित दर पर सिलाई मशीन की उपलब्धता, महुई उपस्वास्थ्य केन्द्र को सुदृढ़ करने, राशि आवंटन की विसंगति को दूर करने सहित अन्य प्रकार के विषयों को समिति के समक्ष रखा। जिलाधिकारी ने माननीय सदस्यों से कहा कि सरकार एवं जिला प्रशासन द्वारा लगातार जनकल्याण के लिए कार्य किया जा रहा है। इस बैठक में प्राप्त प्रस्तावों, सुझावों का नियमानुकूल शत-प्रतिशत अनुपालन गंभीरता के साथ किया जायेगा। इस अवसर पर विधायक वीरेन्द्र गुप्ता, माननीय विधान पार्षद अफाक अहमद, भारतीय थारू कल्याण महासंघ, थारू विकास मंच, चम्पारण आदिवासी उरांव संघ के अध्यक्ष/सचिव एवं सदस्य अन्य सदस्यों के प्रतिनिधिगण सहित वन प्रमंडल पदाधिकारी, प्रभारी पदाधिकारी, समेकित थरूहट विकास अभिकरण, जिला कृषि पदाधिकारी, जिला कल्याण पदाधिकारी, महाप्रबंधक, जिला उद्योग केन्द्र, जिला पशुपालन पदाधिकारी सहित अन्य अधिकारी एवं कार्यपालक/कनीय अभियंता उपस्थित रहे।

गड्ढे में गिरा स्कार्पियो एक कि मौत 6 घायल

प्रात : किरण संवाददाता

चनपटिया(ए के सिंह)।लौरिया-बेतिया रोड के सिरिसिया अड्डा के समीप मंगलवार की रात्रि असंतुलित स्कार्पियो के सड़क किनारे पानी मे पलट जाने से स्कार्पियो सवार एक युवक की मौत हो गई और 6अन्य घायल हो गए।मृत युवक की पहचान सिरिसिया थाना क्षेत्र के एकरहिया निवासी राजेन्द्र महतो का लड़का आकाश कुमार के रूप में हुई है। वही घायलों में सिरिसिया थाना क्षेत्र के मचहा गांव निवासी चंदन कुमार कुशवाहा,पटखौली गांव निवासी दिपु कुमार ,सबेया गांव निवासी प्रशांत कुमार ,मौलनीया गांव निवासी संजय कुशवाहा, जिनवलीया गांव निवासी सुरज कुमार राम सामिल है।सभी घायलों का इलाज जीएमसीएच व निजी अस्पतालों में किया जा रहा है। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार स्कॉर्पियो नंबर बीआर 22 बी जे 6145 पर सवार होकर सभी लोग सबेय से अपने आपने घर जा रहे थे। सभी सबेय मे प्रशांत कुमार के यहां पूजा में शामिल होने के लिए आये थे।पूजा के बाद सभी अपने घर वापस जा रहे थे। तभी सिरिसिया अड्डा के समीप सड़क पार कर रहे नीलगाय को बचाने के क्रम में स्कार्पियो असन्तुलित होकर पलट गया और सड़क किनारे पानी मे चला गया। बुधवार की सुबह क्रेन से स्कार्पियो को गड्ढे से निकला गया। सिरिसिया पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि सुभाष साह ने बताया कि मृतक आकाश कुमार 5 भाई व एक बहन था। वह एलएनटी फाइनेंस कंपनी में काम करता था।वही थानाध्यक्ष मदन कुमार मांझी ने बताया कि परिजनों अभी तक लिखित शिकायत नहीं की है। शिकायत मिलते ही अग्रोतर कार्रवाई की जाएगी।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें
पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण
पटना, गुरूवार, 26 सितम्बर, 2024

दुगार्पूजा को लेकर थाना परिसर में शांति समिति की बैठक, गाइड लाइन अपनाने का निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

Samresh / Hindustan

काराकाट(रोहतास) : दुगार्पूजा को लेकर बुधवार को थाना परिसर में शाति समिति की बैठक की गई। जिसमे कई निर्णय लिये व निर्देश दिए गये। सदस्यों के बीच बिजली, स्वास्थ्य, पानी, साफ-सफाई, यातायात नियंत्रण, सीसीटीवी कैमरा, अग्नि सुरक्षा सहित महिलाओं के लिए विशेष सुरक्षा देने के बारे में चर्चा की गई। प्रशासन और सरकार की ओर से जारी गाइड लाइन अपनाने पर जोर दिया गया। अध्यक्षता नासरीगंज पुलिस इंस्पेक्टर कुणाल कृष्णा ने की और संचालन प्रभारी थानाध्यक्ष रोहित कुमार ने किया । मौके पर प्रखंड प्रमुख प्रतिनिधि नारायण पासवान भी मौजूद रहे। बैठक में स्थानीय जनप्रतिनिधि, दुगार्पूजा समिति के अध्यक्ष व सचिव, डीजे संचालक सहित दर्जनों शांति समिति के सदस्य व गणमान्य व्यक्तियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान प्रभारी थानाध्यक्ष द्वारा शांति पूर्वक व भक्ति भाव के साथ पूजा समारोह आयोजित करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि पूजा समिति को इस बात का ख्याल रखना होगा कि पूजा स्थल पर पंडाल व भीड़भाड़ वाले स्थान पर श्रद्धालुओं के आने और जाने के लिए उचित व्यवस्था होनी चाहिए। उन्होंने सरकार की ओर से जारी गाइड लाइन से अवगत कराते हुए कहा कि दुर्गा पूजा समिति को इसी गाइड लाइन के अनुसार दुर्गा पूजा समारोह आयोजित करना है। बैठक में दुगार्पूजा के दौरान विधि व्यवस्था बनाये रखने, निर्देश के अनुपालन के साथ ही पूजा का आयोजन करने, बीते वर्ष की तरह ही दुर्गा पूजा पर्व परंपरागत व शांतिपूर्ण तरीके से मनाने का निर्णय लिया गया। इस दौरान शांति समिति के सदस्यों की ओर से प्रशासन को कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये। प्रभारी थानाध्यक्ष की ओर से पूजा समिति के अध्यक्षों से लाइसेंस लेने, अग्नि सुरक्षा सहित सभी सुरक्षा के सभी मानकों का अनिवार्य रूप से पालन करने, सीसीटीवी कैमरा लगाने, प्रत्येक पूजा पंडाल में वोलेंटियर रखने के लिए थाना में सूची उपलब्ध कराने और नियमों व शर्तों का पालन करने को निर्देशित किया गया। प्रभारी थानाध्यक्ष ने कहा कि डीजे बजाने पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध रहेगा। उन्होंने कहा की पूजा के दौरान पूजा पंडाल व चिह्नित स्थानों पर मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में पुलिस बल की तैनाती रहेगी। अफवाह फैलाने वाले, असामाजिक व उपद्रवी तत्वों पर कड़ी नजर रखी जाएगी। उन्होंने कहा कि पुलिस पूरी तरह मुस्तैद रहेगी। उन्होंने उपस्थित लोगों से पुलिस का सहयोग करने की अनुरोध किया। मौके पर एसआई निशांत कुमार, भरत शाहनी, घनश्याम कुमार, मुखिया धर्मेंद्र साह, मुखिया सुनील सिंह, जेडीयू जिला महासचिव जयशंकर पटेल, अवधेश राम, कमिटी अध्यक्ष दिलीप कुमार, श्रीकान्त गिरी, राजू कुमार सिंह, रविन्द्र कुमार, राम बाबू सिंह, कुंदन पासवान सहित कई अन्य लोगों थे ।

बड़हरा विधानसभा क्षेत्र को बाढ़ प्रभावित क्षेत्र घोषित करने को लेकर जिला पार्षदों ने किया धरना प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा :बड़हरा विधानसभा क्षेत्र के आरा सदर, बड़हरा और कोईलवर प्रखंड के विभिन्न पंचायतों को बाढ़ प्रभावित क्षेत्र घोषित करने को लेकर आरा पश्चिमी के जिला पार्षद सह युवा राजद के प्रदेश महासचिव भीम यादव के नेतृत्व में जिला प्रशासन का पुतला दहन किया गया।

पुतला दहन के दौरान जिला पार्षद भीम यादव ने जिला प्रशासन पर आरोप लगाते हुए कहा कि बाढ़ जैसी विपदा में जिला प्रशासन का जनप्रतिनिधियों एवं आम जनता के साथ अमानवीय व्यवहार बेहद ही निंदनीय है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में लगातार निरीक्षण के दौरान पदाधिकारियों से अवगत कराना जनप्रतिनिधियों का कर्तव्य है और जनता के समस्याओं को निराकरण करना पदाधिकारियों का कर्तव्य है। लेकिन बाढ़ पीड़ितों को जिला प्रशासन एक नहीं सुना और मनमानी तरीके से सरकार के पैसे का दुरूपयोग करते हुए बाढ़ राहत के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति की गयी। कही भी राहत शिविर, मीडीकल टीम दिखाई नहीं दे रहा है, जिससे साबित होता है कि इस विपदा में जिला प्रशासन पुरी तरह विफल साबित हुआ हैं । जिला प्रशासन बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों को बाढ़ क्षेत्र घोषित करें, एवं बाढ़ पीड़ितों को उचित मुआवजा तत्काल दे नहीं तो दो दिनों के बाद बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के प्रखंड मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन करते हुए जिला मुख्यालय पर अनिश्चितकालीन आमरण अनशन किया जाएगा, जिसकी सारी जवाबदेही जिला प्रशासन की होगी। पुतला दहन कार्यक्रम में जिला पार्षद प्रतिनिधि हरीफन यादव, जिला पार्षद सोनू रजक, युवा राजद उपाध्यक्ष चलू यादव, छात्र राजद के पूर्व जिलाध्यक्ष अनुप मौर्य, विनोद सिंह, राजू यादव, अंकू, दिनेश, सत्येन्द्र चंद्रवंशी आदि थे

बाढ़ राहत घोटाले की जांच किया जाए: सुदामा प्रसाद

- शाहपुर, बडहरा, कोइलवर, आरा मुफ्फसिल को बाढ़ग्रस्त क्षेत्र घोषित करने और इससे सम्बंधित विभिन्न मांगों को लेकर भाकपा - माले ने दिया एकदिवसीय धरना

प्रात : किरण संवाददाता

आरा, शाहपुर, बडहरा, कोइलवर, आरामुफ्फसिल को बाढ़ग्रस्त क्षेत्र घोषित करने और इससे सम्बंधित विभिन्न मांगों को लेकर आज भाकपा - माले ने जिलाधिकारी के समक्ष दिया एकदिवसीय धरना दिया।

धरना में बाढ़ पीड़ित सैकड़ों लोग शामिल हुए और अपने मांगों के समर्थन आवाज बुलंद की।

सात सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल जिलाधिकारी से मिल निम्नलिखित मांगों का ज्ञापन सौंपा गया।

1 शाहपुर, बडहरा, कोइलवर, आरामुफसिल को बाढ़ग्रस्त क्षेत्र घोषित कर तत्काल युद्धस्तर पर राहत कार्य संचालित किया जाए.

2 शाहपुर के जवईनिया के विस्थापितों को 5 डिसमिल जमीन व पक्का मकान बनाकर मुहैया कराया जाये

3 जीविका सहित तमाम किस्म की सभी कर्ज माफ किया जाये

4 बाढ़ से क्षतिग्रस्त हुए मकान को मरम्मत कराया जाये.

5 बाढ़ खत्म होते हि तमाम किस्म की बीमारियों से बचाव के लिए बिलिचिंग पाउडर का छिड़काव और सभी पंचायतों में मेडिकल कैम्प की व्यवस्था किया जाये.

6 भू-धारी व बटाईदार किसानों को फसल छाती का मुआवजा और अगली फसल लगाने के लिए खाद बीज की व्यवस्था की गारंटी कि जाये.

7 बाढ़ क्षेत्र के लिए तैयार किए गए पारिवारिक सूची से बहुत से लोगों का नाम गायब है इस पारिवारिक सूची को ठीक किया जाए और छुटे हुए नामों को जोड़ा जाये.

8 बाढ़ से छतिग्रस्त हुए रोड़ो का मरम्मती कराया जाये.

9 अगली फसल आने तक पशु चारा उपलब्ध कराने कि गारंटी की जाये.

10 शाहपुर के जवनियां, नवरंगा, गंगापुर, भूसाहुला, दामोदरपुर, आरा मुफसिल के मणि राय का टोला में हुए गंगा नदी के भारी कटाव से प्रभावित हो रहे सभी गांवों को बचाव के लिए ठोकर बांध बनवाए जाये.

11. शाहपुर प्रखंड के गंगा तटीए इलाकों में जितने भी बांध है उनकी निर्माण के बाद लंबे समय से उन बांधों की मरम्मती नही हो पाई है और प्रति वर्ष बाढ़ आने से ये बांध कई जगहों पर ध्वस्त हो गए है अतः जिला प्रशासन बांधों की तत्काल मरम्मत करे ताकि आने वाले दिनों में बाढ़ जैसी आपदा से राहत पाया जा सके।

12. बाढ़ में जिन गरीबों का घर क्षतिग्रस्त हुआ उनको आवास मुहैया कराया जाए

भूमहीन मजदुरों को मनरेगा के अंतर्गत तत्काल काम दिया जाये

धरना को आरा सांसद सुदामा प्रसाद ने सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार एकतफ बाढ़ से लोगों को बचाने के लिए ठोस कदम नही उठाती है और जब बाढ़ आ जाती है तो राहत कार्य चलाने की खानापूर्ति करती है। जगह - जगह लोग का कहना है कि उनके पास राहत में कुछ भी नही पहुंचा। अधिकारी बोल रहें हैं सब कुछ दिया जा रहा है। इस लिए हमारी मांग है कि बाढ़ राहत घोटाले की जांच किया जाए और दोषी अधिकारियों पर कारवाई किया जाये।

धरना को राजू यादव - केंद्रीय कमिटी सदस्य, कयामुद्दीन अंसारी, राज्य कमिटी सदस्य , राजनाथ राम-आरा नगर प्रभारी, विष्णु ठाकुर - बड़हरा प्रभारी, अमित कुमार, बंटी-आइलाज, सुरेश राम, प्रभुनाथ राय, बड़हरा प्रखण्ड अध्यक्ष, राजद, ओमप्रकाश बिंद जिला अध्यक्ष, वीआईपी, विजय यादवपूर्व मुखिया, वकील यादव पूर्व मुखिया बड़हरा, होमगार्ड से अभ्यर्थियों संतोष कुमार रवि, लालजी बिंद वीआईपी, मुखदेव राम बोस,माले नेता, सुरेश राम बड़हरा बाढ़ पीड़ित सहित कई नेताओं ने सम्बोधित किया। धरना का अध्यक्षता - हरेंद्र सिंह- शाहपुर प्रभारी ने किया। संचालन दिलराज प्रीतम जिला कार्यालय सचिव माले ने किया

अयोध्या के वृंदावन प्रेम मंदिर में मां दुर्गा के दर्शन करेंगे भक्त

प्रात : किरण संवाददाता

- धनगाई के मां दुर्गा मंदिर में भक्तों की होती है मन्नते पूरी

बिक्रमगंज (रोहतास) जैसे-जैसे दुर्गा पूजा पर्व नजदीक आ रही है। वैसे वैसे शहर स्थित मां दुर्गा के पंडाल में कारगीर चार-चांद लगाने में जोरों से जुट गए हैं। जिसको लेकर बिक्रमगंज नगर परिषद के रजिस्ट्री ऑफिस धनगाई रोड स्थित मां दुर्गा मंदिर पूजन स्थल पर इस बार भक्त अयोध्या के वृंदावन प्रेम मंदिर पंडाल का प्रारूप देखेंगे। जिस पंडाल में मां अम्बे विराजमान रहेगी। जिसको लेकर भक्तों में काफी उत्साह देखने को मिल है। अवसर पर

पूजा समिति के अध्यक्ष राकेश कुमार लाली ने बताया कि 10 दिन पहले से पूजा पंडाल का निर्माण कार्य चल रहा है। इसकी तैयारी के लिए पश्चिम बंगाल से आये कारीगर दिन रात मेहनत कर भव्य रूप देने में लगें है। इस बार रजिस्ट्री ऑफिस धनगाई दुर्गा पूजा पंडाल की ऊंचाई 80 फुट और चौड़ाई 60 फुट के निर्माण कार्य में करीब 5 लाखों रुपये खर्च का हैं। इसके लिए समिति के सभी युवा सदस्य चंदा इकट्ठा करने में दिन रात लगे है। जिस पूजा पंडाल का निर्माण वृंदावन के प्रेम मंदिर के तर्ज भक्त दर्शन कर सकेंगे। इसके लिए विभिन्न प्रकार के डेकोरेशन सजावट की पूरी तैयारी जोरों पर है। ज्ञात हो कि रजिस्ट्री ऑफिस धनगाई स्थित मां दुर्गा की पूजा लगभग 40 साल से होती आ रही है। वही पूजा महोत्सव पर शाम को पूजा-अर्चना में भक्तों उमड़ जाती है। भक्तों की धारणा है कि इस स्थापित मां दुर्गा के मंदिर में लोगों की हर मनोकामना पूर्ण होती है। वही सप्तमी को मां के पट खुलते ही श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी पड़ती है। इस अवसर पर शहर के विभिन्न मंदिरों में भजन कीर्तन का भव्य आयोजन होता है। जहां श्रद्धालु बढ़ चढ़ कर भाग लेते हुए अपनी मन्नतें मांगते है। वही पूजा को लेकर दुर्गा पूजा समिति के सभी सदस्य अपने स्तर से सभी खामियां को पूरा करने में लगे हैं।

आरा सीओ का हो ट्रांसफर : लोजपा

पल्लवी कुमारी गुप्ता का आरा से ट्रांसफर नहीं हुआ तो आंदोलन होगा: राजेश्वर पासवान

प्रात : किरण संवाददाता

आरा:आरा सीओ पल्लवी कुमारी गुप्ता से जनता से जन प्रतिनिधि तक त्रस्त है।दाखिल खारिज,जमाबंधी,परिमार्जन को लेकर जनता तो पहले से ही परेशान है और आपदा बाढ़ में जिस तरह से पंचायत प्रतिनिधियों के साथ दुर्व व्यवहार की शायद आज तक कोई सीओ नही किया था। राजेश्वर पासवान जिला अध्यक्ष लोजपा रामविलास ने आरा सदर विधायक अमरेंद्र प्रताप सिंह का आभार प्रकट किया है जिन्होने जिला कार्यक्रम कार्यान्वयन समिति की बैठक में उपमुख्यमंत्री जी के समक्ष जनप्रतिनिधियों की मान सम्मान के लिए आरा सीओ की कमियों का उजागर किया है, जिस पर जांचोपरांत करवाई करने का आदेश दिया गया तथा आरा सलेमपुर मार्ग लोहापुल बड़की संदिया के निर्माण के सवाल पर जिला पदाधिकारी तनय सुल्तानिया ने जिला क्रियानावन्य समिति के अध्यक्ष एवम सदस्यों को बताया कि पुल निर्माण दिसंबर 2024तक हर हाल में होगा,नही होने पर संवेदक पर प्राथमिकी दर्ज कर करवाई की जायेगी।लोजपा रामविलास जिला अध्यक्ष राजेश्वर पासवान ने कहा कि जनता की हित में किसी तरह का समझौता नहीं होगा पहले जनता इसके बाद पार्टी उसके बाद गठबंधन है। अगर हमारी सरकार में भी कोई पदाधिकारी कर्मचारी जनता के हित की अनदेखी करेंगे उनके खिलाफ भी आंदोलन होगा। अगरआरा सीओ पल्लवी कुमारी गुप्ता का आरा से ट्रांसफर नहीं हुआ तो आंदोलन भी होगा।

राष्ट्रीय जनता दल के नेता रामबाबू सिंह ने बड़हरा प्रखंड में विभिन्न गांवों में किया राहत सामग्री वितरण

प्रात : किरण संवाददाता

भोजपुरः राष्ट्रीय जनता दल के नेता एवं बड़हरा विधानसभा प्रत्याशी अशोक कुमार सिंह उर्फ रामबाबू सिंह द्वारा बाढ़ पीड़ित लंगर चलाया जा रहा है जो बड़हरा के मटुक पंचायत साकेत होटल से हरी झंडी दिखाकर राहत सामग्री का रवाना किया गया साथ ही साथ जो भी बाढ़ पीड़ित है लोगों के बीच खाना पानी एवं बच्चों के बीच बिस्कुट वितरण किया जा रहा है वहीं दूसरी तरफ अशोक कुमार सिंह उर्फ राम बाबू सिंह कहना है कि जब तक बाढ़ का पानी कम नहीं होता है जब तक बाढ़ पीड़ितों को खाना पानी लंगड़ चलते रहेगा वहीं दूसरी तरफ गरीब आशाहे को जो भी हमसे मदद बनेगा हमेशा हम उनके लिए तैयार रहेंगे दूसरी तरफ रामबाबू पासवान प्रधान महासचिव कहना है कि जैसे ही पानी घट जाता है तो मेडिकल का टीम तैयार रहेगा जो उपस्थित रहे डॉक्टर रघुवंश प्रसाद पूर्व प्रदेश महासचिव राजद चातर के बड़हरा के प्रखंड अध्यक्ष मुखिया आदित्य रिजवी राजद नेता अशोक कुमार सिंह उर्फ रामबाबू सिंह बडहरा आदिब रिजवी राजद डॉ रघुवर प्रसाद पूर्व प्रदेश महासचिव राजद रामबाबू पासवान प्रधान महासचिव राजद बीरबल यादव जिला अध्यक्ष राजद निर्मल सिंह संजय सिंह पूर्व मुखिया चातर प्रभु कुमार प्रखंड अध्यक्ष बड़हरा सुभाष सिंह हंसराज सिंह पूर्व मुखिया वीरेंद्र सिंह महेंद्र सिंह पहलवान नथमलपुर आदि लोग उपस्थित थे

प्रगतिशील भोजपुरी समाज, आरा के द्वारा एक दिवसीय धरना

प्रात : किरण संवाददाता

आराः जे. पी. स्मारक रामना मैदान आरा मे प्रगतिशील भोजपुरी समाज की ओर से एक दिवसीय धरना का आयोजन किया गया, जिसका अध्यक्षता करते हुए प्रगतिशील भोजपुरी समाज के जिला अध्यक्ष मिथलेश कुमार सिंह ने कहा की भोजपुरी भाषा के संविधान के आठवीं अनुसूची मे नहीं जोड़ा जाता है तब तक यहाँ के लोगों का आर्थिक सामजिक एवं संस्कृतिक उत्थान नहीं हो सकता है !अपना मातृभाषा का विकास नहीं होने से से यहाँ के लोगों मे बौद्धिक बौनापन तथा मानसिक आर्थिक का शिकार होना पड़ता है !

अपनी मुख्य मांगो को लेकर उन्होंने जिला पदाधिकारी को एक ज्ञापन सौपा :-

मांग –

1.भोजपुरी भाषा को संबिधान के आठवीं अनुसूची मे जोड़ा जाए!

2.प्राथमिक से लेकर विश्व विद्यालय स्तर तक की पढ़ाई भोजपुरी भाषा के माध्यम मे की जाए!

3.सरकारी और गैर सरकारी सभी कार्यालयों मे सब कार्य भोजपुरी भाषा की किया जाए!

4.भोजपुरी क्षेत्र के सभी प्रकार की पत्र -पत्रिका एवं विज्ञापन का माध्यम भोजपुरी भाषा हो!

5.भोजपुरी क्षेत्र के सभी रेलवे स्टेशनो एवं बस पड़ाव मे उद्घोषणा भोजपुरी भाषा मे हो. दिल्ली सरकार के मैथिली भोजपुरी अकादमी सदस्य तथा भोजपुरी शोधछात्र रवि प्रकाश सूरज ने कहा कि भोजपुरी सरकारी उपेक्षा का शिकार बनी है, भोजपुरी की पढ़ाई के लिए विद्यालयों से विश्वविद्यालयों तक संसाधन नहीं हैं। शोधार्थी तथा भोजपुरी छात्र संघ के सह संयोजक सोहित सिन्हा ने बिहार की द्वितीय राजभाषा में भोजपुरी को शामिल किए जाने की मांग की। छात्र नेता अनिरुद्ध सिंह ने कहा कि आंदोलन ही अब राह बची है।

-तिलकधारी जी, ब्रमेश्वर जी, अश्वनी जी, राजेंद्र जी, और रवि प्रकाश जी, अनिरुद्ध जी, देशराज जी, सोहित सिन्हा जी, राधेश्याम जी आदि उपस्थित थे।

स्व कमल किशोर पाठक की प्रथम पुण्यतिथि मनी

प्रात : किरण संवाददाता

आराःहिंदू हृदय सम्राट रहे दिल से सबकी मदद करनेवाले स्व कमल किशोर पाठक की प्रथम पुण्यतिथि पत्नी काजल पाठक के नेतृत्व में शत्रुंजय विलास पैलेस मारुति नगर में मनाया गया। स्व पाठक विश्व हिंदू परिषद के विभाग सह मंत्री भोजपुर - बक्सर थे।श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित सभी ने उनके तैल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर चर्चा की। इस अवसर पर श्रद्धांजलि देनेवालों में आनंद कुमार ओझा, संगीता देवी,विकास कुमार ओझा,ज्योति देवी, ब्रजेश कुमार ओझा,पुष्पेंद्र कुमार,सुशील टाइगर,भाजपा प्रवक्ता नवीन प्रकाश,आकाश बजरंगी (बिहिया) रमेश मिश्र एवं उपेंद्र तिवारी, विश्व हिंदू परिषद, डा मदन मोहन द्विवेदी, चेतन मिश्रा जिला प्रचार प्रसार मृत्युंजय भारद्वाज कन्हैया प्रसाद रितिक रितिक राज विवेक राम टुनटुन राय विशाल ओझा धीरज सहित जिले सामाजिक कार्यकर्ता,व्यापारी आदि प्रमुख रूप से उपाथित थे।

बड़ी घटना को अंजाम देने से पहले भोजपुर पुलिस ने अपराधकर्मी को हथियार के साथ किया गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

आरा :भोजपुर पुलिस को एक बड़ी सफलता हाथ लगी है जिसमें गीधा थाना अंतर्गत बड़ी घटना को अंजाम देने से पहले ही चार अपराध कर्मियो को अवैध हथियार एवं जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार कर लिया है इसकी सूचना भोजपुर पुलिस अधीक्षक मिस्टर राज ने पुलिस कार्यालय में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए बताया की गुप्त सूचना के आधार पर गिद्दा थानांतर्गत ग्राम गिद्दा में उजाला कुमार उर्फ करण पासवान पिता कृष्णा राम उर्फ मडई पासवान के नए घर में कुछ अज्ञात लोगों का जमावड़ा लगा हुआ है जो किसी बड़ी घटना को अंजाम देने हेतु योजना बना रहे थे तभी सूचना मिलते ही थानाध्यक्ष गिधा के नेतृत्व में पदाधिकारी एवं थाना के सशस्त्र बलों के साथ उजाला कुमार के नवनिर्मित घर की छापामारी की गई जिसके क्रम में उनके घर से चार अपराध कर्मियों को अवैध हथियार चाकू चोरी के मोटरसाइकिल आदि के साथ गिरफ्तार किया गया है पकड़े गए अपराधियों ने अपने अपराध को कबूल किया है साथ ही गिद्दा थाना क्षेत्र के कायमनगर ठल922 पर दैनिक भास्कर अखबार के वाहन चालक जय सिंह से चार-पांच मोटरसाइकिल सवार अपराधी द्वारा हथियार के बल पर उनका मोबाइल और 500 लूट के घटना को अंजाम दिया गया था वही पकड़े गए अपराधियों के पास से एक देसी कट्टा एक पिस्टल जिंदा कारतूस छोटा चाकू और दो मोटरसाइकिल को बरामद किया गया है

एसडीएम ने किया 9 पीडीएस दुकानों की अनुज्ञप्ति रद्द

प्रात : किरण संवाददाता

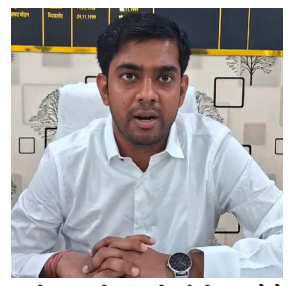

बिक्रमगंज । एसडीएम अनिल बसाक ने नगरपरिषद बिक्रमगंज सहित विभिन्न प्रखंडों के नौ पीडीएस दुकानों की अनुज्ञप्ति रद्द किए जाने का आदेश जारी किया है। एसडीएम ने बताया कि पिछले दिनों नगरपरिषद बिक्रमगंज, प्रखंड बिक्रमगंज के शिवपुर, संझौली के मझौली, राजपुर के पड़रिया, काराकाट के काराकाट, बेनसागर तथा दावथ के दावथ और सेमरी में पीडीएस दुकानों का औचक निरीक्षण किया गया था। जिसमें की अनियमितताएं पाई गई थीं । इन सभी पीडीएस दुकानदारों से स्पष्टीकरण की मांग की गई थी। इन लोगों द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण संतोषजनक नहीं होने पर इनकी अनुज्ञप्ति रद्द किए जाने का आदेश जारी किया गया है। उन्होंने बताया कि रद्द किए जाने वालों में नगरपरिषद बिक्रमगंज के वार्ड संख्या 23 के दुकानदार रामाधार राम, बैजन्ती देवी बिक्रमगंज प्रखंड के शिवपुर के रामनारायण राम, काराकाट प्रखंड के काराकाट के दीनदयाल मुसहर, बेनसागर के सत्येन्द्र कुमार सिंह, संझौली प्रखंड के मझौली के दिलीप कुमार गुप्ता, राजपुर प्रखंड के पड़रिया के विश्वनाथ राम, दावथ प्रखंड के दावथ के रामध्यान प्रसाद तथा सेमरी के उषा देवी शामिल हैं। इन सभी पीडीएस दुकानदारों पर खाद्यान्न का न्यूनतम वितरण, खाद्यान्न की कालाबाजारी करने तथा ई-केवाईसी में रूचि नहीं लिए जाने का आरोप है।

दुर्गा पूजा के दौरान डीजे बजाने पर रहेगा प्रतिबंध

संझौली(रोहतास)। स्थानीय संझौली थाना परिसर में बुधवार को सर्किल इंस्पेक्टर(बिक्रमगंज) शेर सिंह यादव व बीडीओ प्रभा कुमारी के नेतृत्व में बुधवार को आगामी दुर्गा पूजा के त्योहार को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में अधिकारियों ने कहा कि पूजा के दौरान सरकार के जारी सभी दिशा निदेशों का पालन करना होगा। इस दौरान डीजे पर पूर्ण प्रतिबंध होगा, और लाइसेंस पर निर्धारित रूटों पर ही ससमय जुलूस का आयोजन करना है। पूजा को सौहार्दपूर्ण और शांतिपूर्ण रूप से सम्पन कराने के लिए लोगों से पुलिस प्रशासन को सहयोग करने की भी अपील की। पूजा में किसी तरह का अफवाह फैलाने या शांति भंग करने वालों से कड़ाई से निपटा जाएगा। इसके लिए पुलिस अभी से ही सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने वालों को चिन्हित कर रही है। ताकि समय रहते आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जा सके। वहीं पूजा को शांतिपूर्ण सम्पन्न कराने के लिए उपस्थित पूजा समिति के सदस्यों ने भी अपना-अपना सुझाव दिया। मौके पर संझौली प्रखंड प्रमुख समीरचन्द, मुखिया मिथलेश सिंह, पैक्स अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह, जीप उपाध्यक्ष प्रतिनिधि प्रभात कुमार, मुखिया प्रतिनिधि सुनील कुमार गुप्ता, बीडीसी सदस्य मंटू कुमार उर्फ नरेन्द्र सिंह, उप प्रमुख प्रतिनिधि बरुण सिंह, पूर्व मुखिया हरेराम सिंह, बीडीसी सदस्य रबिन्द्र सिंह,समाजसेवी श्री भगवान सिंह, लव मिश्रा, जनार्दन सिंह आदि कई पूजा कमिटी के सदस्य मौजद थे।

एसडीएम ने किया आंगनबाड़ी केंद्रों का औचक निरीक्षण

बिक्रमगंज(रोहतास) : जिलाधिकारी रोहतास उदिता सिंह के निर्देश के आलोक में एसडीएम बिक्रमगंज अनिल बसाक ने नगरपरिषद बिक्रमगंज के वार्ड संख्या 11 और 26 में स्थित आंगनबाड़ी केंद्रों का औचक निरीक्षण किया। एसडीएम ने बताया कि निरीक्षण के दौरान काफी अनियमितताएं पाई गई है। जिसका रिपोर्ट जिलाधिकारी को भेज दिया गया है। उन्होंने कहा कि वार्ड संख्या 11 में स्थित आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 107 निरीक्षण के दौरान बंद पाया गया। वहीं वार्ड संख्या 26 में स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में 12 बच्चे उपस्थित थे जबकि उपस्थिति पंजी पर सभी 40 बच्चों की उपस्थिति बनाई गई थी।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती सेवा पखवारा कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) काराकाट विधानसभा के अंतर्गत बिक्रमगंज प्रखंड के घुसिया खुर्द शक्ति केंद्र पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती समारोह सह सेवा पखवारा का कार्यक्रम बड़े ही धूमधाम एवं श्रद्धा पूर्वक भारतीय जनता पार्टी ओबीसी मोर्चा के तत्वाधान में किया गया। जिसकी अध्यक्षता जिला अध्यक्ष नवीन चंद्र शाह ने की। कार्यक्रम का विधिवत शुरूआत पंडित दीनदयाल उपाध्याय के तैल चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर पुष्पांजलि अर्पित की गई। राष्ट्रीय गीत के पश्चात आए हुए सभी अतिथियों एवं सदस्यों को अंग वस्त्र एवं दुपट्टा डालकर सम्मानित किया गया। अपने अध्यक्षिये भाषण में नवीन चंद्र शाह ने सदस्य ग्रहण करने वालों को राष्ट्रभक्त देश प्रेमी एवं देश का सैनिक बताएं। भारत को केवल बाह्य आक्रमण से ही डर नहीं बल्कि आंतरिक देशद्रोहियों से डटकर मुकाबला करना है।

सता का भूखा विपक्ष कुछ भी कर सकता है। आतंकवादियों से भी हाथ मिला सकता है हां अपना देश सुन रहा इतिहास रच रहा है वहीं विपक्ष देश में अनावश्यक अफवाह का बीज बो रहा है। सारी दुनिया मोदी जी का कार्यकलाप से प्रभावित हो उनकी लोहा मानती है जबकि यहां का विपक्ष उपहास उड़ाने में ही अपना सारा समय व्यतीत कर रहा है। नकारात्मक सोच का दवा आम जनता के बीच में पिला रहा है। जबकि प्रधानमंत्री मोदी सारा संसार को अपना परिवार मानते। यही कारण है कि मोदी जी दुनिया के सबसे लोकप्रिय व्यक्ति हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं एकात्मक मानववाद की चर्चा की। कार्यक्रम के पश्चात विकासात्मक कार्यों को लेकर साहित्य का वितरण किया गया। 8800002024 पर मिस कॉल कर 50 सदस्यों ने सदस्यता ग्रहण की। कार्यकताओं ने देशभक्ति से ओतप्रोत नारे भी लगाए देश की रक्षा कौन करेगा हम करेंगे हम करेंगे बंदे वेद मातरम पंडित दीनदयाल उपाध्याय अमर रहे नरेंद्र मोदी जिंदाबाद। इस कार्यक्रम के शुभ अवसर पर पैक्स अध्यक्ष उज्जवल कुमार, संस्कृति प्रकोष्ठ के सह संयोजक राकेश शर्मा, वार्ड सदस्य नमेधारी पासवान, चंदन पासवान, मंडल मंत्री काशीनाथ पासवान, शक्ति केंद्र प्रमुख इंद्रदेव चौधरी, बुथ कमेटी सहित मुन्ना गुप्ता, अमरेंद्र चौधरी, श्री भगवान पासवान, सोनू चौधरी, बटेश्वर चौधरी, आलोक कुमार, पीतांबर गुप्ता इत्यादि। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ संपन्न हुआ।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण
पटना, गुरूवार, 26 सितम्बर, 2024

मणिपुर से 71 सदस्यीय दल जीविका परियोजना को समझने बोधगया पहुँचा

प्रात: किरण संवाददाता

बोधगया। मणिपुर राज्य से 71 सदस्यीय दल, जिसमें अधिकांश महिलाएं थीं जीविका परियोजना की कार्यप्रणाली को समझने के लिए बोधगया पहुँचा है। इस दल में मणिपुर राज्य के सामुदायिक संगठनों की महिलायें और 6 राज्य आजीविका मिशन के अधिकारी है। इस दल ने बोधगया के बारा पंचायत, चेरकी और झिकटिया जैसे विभिन्न गांवों का दौरा किया, जहाँ उन्होंने जीविका द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूहों की बैठकों में भाग लिया है। इस दौरान उन्होंने जीविका दीदियों के अनुभवों से सीखा और यह समझने का प्रयास किया कि जीविका के माध्यम से इन समूहों को किस प्रकार के लाभ मिले हैं और उनके जीवन में क्या सकारात्मक परिवर्तन आए हैं। दल ने स्वयं सहायता समूहों, ग्राम संगठनों, और संकुल संघों के कार्यों की गहन जानकारी प्राप्त की। बार पंचायत के कृष्णा जीविका महिला स्वयं सहायता समूह की विमला देवी ने बताया कि 2008 में उनके स्वयं सहायता समूह का गठन हुआ। समूह बनने से बचत करना सीखा। अपना बैंक में खाता खुला। रोजगार के लिए आसान ऋण मिलना आसान हुआ। जरूरत समय पहले महँगे 5 से 10% पर ऋण लेना पड़ता था। जीविका से बहुत कम ब्याज पर आसानी से ऋण मिलना आसान हो गया है। दीदियों ने ऋण से कई कार्य किए और अपना रोजगार भी किया है। खेती के समय और बीमारी जीविका समूह से मदद मिली। इसी प्रकार बारा की कपूर्वा देवी और क्रांति देवी ने भी उन्हें अपने गरीबी से संघर्ष और इसमें जीविका स्वयं सहायता समूह से लाभ के विषय मे बताया है। इस बैंक मित्र बबिता देवी एवं सामुदायिक फेसिलिटेटर रिंकू देवी ने जीविका दीदियों द्वारा विभिन्न मुद्दो पर चर्चा, ऋण, ऋण वापसी एवं बुक्स ऑफ रिकॉर्ड को किस प्रकार लिखा जाता है के विषय मे की जानकारी दी गई है। मणिपुर की टीम के सदस्यों में कई को अच्छी हिंदी आती थी।।जससे दोनों के बीच अच्छा संवाद हुआ है। मणिपुर की टीम ने कहा जीविका ने बिहार अच्छा कार्य किया है। मणिपुर में भी यहाँ के अनुभव से सीख कार्य करना चाहते हैं।टीम को दो समूहों में विभाजित किया गया और प्रत्येक समूह के लिए कक्षा सत्रों के साथ-साथ बोधगया का भ्रमण कराया गया है। इस भ्रमण कार्यक्रम में जीविका के प्रबंधक धर्मेंद्र कुमार एवं दिनेश कुमार, प्रशिक्षण अधिकारी प्रमोद कुमार एवं जय राम सिंह, बिपार्ड के पीजी एडमिन सूरज एवं सौरभ सहित अन्य लोगों ने भाग लिया है। गया के अतिरिक्त नालंदा में जीविका संचालन क्षेत्र में फील्ड एक्सपोजर भी रखा गया है। इन सत्रों के दौरान, प्रतिभागियों ने जीविका के कामकाज के बारे में गहन जानकारी प्राप्त की और फील्ड विजिट के माध्यम से वास्तविक अनुभव का लाभ मिलेगा। बिपार्ड में मणिपुर समुदाय और राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के कर्मियों लिए यह विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य जीविका परियोजना के विभिन्न पहलुओं जैसे कि सामुदायिक संस्थान निर्माण, वित्तीय समावेशन, आजीविका, भोजन, पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता आदि विषयों पर समझ और जानकारी प्रदान करना है।

शिक्षक हुए निलंबन मुक्त,छात्रों में खुशी की लहर

प्रात: किरण संवाददाता

हाल ही में ज़िले के कुर्था प्रखंड अंतर्गत मानिकपुर हाई स्कूल के तीन शिक्षकों को अनुशासनहीनता के आरोप में निलंबित कर दिया गया था,बताया जाता है कि ग्रामीणों द्वारा अरवल ज़िला शिक्षा पदाधिकारी बिंदु कुमारी को लिखित में शिकायत दर्ज करायी गई थी ,जिसमें विद्यालय में कार्यरत बीपीएससी शिक्षक धनंजय कुमार ,रंजन कुमार और चंदन कुमार पर छात्रो के साथ गलत व्यवहार का ज़िक्र किया गया था,तत्काल कुर्था प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी परमानंद के नेतृत्व में कमिटी गठित कर प्रथम द्दष्टया जाँच कर तीनों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर शिक्षको को कलेर प्रखंड में गैर शैक्षणिक कार्यों में लगा दिया गया था। लेकिन जब इस घटना की जानकारी विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्रो को हुई तो सभी ने अपने अभिभावक के साथ तात्कालिक अरवल ज़िला पदाधिकारी वर्षा सिंह से मिलकर शिक्षकों पर लगे सारे आरोप को मनगढ़त,पूर्वाग्रह,दुर्भावना से ग्रसित बताया छात्रो ने अरवल डीएम के समक्ष अपने शिक्षकों को न केवल प्रतिभावान बल्कि अनुशासनप्रिय बताया सभी ने एक स्वर में कहा कि इन शिक्षकों के आने से विद्यालय के शैक्षणिक कार्यों में बेहतरी बदलाव आया जिसके कारण विद्यालय के नामांकन प्रतिशत में वृद्धि भी हुई है ,इन सभी चीजो के देख कर कुछ नाम मात्र के असामाजिक व पूर्वाग्रही लोगो ने शिक्षकों को यहाँ से हटाने के मंशा से उन सभी संगीन आरोप लगाए है ,ज़िला पदाधिकारी ने छात्रो को आश्वासन देते हुए पुनः जाँच उपरांत निलंबन मुक्त करने की बात कही थी, आज लगभग एक माह बाद तीनों शिक्षकों को निलंबन मुक्त करते हुए पुनः शैक्षणिक कार्य के लिए विद्यालय में जुड़ने का आदेश निर्गत कर दिया गया है ।इस बाबत शिक्षक धनंजय कुमार ने बताया कि झूठ कितना भी पाव पसार ले अंतिम में विजय सत्य की ही होती है ,वास्तव में असामाजिक तत्व शिक्षा के दुश्मन है ,उन्हें डर है कि अ से अनार पढ़ने वाले बच्चे एक दिन अ से अधिकार माँगने लगेगे,उन्होंने अभिभावक व छात्रो को विशेष तौर पर धन्यवाद व्यक्त किया कहा कि उन्हीं के सफल प्रयासों से आज सच सब के सामने जग जाहिर हुआ है।

अरवल पुलिस द्वारा स्वयं के अपहरण की झूठी कहानी रखने वाले व्यक्ति को किया बरामद

प्रात: किरण संवाददाता

अरवल। अरवल पुलिस द्वारा स्वयं के अपहरण की झूठी कहानी रखने वाले व्यक्ति को बरामद किया गया अरवल डीएसपी कृति कमल ने बताया कि 24 सितम्बर को समय करीब 12 बजे मनोज कुमार भारती , घर -बदोपुर, थाना-किंजर, जिला-अरवल अपने परिजनों के साथ किंजर थाना पर आये और बताये कि उनके पुत्र अनय राज अपने मित्र प्रिंस कुमार के मोबाईल पर मैसेज किया है कि अतौला बाजार गये थे, जिन्हे अज्ञात व्यक्ति काला स्कार्पियो पर बैठाकर अरवल के तरफ ले गया है। प्राप्त सूचना का सत्यापन कर अग्रतर कार्रवाई करने हेतु पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र कुमार भील के निदेशानुसार अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी कृति कमल के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। टीम द्वारा वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार पर पता लगाया गया कि अनय कुमार ट्रेन से जहानाबाद के रूट से पटना जा रहा है। टीम पटना पहुंचकर जकनपुरा थाना के सहायोग से रुकनपुरा से उसके दोस्त रौशन कुमार के डेरा से बरामद कर लिया गया। अनय राज से पूछ-ताछ करने पर बताया कि उसने परिवारिक कलक के कारण अपने माता-पिता एवं परिजनो को परेशान करने के उद्देश्य से स्वयं ही अपने मोबाईल से दोस्त को अपहरण का झूठा मैसेज किया था। बरामद युवक गोवर्धन कुमार उर्फ अनय राज, पिता-मनोज कुमार, घर-बहादुरपुर, थाना-किंजर, जिला-अरवल का निवासी है छापेमारी टीम में शामिल अनुमडल पुलिस पदाधिकारी कृति कमल, किंजर थानाध्यक्ष दरबारी चौधरी,परि०पु०अ०नि० मोनाली कुमारी, स०अ०नि० संजय कुमार,सि० अंकित कुमार, सि० रितेश कुमार,सि० कन्हाई कुमार, सि० श्रवण कुमारशामिल थे ।

जिला विधिक सेवा प्राधिकार के निर्देश पर मिथिला पेन्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

अरवल। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष सह जिला एवं सत्र न्यायाधीश ब्रजेश कुमार एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव रंजीत कुमार के निर्देश पर इंटर स्तरीय उच्च विद्यालय उमैराबाद में लीगल लिट्रेसी क्लब के तहत ऑन स्पोट् मिथिला पेन्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया ।इस मौके पर पैनल अधिवक्ता डॉ राजेश चन्द्रा एवं पारा लीगल वोलेंटियर विरेन्द्र कुमार छात्र-छात्राओं को मिथिला पेंटिंग के बारे में विस्तार से बताया। लीगल लिट्रेसी क्लब के प्रभारी शिक्षक सिम्पू कुमार,विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक आशुतोष कुमार, प्रशांत कुमार मिश्रा ने बताया मिथिला पेन्टिंग बिहार को गौरवान्वित करती है। बिहार ही नही पूरे देश में मिथिला पेन्टिंग की अपनी अलग पहचान है। वही उपस्थित छात्र छात्राओं को जिला विधिक सेवा प्राधिकार के कार्यों सहित लोक अदालत के बारे में बताया गया। अधिवक्ता ने बताया कि जिले में पांच विद्यालयों का चयन लीगल लिट्रेसी क्लब में किया गया है जिसमे यह विद्यालय भी शामिल है। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा तय किये गए समय सारणी एवं टॉपिक पर विद्यार्थियों को कानून की जानकारी दी जाती है जिसमे आज मिथिला पेन्टिंग शामिल है।

एम एड प्रशिशुओं ने सीखे कला आधारित शिक्षण के गुर

प्रात: किरण संवाददाता

गया। शिक्षाशास्त्र विभाग गया कॉलेज गया में दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय के एम एड प्रशिक्षुओं ने कला आधारित शिक्षण पर आयोजित कार्यशाला में हिस्सा लिया है।प्राचार्य डा सतीश सिंह चंद्र के दिशानिर्देश पर इस कार्यशाला का आयोजन किया गया है। विभाग अध्यक्ष शिक्षाशास्त्र विभाग डॉक्टर धनंजय धीरज ने कार्यशाला में अपने विचार रखते हुए कहा कि आज का समय नवाचारी शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग कर शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को संपन्न करने का है और ऐसे में कला आधारित शिक्षण एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। कला आधारित शिक्षण का प्रयोग विज्ञान सामाजिक विज्ञान एवं भाषा शिक्षण से लेकर अन्य सभी विषयों के शिक्षण अधिगम में समान रूप से लाभकारी है। जटिल से जटिल अवधारणाओं को कला एवं शिल्प के माध्यम से कक्षा कक्ष में सरलीकृत कर प्रस्तुत किया जा सकता है इतना ही नहीं विद्यार्थियों के अंदर विभिन्न कलाकृतियों के निर्माण का कौशल भी विकसित होता है। साथ ही साथ सृजनात्मक का भी विकास होता है। कल आधारित शिक्षण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि बच्चों की प्रतिभा एवं उनके अंदर छुपे हुए सृजनात्मक को अभिव्यक्त करने का समुचित अवसर भी प्रदान करता है। कला आधारित शिक्षण प्रारंभिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए महत्व उपयोगी है।यह विधि हमारे नवीन ज्ञान को हमारे प्राचीन परंपराओं से जोड़ती है।आज की कार्यशाला का आयोजन इसी संदर्भ में किया गया था साधन सेवी के रूप में शिक्षाशास्त्र विभाग के सहायक प्राध्यापक अजय शर्मा ने कहा की विद्यालय स्तर पर कला शिक्षण समय की मांग है और प्रारंभिक स्तर पर खिलौनों एवं कठपुतलियों के मध्यम से शिक्षण अधिगम सर्वाधिक प्रभावी है। इस मौके पर शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक अमरेंद्र कुमार डा अभिषेक कुमार डा सदरे आलम आदि उपस्थित थे।

उच्चकों ने डिक्की से उड़ाए 50 हजार रुपये

प्रात: किरण संवाददाता

शेरघाटी। शहर के गोला बाजार स्थित प्रोजेक्ट कन्या स्कूल मोड़ के निकट संगम इंटरप्राइजेज के पास खड़े एक बाइक के डिक्की से चोरों ने 50 हजार रुपये। मालूम हो कि शेरघाटी शहर के चलते-फिरते शहर दो चोरों ने एसबीआई बैंक से पैसा निकासी कर बकाए के राशि जमा करने आए मायापुर निवासी मोहम्मद अकबर हुसैन के दोपहिया वाहन के डिक्की खोलकर उसमें रखे रुपए चोरी कर भागने में सफल रहा।

उक्त घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है पीड़ित व्यक्ति ने बताया कि शहर के स्टेट बैंक से पैसे निकासी कर बकाया राशि जमा करने के लिए आया था।

तभी हिसाब देखने लगा देखने के बाद जब अपना गाड़ी से पैसे निकालने गया तो देखा की गाड़ी का डिक्की खुला हुआ है, और पैसा,पर्स, एटीएम, आधार कार्ड समेत अनावश्यक कागजात भी गायब है।

घटना की जानकारी मिलते ही पहुंचे शेरघाटी थाना अध्यक्ष अजीत कुमार ने मामले को गंभीरता से लेते हुए छानबीन शुरू करनी है थाना अध्यक्ष ने बताया कि आसपास में लगे सीसीटीवी एवं बैंक में लगे सीसीटीवी कैमरे को भी देखी जा रही है।

हिंदी दिवस पाक्षिकोत्तर कार्यक्रम के नौवें दिन अरविंद अकेला के रचनाओं पर संवाद

प्रात: किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद की महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्था जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में हिंदी दिवस पाक्षिकोत्तर कार्यक्रम के नौवे दिन स्वतंत्र पत्रकार,कवि एवं लेखक अरविंद अकेला के साहित्यिक परिवृत पर संवाद का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह, उपाध्यक्ष डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्र, महामंत्री धनंजय जयपुरी के आह्वान पर संस्था के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने संवाद करते हुए बताया कि अरविंद अकेला की कर्मभूमि और कार्यक्षेत्र औरंगाबाद रही है।औरंगाबाद जिले से उन्होंने शिक्षा दीक्षा ग्रहण किया और स्वतंत्र पत्रकारिता करते हुए पूरे बिहार में औरंगाबाद का नाम रौशन किया।आओ मतदान करें,प्रेम मंजरी,तन्या,नवधा भक्ति,श्रृंगार सौरभ, शांतिदूत, मेरा वतन मेरे वीर,कस्तूरी तिलक,एक गुंजती आवाज,उनकी प्रकाशित साझा संकलन की रचनाएं हैं। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में उनकी सैकड़ो रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं।पांच दर्जन से भी अधिक साहित्यिक सम्मान एवं पुरस्कार मिल चुके हैं।राजकीय,राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उन्हें सम्मानित किया जा चुका है। अकेला जी की रचनाएं सारगर्भित होती हैं।अपनी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक मुद्दो को केंद्रीभूत कर पाठकों के सामने पहुंचाते हैं।कम शब्दों में बड़े से बड़े मुद्दों को वे संजोकर साहित्यिक भाषा में परोसने का कार्य करते हैं। हिंदी भाषा उनके कारण विकसित हुई।लोगों ने हिंदी को जानने समझने के लिए उनकी रचनाओं को माध्यम बनाया। आज के परिवेश में उनके कारण हिंदी भाषा का बहुत ही विकास हुआ है। झारखंड प्रदेश से निकलने वाली राष्ट्रीय नवीन मेल में भी वे उप संपादक का कार्य कर चुके हैं हिंदी साप्ताहिक उत्तर बिहार में भी उनकी पत्रकारिता हमेशा गूंजायमान रहती थी। दिव्य रश्मि, चौथी वाणी में जिला संवाददाता के रूप में अभी वे कार्य करते हुए साहित्यिक धारा से लोगों को जोड़ने का प्रयास करते हैं।ऑनलाइन कवि सम्मेलनों में भी उनकी प्रमुख भूमिका होती है।नए-नए रचनाकारों की रचनाओं को वे परिष्कृत कर आमजन के लिए सुलभ कराते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना के 55 में स्थापना दिवस के अवसर पर स्वच्छता ही सेवा अभियान चलाया गया

प्रात: किरण संवाददाता

गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के 55 में स्थापना दिवस के अवसर पर गया कॉलेज के प्रधानाचार्य प्रो डॉ सतीश सिंह चंद्र के द्वारा स्वच्छता कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया जिसमें गया कॉलेज कैंपस के अंदर सिंगल यूज प्लास्टिक पर जागरुकता अभियान और स्वच्छता ही सेवा अभियान चलाया गया है ।राष्ट्रीय युवा एवं खेल मंत्रालय ,भारत सरकार के द्वारा 17 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर तक स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। जिसके अंतर्गत गया कॉलेज के द्वारा पितृपक्ष मेला क्षेत्र में इसके पूर्व भी अभियान चलाया गया और प्रतिदिन गया कॉलेज के स्वयंसेवक प्रेतशीला क्षेत्र और विष्णुपद मंदिर क्षेत्र में रोजाना स्वच्छता अभियान चला रहे हैं। कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ राजेश कुमार मिश्रा ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा की स्वच्छता एक प्रकार की सेवा है और स्वच्छता के द्वारा हम बहुत सारी बीमारियों का निदान कर सकते हैं। एक अच्छा वातावरण स्थापित करके हम अपने परिसर को साफ सुथरा रखकर बहुत सारी बीमारियों से रोकथाम कर सकते हैं। यह स्वच्छता अभियान निरंतर जारी है इसमें कॉलेज की छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया सैकड़ो की संख्या में छात्रों ने भागीदारी कर स्वच्छता अभियान का कार्यक्रम चलाया है। स्वच्छता अभियान में यूनिट 2 के कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ रवि कुमार ने भी बच्चों के साथ मिलकर स्वच्छता अभियान चलाया है।

रामाबांध के रिशु सिंह एवं बरौली के अंजनी सिंह के निधन पर पृथ्वीराज ट्रस्ट ने शोक व्यक्त किया

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद की महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था पृथ्वीराज चौहान चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पृथ्वीराज सभागार के प्रांगण में पिछले सप्ताह रामाबांध निवासी रिशु कुमार सिंह एवं बारुण प्रखंड के बरौली ग्राम निवासी अंजनी कुमार सिंह के आकस्मिक निधन पर ट्रस्ट के सदस्यों ने शोक व्यक्त किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष राघवेंद्र प्रताप नारायण सिंह की अध्यक्षता में आयोजित शोकसभा में अश्रुपुरित नेत्रों से दोनों ही युवाओं को श्रद्धांजलि देते हुए सदस्यों ने कहा कि उन दोनों के आकस्मिक निधन से सामाजिक क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है। दोनों ही युवा सामाजिक क्षेत्र में हमेशा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया करते थे। कर्मठी एवं मिलनसार व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे। सामाजिक गतिविधियों में उनकी सहभागिता बराबर रहती थी। सचिव स्वर्णजीत कुमार सिंह, उपाध्यक्ष प्रोफेसर ज्ञानेश्वर प्रसाद सिंह एवं डॉ संजीव रंजन कोषाध्यक्ष विकास कुमार सिंह, संयोजक जगदीश सिंह,वरीय सदस्य जे एल एन कॉलेज डेहरी के प्राचार्य प्रोफेसर विजय कुमार सिंह,रामप्रवेश सिंह, प्रसिद्ध ज्योतिर्विद शिवनारायण सिंह, चंद्रप्रकाश विकास सरपंच संघ के प्रांतीय अधिकारी रविंद्र कुमार सिंह, जयंत प्रकाश, चंदन सिंह चौहान अभिषेक सिंह मीडिया प्रभारी सुरेश विद्यार्थी सहित अन्य सदस्यों ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि इस संकट की घड़ी में ईश्वर उनके परिवार को संबल प्रदान करें।

चाणक्या कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट के क्षेत्र में बेहतर अवसर

प्रात: किरण संवाददाता

गया के ए पी कॉलोनी स्थित, चाणक्या कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट के क्षेत्र में बेहतर अवसर। चाणक्या कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट के डायरेक्टर, डॉ अमित कुमार ने बताया कि हमारे पास मुख्य रूप से दो तरह के कोर्स कराया जाता है। जिसमे बीबीए और एमबीए हैं। बैचलर इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में आपको, थ्योरी और प्रैक्टिकल दोनों की शिक्षा दिया जाता है।वहीं मास्टर इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में थ्योरी, प्रैक्टिकल और इंटर्नशिप की भी सुविधा प्रदान की गई है। संस्था के डायरेक्टर डॉ कुमार ने बताया कि पिछले साल में, 35 बच्चों ने हमारे संस्थान से कई एम एन सी कंपनियों जैसे - विप्रो, आईबीएम, टेक महिंद्रा, टीसीएस एवं अन्य में कार्य के लिए अवसर प्रदान किया गया है। वहीं चाणक्या कॉलेज आफ मैनेजमेंट के डायरेक्टर ने बताया कि, हमारे पास गरीब एवं मेधावी छात्रों के लिए, निःशुल्क शिक्षा भी प्रदान किया जाता है. गया वासियों से अपील किया है कि, अगर किसी भी कोर्स में दाखिला लेते हैं तो, उन्हें एडमिशन चार्ज के साथ-साथ, इंस्टॉलमेंट की भी सुविधा दी गई है। इस तरह कि सुविधा होने से पढ़ने वाले, गरीब बच्चों की सुविधा प्रदान हो सके।

डीएम ने डेंगू रोकथाम को लेकर नगर परिषद एवं स्वास्थ्य विभाग के साथ बैठक किया

अरवल । समाहरणालय परिसर में जिला पदाधिकारी कुमार गौरव की अध्यक्षता में जिले में डेंगू के रोकथाम के लिए नगर परिषद एवं स्वास्थ्य विभाग के साथ बैठक आयोजित की गई। जिला पदाधिकारी द्वारा नगर परिषद को रोस्टर बनाकर फॉगिंग कराने हेतु निदेशित किया गया। जिला पदाधिकारी द्वारा संबंधित विभाग को प्रत्येक वार्ड, सदर अस्पताल एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में सप्ताह में तीन दिन छिड़काव करने हेतु निदेशित किया गया। एन्टी लार्वा के छिड़काव के लिए नहर एवं जलाशय के किनारे तथा बसावटों में छिड़काव करना सुनिश्चि करेंगे। डीपीएम स्वास्थ्य विभाग को डेंगू से संबंधित प्रचार प्रसार करने हेतु निदेशित किया गया साथ ही जिले में ठरक्ए,र किट, फ्ळ्ळ किट, सरकारी अस्पतालों में डेंगू मरीजों के उपचार हेतु बेड की संख्या, फॉगिंग मशीन आदि से संबंधित जानकारी ली गई। मौके पर कार्यपालक पदाधिकारी नगर परषिद, सिविल सर्जन, विशेष कार्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी ने कल्पना सोरेन का किया भव्य स्वागत

गया । मंईयां सम्मान यात्रा मंगलवार को गढ़वा पहुंची इस दौरान मंत्री बेबी देवी, दीपिका पांडे सिंह के साथ साथ झामुमो विधायक कल्पना सोरेन व कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी के सचिव विकास कुमार माली यात्रा में शामिल थे। यात्रा के गढ़वा पहुंचते ही विकास कुमार माली के साथ बड़ी संख्या में मौजूद कार्यकर्ताओ ने भव्य स्वागत किया है। पैदल से हजारों कार्यकर्ता, मंत्रियों व विधायक की अगवानी कर पैदल शहर होते कार्यक्रम स्थल पहुंची। इस संस्था के कार्यालय के पास पहुंचते ही बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं ने मंईयां सम्मान यात्रा का भव्य स्वागत किया है। इस मौके पर संस्था के जिला प्रबंधक अयूब खान उर्फ बबन, टिंकू

अंतरराष्ट्रीय दुसांध महासंघ ने नवादा मांझी परिवार को प्रशासन से निष्पक्ष जांच की मांग

अंतर्राष्ट्रीय दूसाध महासंघ के अध्यक्ष इंजिनियर हेमन्त कुमार महासंघ टीम के साथ नवादा जिला के ददौरी गाँव में जाकर घटना स्थल का निरिक्षण किया जहां कुछ मांझी परिवार का घर अज्ञात लोग के द्वारा जला दिया गया है अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष ई हेमंत कुमार सर अपने जाँच टीम के साथ दोनों परिवार वाले से मिले और जानकारी प्राप्त किए जानकारी के अनुसार पता चला कि नंदु पासवान जी को गलत फंसाया जा रहा है जबकि मांझी परिवार नंदु पासवान जी के जमीन को कब्जा करना चाहते थे संगठन के माध्यम से नवादा जिला प्रशासन से माँग करते हुये कहा की उच्च स्तरीय जांच हो और निर्दोष लोग को नहीं फंसाया जाएं ।संगठन के सचिव मुद्रिका पासवान, अशोक प्रसाद भारती,बिहार प्रदेश सचिव अभिराम पासवान, कार्यकारणी सदस्य बिरेन्द्र कुमार,मीडिया प्रभारी विपिन कुमार पासवान सभी शामिल हुए हैं।

नीतीश मिश्रा ने कृषि मंत्री को किसान भवन हेतु पत्र लिखा : राहुल रंजन

प्रात: किरण संवाददाता

गया। बिहार सरकार के पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा ने बिहार के कृषि मंत्री मंगल पांडे को पत्र लिखकर गया जिला मुख्यालय पर किसान भवन बनाने हेतु पत्र लिखा - विकास पुरुष पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा ने भाजपा किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष एवं बिहार सरकार जिला कार्यान्वन समिति के सदस्य राहुल रंजन के किसान भवन निर्माण के मांग को स्वीकार करते हुए प्रमंडल के जिला मुख्यालय गया में आधुनिक सुविधा से सुसज्जित किसान भवन बनाने हेतु मांग को स्वीकार किया ।इस किसान भवन से किसानों को बड़ा लाभ होगा इस किसान भवन में किसानों के सुविधा हेतु किसान हेल्प डेस्क काउंटर की उपलब्धता रहेगी जहाँ से किसान बिहार सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना की जानकारी ले सकेंगे। इस भवन में किसानों के लिए निम्न दर पर बता अनुकूलित कमरे की व्यवस्था होगी। इस किसान भवन में किसानों को बैठक करने हेतु अत्याधुनिक सुविधा से लैस किसान सभागार की व्यवस्था होगी जहां एक साथ हजारों किसान बैठकर अपनी बैठक करेंगे। इस किसान भवन में किसानों के लिए उत्तम भोजनालय एवं कैंटीन का सुविधा उपलब्ध होगा जहां किसानों द्वारा उपज किए हुए देसी भोजन का उत्तम प्रबंध होगा। किसान भवन के स्वीकार करने से मगध के किसानों में अपार खुशी का माहौल है इसके लिए किसान नेता बिहार सरकार के कृषि मंत्री मंगल पांडे बिहार सरकार के एवं गया जिला के प्रभारी मंत्री नीतीश मिश्रा जी को एवं बिहार के एसएससी मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी को पत्र लिखकर धन्यवाद ज्ञापन किया एवं राहुल रंजन यादव ने कहा मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है गया जिला का किसान भवन किसान विश्राम गृह भवन हरियाणा एवं चंडीगढ़ के तर्ज पर बनेगा जहां किसानों को सारी सुविधाएं मुहैया होगी किसान जब अपना फसल का बिक्री करने हेतु शहर आएंगे या प्रमंडलीय मुख्यालय आएंगे तो उन्हें किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होगी एवं गया जिला पर्यटक स्थल है जहां देश एवं विदेश से हजारो किसान भाई एवं सैलानी गया भ्रमण हेतु आते हैं इस भवन से आम जनमानस को भी काफी लाभ मिलेगा। राहुल रंजन ने कहा यह विकास का कार्य एनडीए गठबंधन एवं भारतीय जनता पार्टी के लोगों से ही संभव है आज भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जयंती के मौके पर ऐसी खुशी का सूचना किसान भाइयों के लिए किसान विश्राम गृह का अनुमोदन होना पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सपनों को साकार करने जैसा है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंतोदय के जनक माने जाते हैं उनका सोच रहा है उनके विचार रहे हैं गांव के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाना इस किसान भवन से गांव के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचने जैसा संभव होता है।

दिनदयाल उपाध्याय ने हमेशा समाज के गरीब और पिछड़े वर्गों के उत्थान की बात की

प्रात: किरण संवाददाता

गया। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के सह प्रभारी डॉक्टर मनीष पंकज के नेतृत्व में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का 108वि जयंती किसान मोर्चा कार्यालय में आहूत की गई है सर्वप्रथम उनके चित्र पर माला पुष्प चढ़ा कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया साथी साथ भाजपा के राष्ट्रीय स्तर पर सदस्यता दीनदयाल उपाध्याय के जयंती पर लगभग सैकड़ो की संख्या में सदस्यता दिलाया गया है ।इस अफसर पर डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा ने कहा पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर 1916 को उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में हुआ था। वे एक महान विचारक, समाजसेवीऔर भारतीय राजनीति के महत्वपूर्ण शख्सियत थे। उपाध्याय नेभारतीय समाज के विकास के लिए एकात्म मानववाद का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जो समाज की समग्रता औरमानव कल्याण पर केंद्रित था।

उपाध्याय ने हमेशा समाज के गरीब और पिछड़े वर्गों के उत्थान की बात की। उन्होंने ग्राम सम्पर्क योजना के तहत ग्रामीण विकास के लिए कई पहल कीं। उनका उद्देश्य था कि भारत को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाया जाए। उनकी सोच ने भारतीय राजनीति को एक नई दिशा दी,जहां राष्ट्रवाद और समाजवाद का समन्वय किया गया है। उन्होंने भारतीय संस्कृतिको पश्चिमी प्रभाव से बचाने के लिए हमे संघर्ष किया गया है। दीनदयाल उपाध्याय का योगदान केवल राजनीति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने शिक्षा, संस्कृति औरसमाजिक न्याय के क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। उनकी जयंती पर हमें उनके विचारों को अपनाने और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाने की प्रेरणा लेनी चाहिए। उनकी विरासत आज भी हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत बनी हुई है। उनके सिद्धांतों का अनुसरण करके हम एक समृद्ध और सशक्त समाज की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। आज उनके जयंती 'पर श्रद्धा सुमन अर्पित करने वालों में भाजपा जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता डॉ विकास राय अजय भट्टाचार्य अरुण कुमार सिंह आर पी दत्त के आलम नूपुर वर्मा एन के सिंह पीके सिंह आर बी पांडे एस एस सिंह रोशन कुमार रूपा भंडारी मंटू कुमार महेश यादव बबलू गुप्ता सहित अन्य शामिल हुए हू

बिहार सरस मेला में 28 लाख 84 हजार से अधिक की राशी के उत्पादों एवं व्यंजनों की खरीद-बिक्री हुई

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। बिहार सरस मेला अब समापन की ओर रुख कर चुका है ' पिछले तमाम खरीद-बिक्री के आंकड़ो में उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए बिहार सरस मेला का समापन 27 सितंबर की शाम को होगा ' लिहाजा शिल्प, लोक कला, संस्कृति, परंपरा और स्वाद के कद्रदान सरस मेला के विभिन्न स्टॉल्स से जमकर खरीददारी कर रहे हैं ' हर उम्र और हर तबके के पसंद के हस्तशिल्प , उत्पाद एवं व्यंजन बिहार सरस मेला में प्रदर्शनी सह बिक्री के लिए प्रस्तुत है ' समापन शुक्रवार को है लिहाजा लोग खरीददारी का कोई मौका चूकना नहीं चाहते हैं ' उनके पसंद की हर वस्तु एक ही प्रांगण में मौजूद है' बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, जीविका (ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार) के तत्वाधान में बिहार सरस मेला ज्ञान भवन, पटना में 18 सितंबर 2024 से जारी है ' 7 दिनों में लगभग 2 करोड़ 34 लाख रुपये के उत्पादों एवं व्यंजनों की खरीद-बिक्री हुई है '

देश के विभिन्न राज्यों से आये ग्रामीण उद्यमी अपने क्षेत्र की कला-संस्कृति तथा हस्तशिल्प का प्रदर्शन सह बिक्री कर रहे हैं ' बिहार के मिथिलांचल की ओर से मधुबनी चित्रकला, सिक्की कला और मखाना, भागलपुर से सिल्क से बने मनोरम परिधान, कैमूर से दरी और कालीन, मुजफ्फरपुर से लहठी और चूड़ी , पूर्वी चंपारण से आये सीप से बनी कलाकृतियों के साथ-साथ कटिहार के आये बांस से बने गृह सज्जा के उत्पाद, पटना जिले के कांस्य एवं पीतल धातु से बने बर्तन, भोजपुर से क्रोसिया कला, दरभंगा, नालंदा और मधेपुरा से आये चमड़े के उत्पाद, पूर्णिया से आये मलबरी के धागों से बनी सुन्दर साड़ियाँ, गया जिले के पत्थरकट्टी कलाएं एवं लकड़ियों से बने से बने गृह सज्जा के उत्पादों के सस्थ-साथ भागलपुर, बांका के कतरनी चावल और चुडा ने पूरे सरस मेला को अपनी सुन्दरता और खुशबू से सराबोर कर रहे है ' बावन बुट्टी, सिक्की कला, सुजनी कला, बंजारा, तंजोर, मिथिला पेंटिंग, मधुबनी पेंटिंग के अतः उत्पादित परिधान एवं सजावट के सामान आगंतुकों को सहज ही लुभा रहे हैं '

लखीसराय जिला अंतर्गत सूर्यगढ़ा प्रखंड के मेदुनी चौक से श्रीमती संजना कुमारी कृत्रिम फूलों का कारोबार करती हैं ' मान चंडिका जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर उन्होंने समूह से 20 हजार रूपया ऋण लिया और क्रत्रिम फूल निर्माण एवं बिक्री का कार्य शुरू किया ' जीविका से जुड़ने से पहले वो घरेलु महिला थी लेकिन अब उनकी पहचान कुशल व्यवसाई के तौर पर है ' इस कार्य में उनके पति श्री अभिषेक कुमार भी उनकी मदद करते हैं ' सरस मेला में संजना कुमारी दूसरी बार आई हैं ' पिछले दिसंबर माह में गाँधी मैदान में आयोजित सरस मेला में उन्होंने 85 हजार से अधिक की राशी की क्रत्रिम फूलों की बिक्री की थी ' इस बार 7 दिनों में उन्होंने लगभग 30 हजार रुपये की राशी की फूलों की बिक्री की है ' सरस मेला से उन्हें पहचान मिली है और यहाँ आकर उन्हें मुनाफा भी ज्यादा मिलता है '

अन्य राज्यों की बात करें तो उत्तर प्रदेश से आये शिल्पकारों द्वारा निर्मित मनमोहक दरी और कालीन के साथ-साथ चादर और सोफे पे बिछाए जानेवाले सुन्दर कलाकृतियों और चमरे के उत्पादों के साथ मध्य प्रदेश से आये बूटी प्रिंट की साड़ियाँ, आन्ध्र प्रदेश से आये लकड़ी के गृह सज्जा के उत्पाद, ओड़िसा से आये सवाई घांस से बने साज-सज्जा के उत्पाद एवं सांस्कृतिक परिधान, हरियाणा से एप्लिक कला से सुसज्जित चादर और साड़ियाँ, गुजरात की कच्छ कला से बने परिधान और हस्तशिल्प, झारखंड की आर्टिफिशियल ज्वेलरी , शिल्पकारों द्वारा निर्मित हर्बल औषधि, असाम से आये बांस से बने उत्पाद, पंजाब से आये फुलकारी कला से बने परिधान, दार्जिलिंग के चाय के विभिन्न फ्लेवर एवं हर्बल मोमबत्ती, तेलंगाना का हस्तनिर्मित परिधान, रुमाल, तौलिया , पश्चिम बंगाल से आये खजूर के पत्तों से बने मनमोहक कृत्रिम फूलों एवं पत्थर तथा बांस के बने उत्पाद, छत्तीसगढ़ से आये अत्यंत मनमोहक सलवार-सूट और साड़ियों समेत अन्य कई राज्यों का शिल्प सरस मेला परिसर में देश की संस्कृति एवं हस्तशिल्प को पूर्ण रूप से जीवंत प्रदर्शित है '

मंगलवार को 28 लाख 84 हजार से अधिक की राशी के उत्पादों एवं व्यंजनों की खरीद-बिक्री हुई है ' खरीद-बिक्री का आंकड़ा स्टॉल धारकों द्वारा लिए गए रिपोर्ट के आधार पर आधारित होता है ' मंगलवार को 27 हजार से अधिक लोग आये और खरीददारी की '

चिली ने सियारी को सुनाई थी जीवित्पुत्रिका व्रत की कथा

प्रात : किरण संवाददाता

आरा/गडहनी (भोजपुर)। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष अष्टमी को मनाये जाने वाले जीवित्पुत्रिका का व्रत प्रखण्ड क्षेत्र के विभिन्न गाँव कस्बो में विधि विधान के साथ मनाया गया।इस अवसर पर माताओं ने अपने पुत्र के दीघार्यु की कामना को लेकर निर्जला व्रतोपवास रख भगवान जीमूतवाहन की पूजा अर्चना कर कथा श्रवण की।पण्डित अमरेन्द्र कुमार मिश्र एवं राजीव रंजन मिश्र ने जीवित्पुत्रिका व्रत के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि जीवित्पुत्रिका व्रत आश्विन मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को किया जाने वाला व्रत है। मान्यता है कि माताएं अपनी संतान के लंबे व स्वस्थ जीवन के लिये इस व्रत को करती हैं।पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इस व्रत का संबंध महाभारत से माना जाता है। कथा के अनुसार अपने पिता की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिये अश्वत्थामा पांडवों के वंश का नाश करने के अवसर ढुंढता है।एक दिन मौका पाकर उसने पांडव समझते हुए द्रौपदी के पांच पुत्रों की हत्या कर दी। उसके इस कृत्य की बदौलत अर्जुन ने अश्वत्थामा को बंदी बना लिया और उससे उसकी दिव्य मणि छीन ली। लेकिन इसके पश्चात अश्वत्थामा का क्रोध और बढ़ गया और उसने उत्तरा की गर्भस्थ संतान पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया जिसे रोक पाना असंभव था। लेकिन उस संतान का जन्म लेना भी अत्यावश्यक था। तब भगवान श्री कृष्ण ने अपने समस्त पुण्यों का फल उत्तरा को समर्पित किया जिससे गर्भ में मृत संतान को जीवन मिला। मृत्योपरांत जीवनदान मिलने के कारण ही इस संतान को जीवित्पुत्रिका कहा गया।यह संतान कोई और नहीं बल्कि राजा परीक्षित ही थे। उसी समय से आश्विन अष्टमी को जीवित्पुत्रिका व्रत के रूप में मनाया जाता है।इस दिन भगवान जीमूतवाहन व गरूड़ की पूजा अर्चना की जाती है।वहीं कालांतर में इसमें कई कथाएं जुड़ी। गंधर्वराज जिमुतवाहन के त्याग व गरूड़ से सर्प माता के इकलौते पुत्र की रक्षा की कहानी भी प्रेरणा का स्त्रोत रहा है।लोकमत में चिल्ही व सियारी की कथा बहुत प्रचलित हुई।चिली ने सियारी को जीवित्पुत्रिका की कथा सुनाई। कैसे सत्यनिष्ठ होकर चिली ने अपने सात पुत्रों की रक्षा की जो इस कलिकाल में प्रेरणास्त्रोत बनी और तब से सभी माताएं अपने पुत्रों के लिए तीन दिवसीय जीवित्पुत्रिका अर्थात जितिया व्रत रखती हैं और पुत्रों के दीघार्यु जीवन की कामना करती हैं।इसे सबसे कठिन वर्तों में शुमार किया जाता है।व्रतोपवास करने वाली माताओं में अराधना देवी, माया देवी, बिन्दु देवी, कुसुम देवी, शालिनी मिश्रा, पुनम देवी, ममता देवी, माया देवी बडहरा सहित हजारों महिलायें शामिल रहीं।

चाइल्डहुड कैंसर जागरूकता माह का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

बाल कैंसर जागरूकता माह (उउअट) पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में पूरे प्रदेश से 20 से ज्यादा ऐसे बच्चे पहुंचे जिन्होंने कैंसर को मात दी थी उस में ज्यादा ऐसे बच्चे थे जिन्हें (बी ए एल एल) बीमारी थी, इलाज के बाद वे नार्मल ज़िंदगी जी रहे हैं। मरीज एवं उनके परिजनों ने इलाज के दौरान सकारात्मक सोंच आत्मविश्वास एवं डॉक्टर की टीम पर भरोसा को सफलता की कुंजी बताई। उन्होंने बीमारी के दौरान चल रहे इलाज का अपना अनुभव सांझा किया। कार्यक्रम में कैंसर के इलाजरत बच्चे और उनके अभिभावक भी मौजूद रहे। इस मौके पर ड्राइंग कांपिटिशन का आयोजन किया गया। इसके बाद कैंसर जागरूकता पर एक 10 मिनट का वीडियो भी दिखाया गया। गंभीर बीमारी से लड़ने के लिए 10 मिनट का मेडिटेशन सेशन भी रखा गया ताकि लोग इसकी अहमियत को समझ सकें।

इस अवसर पर हिमैटो आंकोलाजी के विभागाध्यक्ष डॉ. अविनाश कुमार सिंह ने बताया कि बाल कैंसर जागरूकता माह (उउअट) हर साल सितंबर में मनाया जाता है। 1 से 30 सितंबर तक इस दौरान पूरे विश्व में कई तरह के जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इस साल का थीम है ह्लक्लोज द केयर गैपह्न। थीम के बारे में उन्होंने बताया कि विकसित देशों में कैंसर के इलाज का परिणाम काफी अच्छा है, जबकि विकासशील देशों में काफी कम है। इस बार का थीम इसी खाई को पाटने की एक कवायद है।

इस अवसर पर संस्थान के फैसिलिटी डायरेक्टर अनिल कुमार ने बताया कि इस महीने की शुरूआत 1990 में हुई थी और 2024 में इसकी 34वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है। इसका मकसद है बच्चों में होने वाली इस बीमारी के बारे में ज्यादा से ज्यादा लोगों तक जानकारी पहुंचे।

कार्यक्रम के दौरान मेडिकल आंकोलाजी के विभागाध्यक्ष डॉ. अभिषेक आनंद, डॉ. शेखर केसरी, डॉ. शिव शंकर मिश्रा, डॉ. मोफिजुर रहमान, डॉ. चिन्मय बिसवाल एंव विभिन्न विभाग के डाक्टर और चिकित्सक कर्मी मौजूद रहे।

पारस एचएमआरआई के बारे में

पारस एचएमआरआई, पटना बिहार में 2013 से कार्यरत है। पारस इंस्टीट्यूट ऑफ कैंसर केयर बिहार में अपनी विशेषज्ञता, बुनियादी ढांचे और कैंसर देखभाल प्रदान करने के लिए जाना जाता है।

भाजपा द्वारा एकात्म मानववाद के प्रवर्तक और जनसंघ के संस्थापक सदस्य पं.दीनदयाल उपाध्याय के जयंती मनाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

आराःएकात्म मानववाद और अंत्योदय विचारधारा के प्रवर्तक ,राष्ट्रीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य पण्डित दी दयाल उपाध्याय जी के जन्म जयंती को भारतीय जनता पार्टी द्वारा सेवा पखवाड़ा के तहत मनाया गया।

पं.दीनदयाल उपाध्याय के जयंती पर भाजपा द्वारा जिले के सभी मंडल मुख्यालय और बूथों पर उनके तैलीय चित्र पर पुष्पांजलि कर मनाया गया।

मुख्य कार्यक्रम भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय मे मनाया गया। जिलाध्यक्ष सहित भाजपा पदाधिकारियों और वरिष्ठ एवं सक्रिय कार्यकताओ द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के तैलीय चित्र पर पुष्पांजलि किया गया एवं भारत माता की जय,वंदेमातरम, पं.दीनदयाल उपाध्याय अमर रहे आदि नारे लगाए गए। उक्त अवसर पर जिलाध्यक्ष दुर्गा राज सहित नेताओं ने उनके व्यक्तित्व ओर कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का व्यक्तित्व सरल,मृदुभाषी एवं राष्ट्रवादी था। उन्होने एकात्म मानववाद के विचारधारा को जागृत किया। उनका विचार था कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़ा व्यक्ति का जब तक विकास नही होगा,तब तक देश का विकास नही हो सकता। उन्ही के विचारधारा को आगे बढाते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी सबका साथ,सबका विकास,सबका विश्वास एवं सबका प्रयास कू साथ समाज के सभी वर्गो का विकास करते 2047 तक देश को विकसित बनाने के लिए संकल्पित है।

कार्यक्रम मे जिलाध्यक्ष दुर्गा राज सहित हरेन्द्र पांडेय,ई.धीरेन्द्र सिंह,उदय प्रताप सहि,प्रहलाद राय,अशोक शर्मा, रामदिनेश यादव,संतोष चंद्रवंशी, संजय कुमार सिंह,हरेराम चंद्रवंशी आदि नेतागण और कार्यकर्ता शामिल हुए। आज पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के जयंती के अवसर पर जिले के सभी बूथों पर विशेष सदस्यता अभियान चलाया गया,जिसके तहत सभी बूथो पर कम से कम सौ सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा गया था।इसके अलावा सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम के तहत समाज मे सेवा कार्य किया गया।

विशेष सदस्यता अभियान के तहत भारतीय जनता पार्टी अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के बैनर तले जिला संयोजक हरे राम चंद्रवंशी के अध्यक्षता में जगदीशपुर प्रखंड के दुलौर ग्राम में बूथ संख्या108, 109 110 पर सैकड़ो की संख्या में अति पिछड़ा समाज को सदस्य बनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष दुर्गा राज एवं अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रभारी संतोष कुमार चंद्रवंशी उपस्थित रहे ।

वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री भगवान शर्मा रंजीत राज , अनिल कुमार, रामबली तुराहा, दिनेश ठाकुर, रजनीश कुशवाहा, रमेश पाल राजकिशोर निषाद, अशोक पाल, रामजी गुप्ता, सोनू सिंह, अनिल कुमार चंद्रवंशी सहित सैकड़ो और पिछड़ा समाज इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे

भारत माता मंदिर में चोरी की वारदात सीसीटीवी कैमरे में कैद, एफआईआर दर्ज

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। लंगरटोली चौराहा स्थित श्री श्री भारत माता मंदिर में गत 21 सितम्बर को चोरी की घटना को अंजाम दिया गया। घटना सुबह 6:45 की बतायी जाती है। चोरी की पूरी वारदात मंदिर में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हुयी है। चोरों की पहचान भी कर ली गयी है। चोरी की इस घटना को अंजाम देने वाले दो चोर लंगरटोली के ही हैं। जिसमें एक सुधाकर प्रसाद मंदिर से सटे भारत जेनरल स्टोर के नाम से दुकान चलाता है। जबकि एक अन्य व्यक्ति अजय प्रसाद है, जिसकी लंगरटोली पर इलेक्ट्रीक की दुकान है। इस संबंध में श्री श्री भारत माता मंदिर न्यास समिति के सचिव राजीव कुमार सिन्हा ने बताया कि सबसे पहले सुधाकर प्रसाद मंदिर की छत पर चढ़ा, फिर वह कई ट्रे निकालकर नीचे लाया। फिर उसने अजय प्रसाद से फोन पर बात की। कुछ देर बाद अजय प्रसाद मंदिर के पास आया और उसने सागर माली नाम के व्यक्ति (जो मंदिर के बाहर फूल वगैरह बेचता है) उसे बहला-फुसला कर कहा कि तुम मंदिर के अंदर से इलेक्ट्रीक ड्रम निकालकर मेरे ठेला पर लोड करो। इस प्रकार दोनों ने मिलकर इलेक्ट्रीक ड्रम की चोरी की घटना को अंजाम दिया।

सिन्हा ने आगे बताया कि पूरे घटनाक्रम की जानकारी मुझे मंदिर के पुजारी से मिली। इसके बाद मैंने न्यास समिति के सदस्यों को इससे अवगत कराया। तत्पश्चात समिति के कोषाध्यक्ष रणधीर कुमार आर्या ने स्थानीय पीरबहोर थाना में एफआईआर दर्ज करायी। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए घटना स्थल का मुआयना किया। इस संबंध में पुलिस ने न्यास समिति के पांच सदस्यों का ब्यान भी लिया, जिसमें सभी सदस्यों ने घटना की पुष्टि की है।

सिन्हा ने आगे कहा कि श्री श्री भारत माता मंदिर बिहार राज्य धार्मिक न्यास पर्षद से रजिस्ट्र्ड है। इसके पूर्व भी मंदिर में चोरी की कुछ घटनाएं हुयी थी। हाल में ही वर्ल्ड फेमस आयुवेदार्चार्य, व दूबे क्लिनिक के निदेशक डॉ. सुनील कुमार दूबे ने अपने खर्च पर मंदिर परिसर में 6 सीसीटीवी कैमरा एवं रंगीन टीवी लगवाया था। मंदिर में चोरी की घटना से हर कोई स्तब्ध है।

साफ्ट टेनिस की राज्यस्तरीय प्रतियोगिता 29 सितंबर से पटना में आयोजित

पटना सॉफ्ट टेनिस एसोसिएशन आफ बिहार के तत्वाधान में सॉफ्ट टेनिस एसोसिएशन ऑफ पटना के द्वारा आयोजित नवमी बिहार राज्य सॉफ्ट टेनिस चैंपियनशिप रुकनपुरा पटना के नसीब स्पोर्ट्स अकादमी में 29 -30 सितंबर 2024 को आयोजित की जाएगी। संघ के अध्यक्ष श्री मोहन प्रसाद जी के अध्यक्षता में आज बैठक राज पैलेस बैंक्विट हॉल, मुसल्लहपुर, पटना में की गई। जिसमें इस चैंपियनशिप के सफल आयोजन हेतु कई कमिटियां बनाई गई है की गई । प्रतियोगिता के आयोजन अध्यक्ष आलोक आजाद जी को बनाया गया, भोजन व अवासन के लिए प्रिंस कुमार रोहन कुमार अभिषेक राज व खुशबू कुमारी,जयंत कुमार को जिम्मेदारी दी गई है जबकि ग्राउंड के साथ साथ ओपनिंग व क्लोजिंग प्रोग्राम हेतु आलोक आजाद, रवि कुमार मेहता, रौनी रोहन व नमो नारायण मिश्रा को जिम्मेदारी दी गई है। मीडिया सेल को देखने के लिए रमेश कुमार सिंह को जिम्मेदारी दी गई है। इस प्रतियोगिता के के रेफरी रूपा कुमारी होगी जबकि उनका सहयोग अरविंद किशोर,सूरज कुमार,धीरेंद्र कुमार, आतिश कुमार, अभय कुमार, सत्येंद्र कुमार, रोहन कुमार, राजू कुमार, धीरेंद्र कुमार सिंह, संजीव कुमार, सनी कुमार, व बबीता कुमारी करेंगी। जबकि इस चैंपियनशिप के डायरेक्टर रवि कुमार मेहता होंगे। मौके पर सॉफ्ट टेनिस एसोसिएशन ऑफ बिहार के महासचिव धर्मवीर कुमार ने बताया की चैंपियनशिप की तैयारी पूरी कर ली गई है यह चैंपियनशिप मोतिहारी (पश्चिम चंपारण) में होना था। मगर अंत समय में अच्छे कोर्ट की अनुपलब्धता के कारण प्रतियोगिता पटना में कराया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में करीब 21 जिलों के 350 प्रतिभागी भाग लेंगे। बिहार के विभिन्न जिलों से आए खिलाड़ियों के रहने के लिए अवासन व भोजन के साथ-साथ ग्राउंड की व्यवस्था को देखकर अच्छी हो इसके लिए उचित मार्गदर्शन दिए गए हैं। इस मौके पर आयोजन अध्यक्ष आलोक आजाद जी ने बताया कि हम लोगों ने हर छोटी से छोटी चीजों को अच्छी तरह से निरीक्षण कर देख रहे हैं ताकि कोई कमी ना रहे। या एक यादगार प्रतियोगिता होगा। मौके पर मौजूद टूनामेंट डायरेक्टर रवि कुमार मेहता ने बताया की लगभग सारी तैयारियां पूरी हो गई है

बिना नक्शा पास कराये भवन बनाने पर पकडे गये तो होंगे दण्डित

प्रात : किरण संवाददाता

गडहनी। नगर पंचायत गडहनी के कार्यपालक पदाधिकारी मेधा कुमारी ने आदेश निर्गत करते हुए नगर पंचायत वासियो को सावधान किया है कि बिना नक्शा पास कराये अगर कोई भी भवन निर्माण करते पकडा जाता है तो नियम संगत दण्ड के भागी होंगे ।उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि प्रायः देखा जा रहा है कि नगर पंचायत गडहनी क्षेत्र अंतर्गत लगभग सभी वार्डो में नाक्सा पास कराये बिना, नगर पंचायत कार्यालय को सूचना दिए बिना नया मकान, भवन का निर्माण कराया जा रहा है जो सरासर नगर पलिका अधिनियम में वर्णित प्रावधान का उल्लघन है ।उन्होंने सभी नगर वासियों को सूचित किया है कि नगर पंचायत क्षेत्र अंतर्गत नया भवन, मकान का निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व प्रधिकृत अभियंता से नक्सा बनाकर नगर पंचायत कार्यालय से नक्सा पास कराना सुनिश्चत करेंगे अन्यथा पकडे जाने पर नियमानुसार दण्ड अधिरोपीत किया जायेगा साथ ही उक्त भवन को बुल्डोजर से ध्वस्त किया जायेगा।

प्रखण्ड प्रमुख को पितृ शोक

गडहनी भोजपुर। प्रखण्ड प्रमुख बिनोद सिंह के पिता ललन सिंह का निधन हृदयगति रूकने से हो गई। उनके निधन की खबर मिलते ही प्रखण्ड क्षेत्र मे शोक की लहर ब्याप्त हो गई ।मिली जानकारी के अनुसार श्री सिंह के पिता कुछ दिनो से बिमार चल रहे थे ।तीन दिन पहले उन्हे आरा भर्ती कराया गया था जिसके बाद उन्हे बेहतर इलाज के लिए पटना ले जाया गया ।पटना के एक नीजि अस्पताल मे इलाज के दौरान सोमवार की देर रात्रि उन्होंने अन्तिम सांस लेते हुए दुनिया को अलविदा कह गये ।इस संबंध मे प्रखण्ड प्रमुख बिनोद सिंह ने बताया कि उन्हे हार्ट और सुगर की बिमारी थी दवा चल रहा था ।इसी बीच पिछले दिनो से उन्हे छाती मे दर्द की शिकायत हुई जिसके बाद उन्हे भर्ती कराया गया ।दवा से सुधार भी हुआ और घर वापस आ गये ।पुनः तीन दिन पहले उन्हे अटैक आया और इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड दिया।

स्वच्छता ही सेवा-2024 के तहत क्विज, पेंटिंग एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

हाजीपुर। पूर्व मध्य रेल द्वारा 17 सितंबर से 02 अक्टूबर तक स्वच्छता ही सेवा-2024 का आयोजन किया किया जा रहा है । इसी कड़ी में पूर्व मध्य रेल, मुख्यालय में प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर सभाकक्ष में पर्यावरण विंग द्वारा मुख्य चल स्टॉक इंजीनियर/फ्रेट, महेश कुमार राय की अध्यक्षता में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का संचालन उप मुख्य पर्यावरण एवं गृह व्यवस्था प्रबंधक, श्री मंजय कुमार सिंह द्वारा किया गया। मुख्यालय में आयोजित प्रतियोगिता में यांत्रिक विभाग के अन्य अधिकारीगण एवं सभी अनुभागों के कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। क्विज में पूछे गये सवालों का कर्मचारियों द्वारा बखूबी से जवाब दिया गया। सफल कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

मंडलों में भी स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से केन्द्रीय विद्यालय, राज्य स्तरीय विद्यालय एवं निजी विद्यालय के छात्र-छात्राओं के मध्य स्वच्छता के विषय पर कविता एवं निबंध लेखन तथा चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इसमें स्कूली छात्र एवं छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा प्रतियोगिता में विजयी छात्र/छात्राओं को पुरस्कृत किया गया ।साथ ही छात्र एवं छात्राओं के बीच गीला कचरा एवं सूखा कचरा अलग-अलग जमा कर कचरे के उचित निष्पादन और स्वच्छता हेतु प्रोत्साहित किया गया । इसी क्रम में स्टेशन परिसरों की गहन सफाई, ब्लैक स्पॉट (सफाई हेतु चिन्हित इकाइयों) की सफाई की गयी एवं स्टेशन परिसरों, ट्रेनों एवं अपने कार्य स्थल को साफ-सुथरा बनाने के लिए सभी यात्रियों को जागरूक एवं बच्चों को प्रोत्साहित किया गया । ह्यएक पेड़ माँ के नामह्न अभियान के तहत स्टेशनों एवं कॉलोनियों में वृक्षारोपण किया गया तथा सफाईकर्मी के स्वास्थ्य जाँच हेतु स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया।

निर्जला उपवास के साथ महिलाओं ने रखा जीवित्पुत्रिका व्रत

गिद्धौर। प्रखंड क्षेत्र की महिलाओं द्वारा संतान की रक्षा के लिए जीवित्पुत्रिका व्रत पूरे नियम निष्ठा व निर्जला उपवास के साथ आरंभ कर दिया गया है ।सनातन धर्म मे इस व्रत का खास महत्व है ।सनातन संस्कृति में संतान की मंगलकामना से जुड़ा यह पर्व हिन्दू पंचांग के अनुसार प्रत्येक वर्ष आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। हर साल महिलाएं ये व्रत रखती हैं और संतान के सुरक्षा व दीघार्यू की ईश्वर से प्रार्थना करती हैं ।ऐसा माना जाता है कि जितिया व्रत करने से संतान की लंबी उम्र होती है और संतान को ईश्वर हर आपदा से बचाते हैं। इस पर्व में पूरे विधि विधान से महिलाएं स्नान ध्यान कर कुश का जीमूतवाहन बनाकर जीवित्पुत्रिका व्रत की पूजा करते हैं ।अष्टमी को पूरा दिन व्रत रखकर संध्याकाल में अच्छी तरह से स्नान कर महिलाएं पूजा की सामग्री के साथ जीमूतवाहन की पूजा करती हैं ।कहते हैं कि इस व्रत के प्रभाव से भगवान व्रती महिलाओं की संतानों की रक्षा करते हैं।

किसी के बहकावे में रहेंगे तो लौट जाएगा पिछला दौर:उपेंद्र कुशवाहा

- 15 वर्षों की सरकार ने बिहार को बीमारू राज्य बना दिया था
- उपेंद्र बोले बिजली स्मार्ट मीटर की समस्या है बात हो रही है

प्रात : किरण संवाददाता

कुर्था, अरवल । हमने रास्ता भले ही बदला लेकिन मेरा मंजिल एक है जिस उद्देश्य से आप लोग हमें कभी लोकसभा कभी राज्यसभा भेजने हैं तो हमारा भी फर्ज बनता है कि आपकी समस्याओं को मुखर होकर उठाए उक्त बातें बुधवार को अरवल जिले के कुर्था प्रखंड मुख्यालय में राष्ट्रीय लोक मोर्चा के तत्वाधान में आयोजित सदस्यता महापर्व कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व केंद्रीय मंत्री सह राज्य सभा सांसद सह राष्ट्रीय लोक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा ने सभा को संबोधित करते हुए कही उन्होंने कहा कि राज्य के चौमुखी विकास राज्य के जनता के विभिन्न समस्याओं के निराकरण को लेकर हमने कई बार देश के उच्च सदन से लेकर राज्यसभा में भी हमने अपनी आवाज बुलंद की और जब-जब हमें आवश्यकता पड़ी तो हमने अपने पद को लात मार कर सड़क पर उतरना बेहतर समझा पूर्व में हमने शिक्षा में सुधार को लेकर सड़क पर उतर जबकि उसे समय हम केंद्र में मंत्री हुआ करते थे फिर भी हमने समस्याओं को गंभीरता से देख चुकी गरीब के बच्चों को बेहतर शिक्षा नहीं मिल पा रही थी तब हमने अपने पद की परवाह किए बगैर हमने सड़क पर उतरना बेहतर समझा और उसका प्रतिफल है कि बिहार की सरकार मेरी बातों पर गौर किया वहीं उन्होंने कहा कि जब हम केंद्र में मंत्री रहे तो हमने कॉलेजियम सिस्टम के सवाल को भी खड़ा किया था कि आखिर सुप्रीम कोर्ट व हाई कोर्ट के जज उनके परिवार ही क्यों बनेंगे और अन्य लोग क्यों नहीं इसलिए कॉलेजीएम सिस्टम को यथाशीघ्र हटाया जाए हालांकि हमारी बातों पर देश के प्रधानमंत्री जी ने कॉलेजियम सिस्टम को लेकर कुछ समस्याओं का हल निकाला था उन्होंने कहा कि आने वाले बिहार विधानसभा चुनाव में लोगों को किसी के बहकावे में नहीं पडना है नहीं तो आने वाले पीढ़ी आपको कभी माफ नहीं करेगी जिस तरीके से पिछले 15 वर्षों की सरकार ने बिहार को बीमारू राज्य बना दिया था इस तरीके से फिर बनाने के फिराक में हैं ऐसे लोगों से सचेत रहने की आवश्यकता है उन्होंने कहा कि आने वाले बिहार विधानसभा चुनाव में एक बार फिर बिहार में एनडीए की सरकार बनाएं ताकि बिहार की जनता के तमाम समस्याओं का समाधान किया जा सके उन्होंने कहा कि एनडीए की सरकार में पूरे देश में चौमुखी विकास हो रही है बिहार में नीतीश कुमार की सरकार ने मानो सड़कों की जाल बिछा दी है पूर्व में जहां लोगों को पाँच से छः घंटे पटना जाने में लगते थे आज लोग को एक से दो घंटे में पटना में पहुंच रहे हैं हालांकि उन्होंने पत्रकारों द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब में कहा कि पिछले चुनाव में कुछ कुछ लोग बहकावे में आ गए थे अब विधानसभा चुनाव में पिछले चुनाव की गलती को लोग नहीं दोहराएंगे इस मौके पर कार्यक्रम के अध्यक्षता राष्ट्रीय लोक मोर्चा के जिलाध्यक्ष रविंद्र राम ने की जबकि मंच का संचालन राष्ट्रीय लोक मोर्चा के प्रदेश महासचिव पप्पू वर्मा के द्वारा किया गया इस मौके पर प्रदेश सचिव रॉबिंसन कुशवाहा पूर्व विधायक रणविजय शर्मा प्रभारी प्रदेश अध्यक्ष मदन चौधरी जहानाबाद राष्ट्रीय लोक मोर्चा के जिलाध्यक्ष पिंटू कुशवाहा राष्ट्रीय लोक मोर्चा के प्रदेश महासचिव डॉ0 परमानंद सिंह समेत सैकड़ो की संख्या में महिला व पुरुष उपस्थित थे।

टाटा टी गोल्ड कुमारतुली की शिल्पकला को जीवंत कर मना रहा दुर्गा पूजा

पटना/दुगापुर/आसनसोल। पश्चिम बंगाल का सबसे ज्यादा बिकने वाला चाय ब्रांड टाटा टी गोल्ड कुमारतुली की शिल्पकला को जीवंत करके दुर्गा पूजा का जश्न मना रहा है। कंपनी ने कुमारतुली थीम वाले सीमित संस्करण के त्यौहारी पैक लांच किए हैं और उन्हें जीवंत बनाने के लिए तकनीक का लाभ उठाया है। कुमारतुली कला बंगाल का दिल है थीम पर आधारित, पूजा के पांच दिनों को मनाने वाले प्रत्येक पांच प्रतीकात्मक तत्व ढाकी, शंखों ध्वनि, अष्टमी पुजारिन, धुनुची नृत्य और सिन्दूर खेला है। प्रत्येक तत्व को मूर्तियों के माध्यम से दशार्या गया है, जिन्हें कुमारतुली शैली में सावधानीपूर्वक गढ़ा गया है। प्रत्येक पैक में एक क्यूआर कोड भी होता है- इसे स्कैन करने पर, मूर्तियां फोन के माध्यम से एआर-सक्षम वातावरण में जीवंत हो जाती हैं। कंपनी के पैकेज्ड बेवरेजेज (भारत और दक्षिण एशिया) के अध्यक्ष पुनीत दास ने कहा, दुर्गा पूजा बंगाल का सबसे बड़ा त्यौहार है और इस साल कुमारटुली के मूर्तिकारों के साथ मिलकर हम अपने 360-डिग्री उत्सव अभियान के माध्यम से उनकी अद्वितीय कलात्मकता को प्रस्तुत करने में प्रसन्न हैं।

नदी में डूबने से दो बच्चो की हुई मौत

कैमूरः भभुआ प्रखंड के ग्राम पंचायत रूपपुर एवं हरिहरपुर गांव के दो बच्चों को नदी में डूबने से मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार भभुआ प्रखंड के हरिहरपुर गांव निवासी देवनारायण सिंह के 16 वर्षीय पुत्र सत्यम कुमार एवं रूपपुर गांव निवासी भागीरथी सिंह के 16 वर्षीय पुत्र किशन कुमार नदी में डूबने से मौत हो गई। कैमूर जिला पार्षद विकास सिंह ने घटना पर दुख व्यक्त करते हुए परिजनों को दुखद घड़ी में साथ खड़े रहने का वचन दिया। दोनों बच्चों की मौत होने पर गांव में कोहराम एवं मातमी छा गया है।

अब स्कूलों में खरीदी जाएंगी समसामयिक पत्र -पत्रिकाएं

गिद्धौर। अब जमुई समेत पूरे प्रदेश के स्कूलों में पढ़ रहे छात्र-छात्राएं सिर्फ अपने कोर्स की किताबें का ज्ञान ही नहीं पाएंगे,बल्कि देश- दुनिया में हो रही नई-नई गतिविधियों से भी अपडेट होंगे। इसके लिए शिक्षा विभाग ने नई पहल की है। इसके तहत अब स्कूलों में समसामयिक पत्र-पत्रिकाएं और दैनिक समाचार पत्र की रोजाना खरीद की जाएगी, ताकि बच्चे किताबी ज्ञान के समय साथ-साथ जनरल नॉलेज समेत देश-विदेश की घटनाओं से भी परिचित हो सकें ।राज्य मुख्यालय की ओर से प्रत्येक जिले में प्रखंड व विद्यालय स्तर पर अलग-अलग विद्यालयों में इसकी खरीद अनिवार्य रूप से कराए जाने का निर्देश दिया गया है। गौरतलब है कि जुलाई 2023 से ही स्कूलों का निरीक्षण पूरे प्रदेश में कराया जा रहा है ।इस निरीक्षण के क्रम में अक्सर यह देखा जा रहा था कि स्कूलों में बच्चों को पढ़ने के लिए पत्र-पत्रिकाएं तथा दैनिक समाचार पत्र उपलब्ध नहीं कराया जा रहे हैं। इसके बाद इसे अनिवार्य कर दिया गया है। दरअसल,बच्चों में कक्षा की शैक्षणिक गतिविधियों और कोर्स की पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों के ज्ञानवर्धन के लिए शिक्षा विभाग ने यह पहल की है। डीईओ राजेश कुमार ने बताया कि राज्य मुख्यालय की ओर से जारी निर्देश में कहा गया है कि अक्सर देखा गया है कि बच्चों पर कक्षा की पढ़ाई का ही इतना बोझ होता है कि अधिकांश बच्चे जनरल नॉलेज और करंट अफेयर्स की जानकारी के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं ।लेकिन अब स्कूलों की लाइब्रेरी में नियमित और अनिवार्य रूप से समसामयिक पत्र- पत्रिकाओं और दैनिक समाचार पत्र की खरीद की जाएगी।

भारत-इंग्लैंड लॉर्ड्स टेस्ट के लिए न्यूनतम 8400 रूपये का टिकट

लंदन, एजेंसी। अगले साल भारत के ख़िलाफ़ होने वाले लॉर्ड्स टेस्ट के पहले तीन दिनों के लिए मेरिलबोर्न क्रिकेट क्लब (एमसीसी) ने न्यूनतम 90 यूरो (लगभग 8400 रूपये) का टिकट निर्धारित किया है, जिसकी ख़ासी आलोचना हो रही है। वहीं प्रमुख स्टैंड्स के टिकटों का मूल्य 120 यूरो से 175 यूरो (11,200 रूपये से 16,330 रूपये) है। आलोचकों का कहना है कि इस साल श्रीलंका के ख़िलाफ़ हुए लॉर्ड्स टेस्ट के दौरान भी कुछ प्रमुख स्टैंड्स के 115 यूरो से 140 यूरो (10,730 रूपये से 13065 रूपये) के टिकट मूल्य निर्धारित किए गए थे, जिसके कारण कई स्टैंड्स खाली थे। चौथे दिन का खेल देखने के लिए सिर्फ़ 9000 टिकट बिके थे, जो कि स्टेडियम की क्षमता के एक-तिहाई से भी कम था।

हालांकि आलोचना के बाद एमसीसी को चाय के बाद के टिकट का दाम 15 यूरो (1400 रूपये) और 5 यूरो (470 रूपये) (अंडर-16 के लिए) करना पड़ा, लेकिन तब तक काफ़ी देर हो चुकी थी। मैच के बाद इंग्लैंड के कप्तान ऑली पोप ने कहा था, यह टेस्ट मैच का अच्छा दिन था, लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण था कि स्टेडियम भरा हुआ नहीं था। एमसीसी के मुख्य कार्यकारी और सचिव जी लेवेंडर ने कहा कि हम चौथे दिन की टिकट मूल्य नीति का पुनर्मूल्यांकन करेंगे। भारत के ख़िलाफ़ मैच के चौथे दिन के खेल के लिए 90 यूरो (8400 रूपये) से 150 यूरो (14000 रूपये) के टिकट का प्रावधान होगा। एमसीसी का तर्क है कि इंग्लिश टेस्ट कैलेंडर में ऑस्ट्रेलिया के बाद भारत दूसरी सबसे बड़ी मेहमान टीम है। इसके कारण टिकट के दाम अधिक रह सकते हैं। लॉर्ड्स में होने वाले डब्लूटीसी फ़ाइनल 2025 के लिए भी टिकट का मूल्य 70 यूरो (6530 रूपये) से 130 यूरो (12130 रूपये) निर्धारित किया गया है। वहीं इंग्लैंड और भारत की महिला टीम के बीच 2025 में होने वाले वनडे मैच का टिकट भी 25 यूरो (2330 रूपये) से 45 यूरो (4200 रूपये) निर्धारित है, जो कि लॉर्ड्स में ही खेला जाएगा।

इसे कहते हैं असली यू-टर्न

फिर से वनडे और टी20 खेलेंगे बेन स्टोक्स? बोले- अगर मुझे कॉल आई तो...

नईदिल्ली, एजेंसी। 2019 का वनडे वर्ल्ड कप हो, या 2022 टी20 विश्व कप, इंग्लैंड को चैंपियन बनाने में सबसे बड़ा रोल टेस्ट कप्तान और स्टार ऑलराउंडर बेन स्टोक्स का रहा था. हालांकि, इस खिलाड़ी ने तकरीबन 2 साल पहले वनडे फॉर्मेट से रिटायरमेंट का एलान कर दिया था. उस वक्त बेन स्टोक्स ने लगातार तनावपूर्ण इंटरनेशनल शेड्यूल को वजह बताया था. फिर उन्होंने वनडे वर्ल्ड कप 2023 के लिए संन्यास के अपने फैसले से यू-टर्न लिया. अब एक बार फिर स्टोक्स अपना फैसला वापस लेने वाले हैं.

मेरा जवाब निश्चित तौर पर हां होगा – बेन स्टोक्स ने वनडे और टी20 फॉर्मेट की जगह टेस्ट को तवज्जो दी. इस वक्त बेन स्टोक्स पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट सीरीज की तैयारी कर रहे हैं. लेकिन क्या बेन स्टोक्स वनडे फॉर्मेट में वापसी करने जा रहे हैं? इस पर बेन स्टोक्स ने कहा कि कोच ब्रैंडन मैकुलम के साथ लिमिटेड ओवर फॉर्मेट में वापसी पर चर्चा नहीं हुई है. लेकिन अगर ब्रैंडन मैकुलम का कॉल आता है तो वह वनडे फॉर्मेट खेलने के लिए तैयार हैं. उन्होंने कहा कि अगर ब्रैंडन मैकुलम का कॉल आता है और मेरे से पूछा जाता है कि क्या आप वनडे फॉर्मेट खेलना चाहेंगे? तो मेरा जवाब निश्चित तौर पर हां होगा.

अगर दोबारा खेलने का अवसर नहीं मिलता है तो मैं – बेन स्टोक्स आगे कहते हैं कि इंग्लैंड के लिए वनडे फॉर्मेट में खेलना शानदार अनुभव होगा ।

भारत-जर्मनी द्विपक्षीय सीरीज से दिल्ली में हॉकी की भावना फिर से जागृत होगी: हरमनप्रीत सिंह

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने जर्मनी के खिलाफ दो मैचों की द्विपक्षीय सीरीज से पहले अपनी उत्सुकता व्यक्त करते हुए कहा कि यह सीरीज राजधानी में हॉकी की भावना को फिर से जागृत करने के बारे में है। दो मैचों की सीरीज 23 और 24 अक्टूबर को प्रतिष्ठित मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में खेली जाएगी। यह सीरीज एक दशक के बाद राजधानी में पुरुषों की अंतरराष्ट्रीय हॉकी की वापसी का प्रतीक होगी, जिसका आखिरी मैच जनवरी 2014 में हॉकी वर्ल्ड लीग फाइनल - पुरुष राउंड 4 के दौरान खेला गया था। आगामी सीरीज के बारे में बात करते हुए, हरमनप्रीत ने कहा, इतने वर्षों के बाद दिल्ली में घरेलू प्रशंसकों के सामने खेलना एक टीम के रूप में हमारे लिए वास्तव में विशेष है। मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में बहुत सारा इतिहास और यादें हैं और यहां टीम का नेतृत्व करना एक बड़ा सम्मान होगा। अपने घरेलू दर्शकों के सामने खेलने की ऊर्जा बेजोड़ है और मुझे पता है कि प्रशंसक बड़ी संख्या में हमारा समर्थन करने के लिए आएंगे। उन्होंने आगे कहा, जर्मनी विश्व हॉकी की शीर्ष टीमों में से एक है और उनके खिलाफ खेलना हमारे लिए एक बड़ी चुनौती होगी। यह हमारी तैयारी के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हम आगे आने वाले प्रमुख टूर्नामेंटों के लिए तैयार हैं। हम कड़ी मेहनत कर रहे हैं और यह श्रृंखला हमें एक बहुत मजबूत प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ खुद को परखने का अवसर देगी। दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय हॉकी की वापसी पर हरमनप्रीत ने कहा, दिल्ली को अंतरराष्ट्रीय हॉकी मैच की मेजबानी किए हुए एक दशक से अधिक समय हो गया है और हम इस खेल को राजधानी में वापस लाने के लिए उत्साहित हैं। यह श्रृंखला केवल दो टीमों के खेलने के बारे में नहीं है; यह दिल्ली में हॉकी की भावना को पुनर्जीवित करने के बारे में है। हमें उम्मीद है कि यह क्षेत्र के अधिक युवा खिलाड़ियों को खेल को अपनाने के लिए प्रेरित करेगी। उल्लेखनीय रूप से, यह दो मैचों की श्रृंखला न केवल दिल्ली के लिए एक आकर्षण है, बल्कि देश भर में खेल को बढ़ावा देने के हॉकी इंडिया के दृष्टिकोण का भी हिस्सा है। हाल के वर्षों में हॉकी इंडिया ने ओडिशा से आगे बढ़कर इस खेल को अन्य शहरों में भी लाने का प्रयास किया है। ओडिशा हॉकी का केंद्र बन गया है। पिछले साल चेन्नई ने पुरुष एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी की थी, जबकि रांची ने महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी और एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर दोनों का स्वागत किया था। इस नवंबर में बिहार का एक शहर राजगीर आगामी महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी करेगा, जो भारत में हॉकी के बढ़ते प्रभाव में एक और अध्याय जोड़ेगा। अब, जब अंतरराष्ट्रीय हॉकी दिल्ली में वापस आ रही है, तो हॉकी इंडिया यह सुनिश्चित कर रहा है कि खेल विभिन्न क्षेत्रों में फलता-फूलता रहे।

एम्बाप्पे ने फिर दागा गोल, रियाल मैड्रिड को दिलाई एक और जीत

मैड्रिड, एजेंसी। किलियन एम्बाप्पे ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए पिछले पांच मैच में अपना छठा गोल दागा जिससे रियाल मैड्रिड ने स्पेनिश फुटबॉल लीग ला लिगा में अलावेस को 3-2 से हराया। एम्बाप्पे को खेल के 40वें मिनट में बॉक्स के अंदर गेंद मिली और उन्होंने एक डिफेंडर को छकाकर बड़ी खूबसूरती से उसे गोल में बदल दिया। एम्बाप्पे को मांसपेशियों में खिंचाव के कारण 80वें मिनट में मैदान छोड़ना पड़ा था। लुकास वाजक्वेज और रोड्रिगो ने भी मैड्रिड की तरफ से गोल किए। इससे मैड्रिड ने स्पेनिश लीग में अपने अजेय अभियान को 39 मैच तक पहुंचा दिया है।

फिट होकर भी अंडर 19 वर्ल्ड कप नहीं खेल पाएंगे राहुल द्रविड़ के बेटे समित

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेटर राहुल द्रविड़ के बेटे समित द्रविड़ पिछले काफी समय से चर्चा में हैं। उन्होंने अपने खेल से सेलेक्टर्स को प्रभावित किया जिन्होंने इस खिलाड़ी को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अंडर19 यूथ टेस्ट और यूथ वनडे सीरीज के लिए मौका दिया। टीम में चयन के बावजूद वह वनडे सीरीज में नहीं खेल पाए, उनका टेस्ट सीरीज में भी खेलना संदिग्ध है। इसके अलावा समित द्रविड़ अंडर 19 वर्ल्ड कप में भी नहीं खेल पाएंगे।

द्रविड़ के बेटे को मिला था टीम में मौका – समित को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 50 ओवर और यूथ टेस्ट के लिए अंडर 19 टीम में मौका दिया गया था। हालांकि चोट के कारण वह वनडे सीरीज नहीं खेल पाए। समित इस समय एनसीए में हैं। अगर समित टेस्ट मैच के लिए सही समय पर फिट नहीं होते हैं तो उन्हें फिर कभी अंडर19 टीम में मौका नहीं मिलेगा। समित भारत के लिए अंडर 19 वर्ल्ड कप भी नहीं खेल पाएंगे।

आईसीसी के नियम समित की राह का रोड़ा

दरअसल अंडर 19 वर्ल्ड कप के समय तक समित तय उम्र से ज्यादा के हो जाएंगे। इस कारण उन्हें मौका नहीं मिलेगा। आईसीसी के मुताबिक कोई भी खिलाड़ी अंडर 19 वर्ल्ड कप में तभी हिस्सा ले सकता है जब उसकी उम्र 31 अगस्त तक 19 साल की हो गई हो। 2026 वर्ल्ड कप के लिए अहम है कि खिलाड़ी की उम्र 31 अगस्त 2025 तक 19 साल हो। जबकि समित द्रविड़ इसी साल 11 अक्टूबर को 19 साल के हो जाएंगे। ऐसे में नियम के मुताबिक वह अंडर 19 वर्ल्ड कप नहीं खेल सकते हैं।

समित द्रविड़ का बल्ला कूच बिहार में ट्रॉफी में जमकर चला

समित द्रविड़ का बल्ला बीते कुछ मैचों में नहीं चला है। महाराजा ट्रॉफी में यह खिलाड़ी फ्लॉप रहा लेकिन इससे पहले हुए कूच बिहार ट्रॉफी में उन्होंने कमाल का खेल दिखाया है। उन्होंने चार दिवसीय मैचों के फॉर्मेट में खेले गए टूर्नामेंट में गेंद और बल्ले दोनों से ही प्रदर्शन किया था। समित ने 8 मैचों में 362 रन बनाए वहीं 16 विकेट भी हासिल किए। मुंबई के खिलाफ फाइनल में उन्होंने दो विकेट लिए थे।

मैनचेस्टर यूनाइटेड, रियल मैड्रिड के पूर्व डिफेंडर राफेल वराने ने फुटबॉल से संन्यास लिया

नई दिल्ली, एजेंसी। राफेल वराने ने 31 साल की उम्र में फुटबॉल से संन्यास लेने की घोषणा की है। मैनचेस्टर यूनाइटेड, रियल मैड्रिड और फ्रांस के पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी ने अपने फैसले की पुष्टि करने के लिए इंस्टाग्राम का सहारा लिया, जिसमें उन्होंने अपने खेल से संन्यास लेने के पीछे मुख्य कारण शारीरिक चुनौतियों, खासकर घुटने की समस्याओं को बताया।

मैनचेस्टर यूनाइटेड छोड़ने के बाद पिछली गर्मियों में फ्री ट्रांसफर पर इतालवी क्लब कोमो में शामिल हुए वराने को घुटने की समस्या के कारण 2024 सीज़न का एक बड़ा हिस्सा मिस करने की उम्मीद थी। वास्तव में, कोमो ने उन्हें अपनी सीरी ए टीम के लिए पंजीकृत भी नहीं किया था, क्योंकि यह स्पष्ट हो गया था कि उन्हें ठीक होने में लंबा समय लगेगा। फिटनेस के लिए संघर्ष जारी रखने के बजाय, वराने ने खेल से दूर रहने का फैसला किया है, उन्होंने अपने समर्थकों को एक भावनात्मक विदाई पत्र लिखा है।

वराने ने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट में लिखा, वे कहते हैं कि सभी अच्छी चीजों का अंत होना ही चाहिए। अपने करियर में, मैंने कई चुनौतियों का सामना किया है, कई मौकों पर खुद को साबित किया है, इनमें से लगभग सभी असंभव थे। अविश्वसनीय भावनाएं, खास पल और यादें जो जीवन भर रहेंगी। वराने का करियर शानदार रहा है, जिसमें 2018 में फ्रांस के साथ विश्व कप जीतना और रियल मैड्रिड के साथ चार चैंपियंस लीग खिताब जीतना शामिल है।

राफेल की उपलब्धियों में चार चैंपियंस लीग खिताब, तीन ला लीगा खिताब, एक विश्व कप और कई अन्य घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय ट्रॉफी शामिल हैं। फ्रांस के लिए 93 कैप के साथ, वह एक दशक से अधिक समय तक टीम का अभिन्न अंग रहे और मैदान पर और मैदान के बाहर अपने नेतृत्व और संयम के लिए जाने जाते थे। फ्रांसीसी खिलाड़ी, जो 2023 की शुरुआत में पहले ही अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल से संन्यास ले चुके हैं, ने एक अलग क्षमता में फुटबॉल में शामिल रहने का संकेत दिया। उन्होंने कहा,और इसलिए, मैदान के बाहर एक नया जीवन शुरू होता है।

मैं कोमो के साथ ही रहूंगा। बस अपने जूते और शिन पैड का उपयोग किए बिना। मैनचेस्टर यूनाइटेड ने एक्स पर लिखा, ओल्ड ट्रैफर्ड में अपने तीन सत्रों के दौरान आपने हमारे रंगों का बहुत ही शानदार तरीके से प्रतिनिधित्व किया। हम आपकी विनम्रता, नेतृत्व और प्रतिबद्धता के लिए आपको धन्यवाद देते हैं। उम्मीद है कि ये गुण आपके अगले प्रयास में भी आपके लिए उपयोगी साबित होंगे। एक बार रेड, तो हमेशा रेड।

1 पारी में 498 रन ठोकने के बाद भी निराश हैं गुजरात के 18 साल के द्रोण देसाई

नईदिल्ली, एजेंसी। अठारह साल के द्रोण देसाई ने मंगलवार 24 सितंबर 2024 को गांधीनगर के शिवाय क्रिकेट ग्राउंड में दीवान बल्लूभाई कप अंडर-19 मल्टी डे टूर्नामेंट के दौरान जेएल इंग्लिश स्कूल के खिलाफ अपने स्कूल सेंट जेवियर्स (लोयोला) के लिए 498 रन बनाकर रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज करा लिया है। यह वार्षिक टूर्नामेंट सेंट्रल बोर्ड ऑफ क्रिकेट अहमदाबाद की ओर से आयोजित किया जाता है। यह बोर्ड गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन के अंतर्गत आता है। द्रोण देसाई इतना बड़ा स्कोर बनाने वाले देश के छठे बल्लेबाज हैं। उनसे पहले एक पारी में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले भारतीय बल्लेबाजों में मुंबई के प्रणव धनावड़े (नाबाद 1009), पृथ्वी शॉ (546), डॉ. हवेवाला (515), चमनलाल (नाबाद 506) और अरमान जाफर (498) हैं।

द्रोण देसाई ने द इंडियन एक्सप्रेस को बताया कि वह इस बात से निराश हैं कि वह 500 रन के आंकड़े से चूक गए, क्योंकि उन्हें नहीं पता था कि वह इस मील के पत्थर के इतने करीब हैं। देसाई ने कहा, 'मैदान में कोई स्कोरबोर्ड नहीं था और मेरी टीम ने मुझे सूचित नहीं किया कि मैं 498 रन पर बल्लेबाजी कर रहा हूं, मैं अपना स्ट्रोक खेलने गया और आउट हो गया, लेकिन मुझे खुशी है कि मैं इतने रन बनाने में कामयाब रहा।' द्रोण देसाई ने अपनी 320 गेंद की पारी के दौरान सात छक्के और 86 चौके लगाये।

द्रोण देसाई की टीम ने जेएल इंग्लिश स्कूल के खिलाफ एक पारी और 712 रन से जीत हासिल की। जेएल इंग्लिश स्कूल ने पूरा मैच दस खिलाड़ियों के साथ खेला क्योंकि उनका एक खिलाड़ी देर से आया था।

हमने अपनी प्रतिभा के साथ न्याय नहीं किया, भारत से पहले टेस्ट में हार पर बोले बांग्लादेश के कोच

कानपुर, एजेंसी। बांग्लादेश के मुख्य कोच चंडिका हथुरुसिंघे ने बुधवार को कहा कि उनके खिलाड़ियों ने भारत के खिलाफ चेन्नई में खेले गए पहले टेस्ट क्रिकेट मैच में अपनी प्रतिभा और क्षमता के साथ न्याय नहीं किया, लेकिन उम्मीद जताई कि शुक्रवार से यहां शुरू होने वाले दूसरे टेस्ट मैच में उनकी टीम बेहतर प्रदर्शन करेगी।

बांग्लादेश के कप्तान नजमुल हसन शंटो (20) और अनुभवी शाकिब अल हसन (32) ने पहली पारी में अच्छी शुरुआत के लेकिन वे उसे बड़ी पारी में नहीं बदल पाए। दूसरी पारी में न केवल शंटो (82) बल्कि शीर्ष क्रम के बल्लेबाज जाकिर हसन (35) और शादमान इस्लाम (35) ने भी अच्छी शुरुआत की, लेकिन वे बड़ी पारी नहीं खेल पाए जिसके कारण बांग्लादेश को करारी हार का सामना करना पड़ा। हथुरुसिंघे ने कहा, 'हम इसको लेकर थोड़े चिंतित हैं क्योंकि जब भी हम इसको लेकर बात करते हैं तो यही कहते हैं कि

अगर आपको अच्छी शुरुआत मिलती है तो उसे बड़े स्कोर में बदलो। हमारे कुछ खिलाड़ियों ने क्रीज पर पर्याप्त समय बिताया लेकिन वह इसका फायदा नहीं उठा पाए। उन्होंने कहा, 'लेकिन भारत की यह टीम अलग-अलग चुनौतियां पेश कर रही है। हम इससे अच्छी तरह वाकिफ हैं। इसलिए हमें लंबे समय तक बल्लेबाजी करनी होगी।

बांग्लादेश की टीम में बाएं हाथ से खेलने वाले पांच खिलाड़ी हैं जिनमें शीर्ष चार स्थान में बल्लेबाजी करने वाले मोमिनुल हक भी शामिल हैं। बल्लेबाजी में बाएं-दाएं संयोजन आमतौर पर बेहतर काम करता है क्योंकि यह गेंदबाजों को अपनी लाइन और लेंथ से लगातार संयोजन बिठाने के लिए मजबूर करता है। बांग्लादेश हालांकि इस आधार पर टीम का चयन नहीं करेगा। हथुरुसिंघे ने कहा,''यह हमारे सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी हैं फिर चाहे वह दाएं हाथ से बल्लेबाजी करते हो या बाएं हाथ से। अगर हम टीम में कोई परिवर्तन करते हैं तो वह पिच की स्थिति निर्भर करेगा। उन्होंने कहा, 'जब भी हम टीम में कोई बदलाव करते हैं तो यह देखते हैं कि टीम में शामिल होने वाला खिलाड़ी टीम में क्या नया जोड़ सकता है तथा बाहर होने वाले खिलाड़ी से क्या नुकसान होगा। इसलिए हम इसे बाएं या दाएं हाथ के खिलाड़ी के बजाय समग्र रूप में देखते हैं। ग्रीन पार्क की पिच से स्पिनर को मदद मिल सकती है जिससे दोनों टीम अपने एक तेज गेंदबाज को बाहर कर सकती हैं।

युवराज के बिना हम

2007 टी20 विश्व कप नहीं जीत पाते:श्रीसंत

जोधपुर, एजेंसी। पूर्व क्रिकेटर श्रीसंत को लगता है कि तेजतर्रार ऑलराउंडर युवराज सिंह के बिना, भारत 2007 में पहला टी20 विश्व कप नहीं जीत पाता। 17 साल पहले 24 सितंबर को ही खचाखच भरे वांडरर्स स्टेडियम, जोहान्सबर्ग में भारतीय टीम ने उद्घाटन टी20 विश्व कप खिताब जीता था। भारत का मुकाबला पाकिस्तान के साथ था जहां धोनी के नेतृत्व में टीम इंडिया ने जीत दर्ज की थी। एक रोमांचक रोमांचक मुकाबले में, खिलाड़ियों के सामूहिक प्रयास ने भारत को जीत दिला दी और खिताब जीतने वाली पहली टीम बन गई। इस महत्वपूर्ण जीत पर विचार करते हुए श्रीसंत ने महसूस किया कि यह एक सामूहिक टीम प्रयास था और किसी एक व्यक्ति की कड़ी मेहनत नहीं थी जिसने भारत को इतिहास बनाने की अनुमति दी। हालांकि उन्होंने कहा कि यह सीनियर और जूनियर संयोजन था। धोनी कप्तान थे, लेकिन युवराज के बिना मुझे नहीं लगता कि हम विश्व कप जीत पाते। हमने सिर्फ धोनी की वजह से विश्व कप नहीं जीता। उनकी कप्तानी अच्छी थी, लेकिन याद रखना होगा कि पूरी टीम में पारिवारिक माहौल था। पूरा प्रबंधन हमारे साथ था। हमने किसी एक व्यक्ति की वजह से विश्व कप नहीं जीता। बता दें कि इसी संस्करण में युवराज चमके थे।

सचिन का रिकॉर्ड न भी तोड़ पाए तब भी सर्वकालिक महान खिलाड़ी बन जाएंगे जो रूट: इयान बेल

जोधपुर, एजेंसी। इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज इयान बेल का मानना है कि जो रूट अगर सचिन तेंदुलकर के 15,921 रन के टेस्ट रिकॉर्ड को नहीं तोड़ पाते हैं तो भी वह टेस्ट क्रिकेट में उनके देश के सर्वकालिक महान बल्लेबाज बन जाएंगे। रूट हाल ही में श्रीलंका के दिग्गज बल्लेबाज कुमार संगकारा को पीछे छोड़ते हुए सबसे लंबे प्रारूप में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाजों की सूची में छठे स्थान पर पहुंच गए थे। बेल ने लीजेंड्स लीग क्रिकेट के अवसर पर कहा, 'रूट ने पिछले 12 महीनों अविश्वसनीय रूप से शानदार प्रदर्शन किया है। मुझे नहीं लगता कि वह भविष्य के बारे में बहुत कुछ सोच रहा है। वह उसी क्षण में जी रहा है जैसे हम जी रहे हैं। उन्होंने कहा, 'सचिन जैसे महानतम खिलाड़ी के करीब पहुंचना भी बड़ी उपलब्धि है। सचिन खेल का वास्तव में महान खिलाड़ी है जिनको खेलते हुए देखकर हम बड़े हुए हैं। वह केवल भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के ही नहीं बल्कि दुनिया भर के लोगों के लिए नायक हैं।

इंग्लैंड की तरफ से 118 टेस्ट मैच खेलने वाले 42 वर्षीय बेल ने अपने पूर्व साथी के बारे में कहा, 'यह सोचना भी बड़ी उपलब्धि है कि रूट सचिन के करीब पहुंच सकता है। वह सचिन का रिकॉर्ड तोड़ पाए हैं या नहीं, इसमें कोई संदेह नहीं कि वह इंग्लैंड के सर्वकालिक महान बल्लेबाज के रूप में जाने जाएंगे। रूट अभी 33 वर्ष के हैं और उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में 12402 रन बनाए हैं। इस तरह से वह तेंदुलकर के रिकॉर्ड से अभी 3519 रन पीछे हैं। बेल को लगता है कि इंग्लैंड के बहुचर्चित बैज़बॉल दृष्टिकोण ने मौजूदा खिलाड़ियों की प्रतिभा को उजागर किया है। उन्होंने कहा, 'एक प्रशंसक के तौर पर आपको परिणामों को देखना होगा। जब से ब्रेंडन (मैकुलम) इंग्लैंड की टीम में आए हैं और (बेन) स्टोक्स ने कमान संभाली है, टीम ने अच्छे परिणाम हासिल किए हैं। वे जैक क्रॉली, ओली पोप, हैरी ब्रूक जैसे युवा खिलाड़ियों से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करवाने में सफल रहे हैं। इंग्लैंड विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के पहले दो चक्र में फाइनल में पहुंचने के दावेदारों में शामिल नहीं रहा और बेल का मानना है कि अगले चक्र में घरेलू श्रृंखलाओं में जीत दर्ज करना महत्वपूर्ण होगा। उन्होंने कहा,''मुझे पूरा यकीन है कि उनकी नजर अगले 12 महीनों पर है, जिसमें उन्हें भारत के खिलाफ घरेलू मैदान पर पांच टेस्ट मैच खेलने हैं, जो एक बड़ी चुनौती होगी।

संक्षिप्त समाचार

हरिद्वार जाने का प्लान हुआ कैंसल, गाजियाबाद आकर व्यापारी दोस्त ने मारी गोली

गाजियाबाद, एजेंसी। गाजियाबाद की नेहरू नगर कॉलोनी में गोलियों से छलनी लाश मिलने से हड़कंप मच गया। घटना के बारे में पुलिस को सूचित किया गया तो जांच में पता चला कि मरने वाला शख्स ऋषभ गुप्ता है जो कि एक व्यापारी है। पंचवटी इलाके में रहने वाले ऋषभ को उसे दोस्तों के सामने मार दिया गया। हत्या के बारे में और खुलासा हुआ तो मामला व्यापार से जुड़े लेन-देन का निकलकर सामने आया है। पुलिस उपायुक्त (शहर) राजेश कुमार ने बताया कि मृतक ऋषभ गुप्ता एक व्यापारी था और पंचवटी कॉलोनी में रहता था। उन्होंने बताया कि ऋषभ अपने तीन दोस्तों पुलकित गोयल, अनुज शर्मा और मुकुल गोयल के साथ सोमवार रात को गाजियाबाद से हरिद्वार के लिए निकला था, लेकिन ये लोग रास्ते से ही वापस आ गए और फिर ये घटना घटी। पुलिस ने मुकुल को गिरफ्तार कर लिया है। उसने पूछताछ के दौरान पुलिस को बताया कि हरिद्वार जाने के बजाय वे लोग मेरठ से वापस गाजियाबाद आ गए और जब वे नेहरू नगर पहुंचे, तो अनुज ने ऋषभ पर गोली चला दी। गोली उसके सिर में लगी जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इसके बाद तीनों दोस्त लाश और देसी पिस्तौल सड़क किनारे छोड़कर फरार हो गए। पुलिस ने बताया कि पूछताछ में पता चला है कि चारो व्यक्ति बिजनेस पार्टनर थे। उन लोगों के बीच पैसों के लेन-देन को लेकर भी विवाद चल रहा था। हो सकता है कि इसी चक्कर में उसके ऊपर गोली चलाई गई हो। पुलिस ने मुकुल को गिरफ्तार कर लिया है बाकी के अन्य दो पुलकित और अनुज फरार हैं।

तिरुपति लड्डू विवाद से सहमी ओडिशा सरकार, पुरी के जगन्नाथ मंदिर पर बड़ा कदम

पुरी, एजेंसी। तिरुपति लड्डू में जानवर की चर्बी पाए जाने के आरोपों के बीच ओडिशा सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। मंगलवार को ओडिशा सरकार ने जगन्नाथ मंदिर में प्रसाद बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले घी की गुणवत्ता की जांच करने का निर्णय लिया। यह जानकारी एक अधिकारी ने दी। आंध्र प्रदेश के तिरुमाला मंदिर में लड्डू बनाने में जानवर की चर्बी वाले घी के इस्तेमाल के आरोपों के बाद यह फैसला लिया गया है। पुरी के जिला कलेक्टर सिद्धार्थ शंकर स्वैन ने कहा कि हालांकि यहां ऐसे किसी आरोप का सामना नहीं करना पड़ा है, लेकिन प्रशासन कोठा भोग (देवताओं के लिए प्रसाद) और बराड़ी भोग (ऑर्डर पर प्रसाद) की तैयारी में उपयोग किए जाने वाले घी की गुणवत्ता की जांच करेगा। उन्होंने बताया कि ओडिशा मिल्क फेडरेशन (ओमफेड) ही पुरी मंदिर के लिए घी का एकमात्र आपूर्तिकर्ता है। उन्होंने कहा, हालांकि, किसी भी प्रकार की मिलावट के डर को कम करने के लिए ओमफेड द्वारा आपूर्ति किए जाने वाले घी की मानक की जांच करने का निर्णय लिया गया है। स्वैन ने कहा कि मंदिर में प्रसाद तैयार करने वाले सेवकों के साथ भी इसकी चर्चा भी की जाएगी।

मुंबईवालों को जल्द मिलेगी नई सौगात; पहली भूमिगत मेट्रो के उद्घाटन की तैयारी

मुंबई , एजेंसी। मुंबई की पहली भूमिगत मेट्रो या एक्वा लाइन को लेकर बड़ी जानकारी सामने आई है। इसके पहले चरण में ट्रेन का परिचालन सुरक्षा मंजूरी मिलते ही आरे कॉलोनी से बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स के बीच शुरू हो जागा। सीनियर अधिकारी ने मंगलवार को यह अपडेट दिया। आरे कॉलोनी और बीकेसी के बीच 12.5 किमी लंबा मेट्रो मार्ग 33.5 किमी लंबी कोलाबा-सीप्ज-आरे मेट्रो लाइन-3 का हिस्सा है। इस तरह मुंबई के लोगों को यातायात में सुविधा के लिहाज से जल्द ही बड़ी सौगात मिलने वाली है। मुंबई मेट्रो रेल कॉरपोरेशन के प्रबंध निदेशक अश्विनी भिड़े ने पत्रकार वार्ता में अधिक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मेट्रो लाइन-3 पर जल्द ट्रेन का ऑपरेशन शुरू होगा, क्योंकि अब महज मेट्रो रेलवे सुरक्षा आयुक्त की मंजूरी मिलनी बाकी है। उन्होंने कहा कि इसके लिए 2 मंजूरियों की आवश्यकता थी। इसमें से उन्हें रोलिंग स्टॉक (मेट्रो ट्रेन) के लिए पहले ही मंजूरी मिल चुकी है, जबकि रेल लाइन के लिए आवेदन स्वीकृति के लिए लंबित है। इसमें से 12.5 किलोमीटर लंबे आरे कॉलोनी से बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स मार्ग का उद्घाटन अक्टूबर के पहले सप्ताह में हो सकता है।

गाजियाबाद में चल रहा था धर्मांतरण का खेल, 12 गरीब हिंदू परिवारों को बनाया ईसाई

गाजियाबाद एजेंसी। गाजियाबाद के नंदग्राम थानाक्षेत्र के सेवानगर में प्रार्थना सभा की आड़ में धर्मांतरण का खुलासा होने पर जांच एजेंसियां भी सक्रिय हो गई हैं। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, ईसाई मिशनरियों द्वारा बीमारी के इलाज, शादी और पैसों का लालच देकर धर्म परिवर्तन कराया जा रहा था। विदेशी फंडिंग की आशंका के चलते इन्ग्राहम शिक्षण संस्थान के पीटीआई और उसके साथियों के बैंक खातों की डिटेल खंगाली जा रही है।

पुलिस सूत्रों के मुताबिक, इन्ग्राहम शिक्षण संस्थान का पीटीआई जेराल्ड मैथ्यूज मैसी और उसके साथी गरीब और जरूरतमंद लोगों को बीमारी के इलाज, शादी-रोजगार का झांसा देकर जाल में फंसाते थे। इसके बाद उन्हें ईसाई धर्म के रीति-रिवाज के मुताबिक प्रार्थना सभा में आने के लिए प्रेरित करते थे। वहां कुछ लोगों को उनकी जरूरत के मुताबिक सुविधाएं मुहैया कराकर अन्य लोगों को धर्म अपनाने के लिए कहते थे।

बजरंग दल धर्म जागरण प्रकोष्ठ के महानगर संयोजक नवीन सिंह का कहना है कि धर्मांतरण कराने वाला गिरोह गाजियाबाद के साथ आसपास के जिलों में भी सक्रिय है। गिरोह अब तक हजारों लोगों को धर्म परिवर्तन करा चुका है। वहीं, पुलिस का कहना है कि मकान में ईसाई धर्म की पुस्तकें और प्रचार-प्रसार की सामग्री मिली है। अंदेशा है कि बड़े पैमाने पर धर्मांतरण कराया गया है। बजरंग दल धर्म जागरण प्रकोष्ठ के महानगर संयोजक नवीन सिंह के मुताबिक, गिरोह ने नंदग्राम थानाक्षेत्र के 11 परिवारों का धर्म परिवर्तन कराया। इसके अलावा संजय नगर सेक्टर-23 स्थित एक परिवार के धर्मांतरण करने का भी पता चला है। गाजियाबाद के कई अन्य इलाकों में भी इस गिरोह के सक्रिय होने की बात सामने आई है। इस संबंध में संगठन अपने स्तर से खोजबीन कर रहा है। इन्ग्राहम शिक्षण संस्थान के पीटीआई जेराल्ड मैथ्यूज मैसी और उसके साथियों के पकड़े जाने का पता लगते ही कुछ लोग विरोध जताने नंदग्राम थाने पहुंच गए। उन्होंने धर्मांतरण के आरोप को गलत बताते हुए हंगामा किया। बताया जा रहा कि जेराल्ड मैथ्यूज मैसी के समर्थन में पहुंचे लोग गाजियाबाद के अलावा आसपास के जिलों से आए थे। वहीं, बजरंग दल के नवीन सिंह का कहना है कि यह सभी लोग वह हैं, जिनका धर्मांतरण कराया जा चुका है।

नोएडा के पास होगी राफेल और मिराज की मरम्मत, डसॉल्ट बनाएगी एमआरओ हब

नोएडा , एजेंसी। भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमान राफेल और मिराज-2000 की मरम्मत और रखरखाव का कार्य नोएडा के निकट किया जाएगा। फ्रांसीसी विमान निर्माता कंपनी डसॉल्ट इन लड़ाकू विमानों के लिए नोएडा के निकट एमआरओ यानी रखरखाव, मरम्मत और ओवरहॉल सुविधा केंद्र स्थापित करेगी। इस केंद्र को छह महीने के अंदर धरातल पर उतारने का दावा किया जा रहा है। इसके अलावा जेवर में एयरपोर्ट के पास भी कॉमर्शियल विमानों के लिए एमआरओ हब प्रस्तावित है। सूत्रों ने बताया कि डसॉल्ट की नई इकाई डसॉल्ट एविएशन मेंटेनेंस, रिपेयर एंड ओवरहाल इंडिया (डीएएमआरओआई) का परिचालन छह महीने के भीतर शुरू होने की उम्मीद है। यह धीरे-धीरे अपनी गतिविधियों का विस्तार करेगी। डसॉल्ट में पहले अपनी सेवा दे चुके पोसिना वेंकट राव को नई इकाई का सीईओ नियुक्त किया गया है। बता दें कि भारतीय वायुसेना 36 राफेल और 50 मिराज-2000 विमानों के बेड़े का संचालन करती है। इसके अलावा भारत 26 राफेल समुद्री विमानों के लिए फ्रांस के साथ एक सौदे पर बातचीत कर रहा है, जिन्हें आईएनएस विक्रांत पर तैनात किया जाना है। समुद्र में निरंतर युद्ध संचालन के लिए बनाए गए दो इंजन वाले डेक-आधारित फ्रांसीसी लड़ाकू विमानों का सौदा लगभग 50 हजार करोड़ रुपये में होने का अनुमान है। विकसित किया जाना है। एयरपोर्ट का निर्माण कर रही ज्यूरिख कंपनी ने इसके लिए रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल (आरएफपी) निकाली है।

केंद्र की नमस्ते योजना में शामिल होंगे गुरुग्राम के कूड़ा बीनने वाले, स्वास्थ्य बीमा सहित मिलेंगे कई फायदे

गुरुग्राम, एजेंसी। कूड़ा बीनने वालों के लिए एक अच्छी खबर है। गुरुग्राम नगर निगम क्षेत्र में कूड़ा बीनने वाले पांच हजार से अधिक लोगों को अब केंद्र सरकार की 'नमस्ते योजना' में शामिल किया जाएगा। जून में हुई स्थायी वित्त समिति की बैठक में इसे हरी झंडी मिल चुकी है। इसको लेकर शहरी स्थानीय निकाय विभाग को भी इसका नोटिफिकेशन मिल गया है।योजना को लागू करने और कूड़ा बीनने वालों को इसका लाभ दिलाने के लिए के लिए प्रदेश के सभी नगर निगम को पत्र लिखा गया है। योजना में शामिल होने से कूड़ा बीनने वाले लोगों को सरकार की कई योजनाओं को फायदा तो मिलेगा ही, साथ में उन्हें कूड़ा उठाने के लिए पीपीई किट समेत स्वास्थ्य बीमा का भी लाभ मिलेगा। इसको लेकर उन्हें नगर निगम की तरफ से सही तरीके से कूड़ा बिनने का विशेष प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

केंद्र सरकार ने सीवर और सेप्टिक टैंक श्रमिकों के कल्याण के लिए एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना, नेशनल एक्शन फॉर मैकेनाइज्ड सैनिटेशन ईकोसिस्टम (नमस्ते) योजना शुरू की गई है।

भूपेश बघेल ने सीजेआई चंद्रचूड़ को लिखा पत्र

रायपुर, एजेंसी। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भूपेश बघेल ने सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ को पत्र लिखा है। उन्होंने सीजेआई से राज्य में केंद्रीय और राज्य जांच एजेंसियों के कामकाज की उच्च स्तरीय न्यायिक जांच का आदेश दिए जाने की मांग की है। भूपेश बघेल ने प्रधान न्यायाधीश को लिखे पत्र में यह भी शिकायत की है कि सूबे में विभिन्न अपराधों से जोड़ने के लिए उनके खिलाफ साजिश रची जा रही है। भूपेश बघेल ने 21 सितंबर को लिखे पत्र में कहा है कि उन्होंने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कर्तव्यों का पूरी ईमानदारी, निष्ठा और गरिमा के साथ पालन किया। छत्तीसगढ़ में कोयला परिवहन में कथित अवैध वसूली के एक प्रकरण की जांच ईडी बीते चार वर्षों से कर रही है। भाजपा के सत्ता में आने के बाद राज्य की एसीबी/ईओडब्ल्यू की ओर से भी एक केस दर्ज किया गया है। ईडी की ओर से गिरफ्तार किए गए आरोपियों को एसीबी/ईओडब्ल्यू ने भी नए केस में जेल में बंद कर रखा है। इनमें से एक सूर्यकांत तिवारी नाम का व्यापारी भी है।

गुरुग्राम में अब नो पार्किंग से वाहन उठने का मैसेज मोबाइल पर आएगा

गुरुग्राम , एजेंसी। अब नो पार्किंग पर खड़े वाहन को उठाने का मैसेज संबंधित वाहन मालिक के मोबाइल पर आएगा। गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए) ने सीआईडी विभाग के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक को पत्र लिखकर इसका आग्रह किया है। इसमें जीएमडीए ऐप को केंद्र सरकार के वाहन ऐप से लिंक करवाने में मदद करने को कहा है। अब तक यह दोनों ऐप लिंक नहीं होने से नो पार्किंग से वाहन को उठाने के दौरान वाहन मालिक को परेशान होना पड़ता है। उसे पता नहीं चलता है कि अवैध पार्किंग के चलते उसका वाहन उठाया गया है या वाहन चोरी हो गया है। वाहन मालिक को इधर-उधर भटकना पड़ता है।

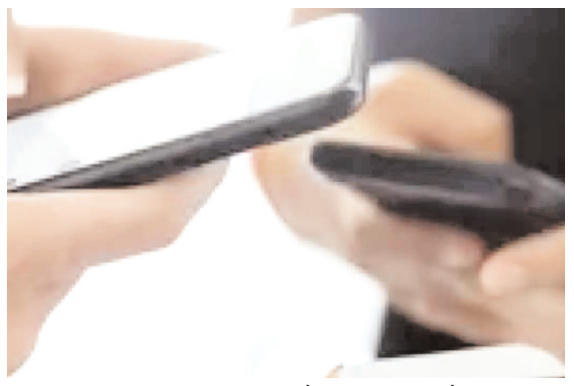

गुरुग्राम की सड़कों पर भारत के हर प्रदेश में पंजीकृत वाहन दौड़ते हैं। सड़कों पर अवैध रूप से खड़े वाहनों को ट्रैफिक पुलिस की तरफ से जीएमडीए की उपलब्ध क्रेन की मदद से उठवाया जाता है। वाहनों को छोड़ने के एवज में ट्रैफिक पुलिस चालान करती है। क्रेन से वाहन को उठाने की एवज में 1000 रुपये अलग से शुल्क वसूल किया जाता है। इसमें आधी राशि जीएमडीए के खाते में तो आधी क्रेन मालिक के खाते में जाती है। मौजूदा समय में क्रेन के माध्यम से अवैध पार्किंग में खड़ी कार को उठा लिया जाता है। वाहन मालिक के पास किसी तरह का मैसेज नहीं जाता है। वाहन नहीं मिलने के दौरान उसे भटकना पड़ता है। कई बार तो पुलिस कंट्रोल रूम में वाहन चोरी को लेकर शिकायत दी जाती है। जहां से उन्हें क्रेन की तरफ से वाहन उठाकर ले जाई गई, जगह पर भेज दिया जाता है। वाहन को देखकर वाहन मालिक की तरफ से राहत की सांस ली जाती है। जीएमडीए से मिली जानकारी के मुताबिक, गुरुग्राम की सड़कों से करीब 1.40 लाख वाहनों को क्रेन की मदद से ट्रैफिक पुलिस की तरफ से उठवाया जा चुका है। इन वाहनों का डेटा जीएमडीए की ऐप में फीड हो चुका है। यदि इन वाहनों को क्रेन द्वारा दोबारा उठाया जाता है तो इनके पास नो पार्किंग से वाहन उठने का मैसेज पहुंच जाएगा। इन लोगों को परेशान नहीं होना पड़ेगा। इससे नियमों का भी पालन होगा। उद्योग विहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के महासचिव एपी जैन ने बताया कि उद्योग विहार में ट्रैफिक पुलिस और जीएमडीए ने कारोबारियों को परेशान किया हुआ है। पार्किंग का बंदोबस्त किए बिना उद्योगों के बाहर खड़े वाहन उठाए जा रहे हैं। इस सिलसिले में मुख्यमंत्री को पत्र लिखा है, लेकिन कोई निष्कर्ष नहीं निकल सका है। उद्योग विहार में 10 एकड़ जमीन में पार्किंग बननी थी, जिस जमीन को बिल्डर को एचएसआईआईडीसी ने बेच दिया है।

मोहम्मद यूनुस को जो बाइडेन ने भी लगाया गले, अमेरिका ने किया बांग्लादेश को फुल सपोर्ट का वादा

वाशिंगटन, एजेंसी। बांग्लादेश की नई अंतरिम सरकार को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़ी सफलता मिलती दिख रही है। खबर है कि अब अमेरिका ने भी अंतरिम सरकार का समर्थन करने का फैसला लिया है। हाल ही में अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस ने अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन से मुलाकात की थी। खास बात है कि बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन की साजिश के आरोप अमेरिका पर भी लग रहे हैं।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, मुख्य सलाहकार के दफ्तर से जारी प्रेस नोट में कहा गया है कि बाइडेन ने बांग्लादेश की अंतरिम सरकार को पूरा समर्थन देने की बात कही है। प्रेस नोट के मुताबिक, बाइडेन का कहना है कि अगर अपने देश के लिए छात्र इतना कुछ कुर्बान कर सकते हैं, तो उन्हें थोड़ी और मदद करनी चाहिए। यूनुस और बाइडेन ने मंगलवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा के सत्र से इतर न्यूयॉर्क में मुलाकात की थी।

15 सितंबर को भी अमेरिका के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने बांग्लादेश की राजधानी ढाका में मोहम्मद यूनुस से मुलाकात की थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक, तब आर्थिक विस्तार और राजनीतिक संबंधों को लेकर भरोसा दिया गया था। 8 अगस्त को यूनुस ने बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार के तौर पर शपथ ली थी। मुल्क में सरकारी नौकरियों में कोटा के खिलाफ जारी छात्रों का आंदोलन अगस्त की शुरुआत से ही हिंसक हो गया था। इसके बाद 5 अगस्त को तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना ने इस्तीफा दे दिया था और मुल्क छोड़कर भारत आ गई थीं। तब से वह भारत में ही हैं। खबरें हैं कि बांग्लादेश उनके प्रत्यर्पण के लिए कोशिश कर सकता है।

शेख हसीना ने ही जताई थी आशंका: हसीना का कहना था कि अगर वह सेंट मार्टिन द्वीप की संप्रभुता से समझौता कर लेती और बंगाल की खाड़ी पर अमेरिका का प्रभाव पड़ने देतीं, तो वह प्रधानमंत्री बनी रह सकती थीं। हालांकि, बांग्लादेश की पूर्व पीएम के बेटे शाजिब वाजेद ने इस बात से इनकार किया था कि उनकी मां ने ऐसा कोई बयान दिया है। वहीं, अमेरिका ने भी बांग्लादेश के आंतरिक मामलों में दखल देने की बात से इनकार किया था।

अमेरिका में अराजकता फैलाने के लिए ट्रंप की हत्या करा सकता है ईरान, खुफिया एजेंसी की चेतावनी

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने आशंका जताई है कि ईरान अमेरिका में अराजकता फैलाने के लिए पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की हत्या की साजिश रच सकता है। डोनाल्ड ट्रंप के प्रचार अभियान टीम ने मंगलवार को बताया कि अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने ट्रंप पर जानलेवा हमले की आशंका जताई है और उन्हें सावधान रहने को कहा है। 78 वर्षीय डोनाल्ड ट्रंप पर हाल के समय में दो बार हत्या के प्रयास हो चुके हैं। ट्रंप के प्रचार अभियान के संचार निदेशक स्टीवन चेउंग ने मंगलवार को कहा कि पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप को आज खुफिया निदेशक के कार्यालय द्वारा ईरान की तरफ से संभावित खतरे के बारे में जानकारी दी गई है। खुफिया निदेशक कार्यालय का कहना है कि ईरान अमेरिका में अराजकता और अस्थिरता फैलाने के लिए ट्रंप की हत्या करा सकता है। चेउंग ने बताया कि खुफिया अधिकारियों ने पिछले कुछ महीनों में ट्रंप पर हुए हमलों की पहचान की है और सभी एजेंसियां और जांच अधिकारी यह सुनिश्चित करने के लिए काम कर रहे हैं कि ट्रंप सुरक्षित रहें और नवंबर का चुनाव बिना किसी हस्तक्षेप के हो। डोनाल्ड ट्रंप पर बीती 13 जुलाई को पेंसिलवेनिया के बटलर में एक रैली के दौरान जानलेवा हमला हुआ था, जब एक युवक ने रैली में भाषण के दौरान ट्रंप पर गोली चलाई थी। गोली ट्रंप का कान छूकर निकली थी और ट्रंप उस हमले में बाल-बाल बचे थे। सीक्रेट सर्विस के जवानों ने मौके पर ही हमलावर युवक को ढेर कर दिया था। बीती 15 सितंबर को ही फ्लोरिडा के वेस्ट पाम बीच स्थित ट्रंप के आवास पर भी ट्रंप पर हमले की कोशिश हुई। इस मामले में 58 साल के रेयान वेस्ले राउथ को गिरफ्तार किया है। राउथ को ट्रंप के आवास के बाहर बंदूक के साथ देखा गया था। मंगलवार को रेयान राउथ पर पूर्व राष्ट्रपति के खिलाफ हत्या के प्रयास का आरोप तय किया गया है।

रोहिंग्याओं को वापस भेजना संकट का एकमात्र स्थायी समाधान, न्यूयॉर्क में बोले बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार

वॉशिंगटन, एजेंसी।
बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार प्रोफेसर मोहम्मद यूनुस आजकल न्यूयॉर्क में हैं। उन्होंने यहां इटली और कनाडा के प्रधानमंत्रियों से मुलाकात की। साथ ही प्रवासियों समेत कई मुद्दों पर चर्चा की। इसके अलावा, 79वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा के मौके पर एक उच्च स्तरीय बैठक के दौरान रोहिंग्याओं को वापस लाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

रोहिंग्या संकट पर न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र के उच्चस्तरीय कार्यक्रम के दौरान, यूनुस ने म्यांमार से विस्थापित 12 लाख से अधिक रोहिंग्याओं की उपस्थिति के कारण बांग्लादेश के सामने आने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि बांग्लादेश ने रोहिंग्याओं को शरण देने में सहानुभूति दिखाई है, लेकिन इस स्थिति से जुड़ी लागतें - सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय - काफी हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बांग्लादेश अपनी सीमा तक पहुंच गया है। इसलिए,

जितना भी बांग्लादेश मानवीय पहलुओं या न्याय सुनिश्चित करने में संलग्न है, रोहिंग्याओं को (प्रत्यावर्तन) वापस भेजना ही मौजूदा संकट का एकमात्र स्थायी समाधान है। वहीं, यूनुस के प्रेस सचिव शफीकुल आलम ने कहा, हमारे मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस ने इटली की पीएम जॉर्जिया मेलोनी से मुलाकात कर प्रवासियों के मुद्दों पर चर्चा की। कई बांग्लादेशी अवैध रूप से इटली पहुंचने के लिए जोखिम भरे रास्ते अपनाते हैं। इसलिए डॉ. यूनुस ने इस प्रक्रिया को कानूनी बनाने के तरीकों की तलाश की, जिससे अधिक बांग्लादेशियों को इटली में जाने और काम करने की अनुमति मिल सके। प्रधानमंत्री मेलोनी ने बांग्लादेश सरकार को मदद का आश्वासन दिया। डॉ. यूनुस ने कनाडाई पीएम जस्टिन ट्रूडो से बांग्लादेशी छात्रों के लिए छात्र वीजा बढ़ाने के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा, यूएनजीए के मौके पर बांग्लादेश कूटनीति के लिए यह एक बेहद सफल दिन रहा है, जिसे हमारे मुख्य सलाहकार और अमेरिकी राष्ट्रपति के बीच ऐतिहासिक बैठक द्वारा चिह्नित किया गया है, जो 50 वर्षों में पहली बार है।

उन्होंने आगे कहा, आज हमारे मुख्य सलाहकार का व्यस्त कार्यक्रम था। सुबह संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने एक स्वागत समारोह की मेजबानी की, जहां उन्होंने कई राजनयिकों से मुलाकात की। उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के साथ आमने-सामने की बैठक की, जो बेहद सफल रही। उन्होंने बांग्लादेश क्रांति पर चर्चा की।

सिक लीव नहीं मिली तो काम पर लौटी महिला, ड्यूटी के दौरान हो गई मौत

सुखोथाई, एजेंसी। महिला कर्मचारी ने एक दिन की सिक लीव लेनी चाही लेकिन, उसके मैनेजर को लगा कि वह बहाना बना रही है। इसलिए उसे छुट्टी नहीं दी। महिला काम पर आई लेकिन, ड्यूटी के दौरान उसकी मौत हो गई। मामला थाईलैंड के सुखोथाई प्रांत का बताया जा रहा है। मिली जानकारी के अनुसार, महिला काम के दौरान बेहोश हो गई थी और बाद में उसकी मौत हो गई। महिला कर्मचारी की मौत का मामला अब तूल पकड़ रहा है। सोशल मीडिया पर महिला को इंसाफ दिलाने के लिए लोगों ने आवाज उठानी शुरू कर दी है। कंपनी पर कर्मचारियों के शोषण की कहानियां शेयर की जा रही हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, सुखोथाई प्रांत की 30 वर्षीय महिला जिसकी पहचान केवल में के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि महिला समुत प्राकान प्रांत के मुआंग जिले में बंग पु औद्योगिक एस्टेट में एक इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी में कर्मचारी थी। फेसबुक पेज पर महिला के सहकर्मियों ने ग्रुप चैट के स्क्रीनशॉट शेयर किए हैं। जिसमें दावा किया गया है कि कंपनी के मैनेजर ने उसे सिक लीव के लिए छुट्टी नहीं दी। जब महिला ने अपनी परेशानी बताई तो मैनेजर ने उसे मेडिकल सर्टिफिकेट लाने को कहा था। बीमारी में काम के दौरान उसकी मौत हो गई।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129